शेर की कहानियॉ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title: Sher Ki Kahaniyan (Stories of Lion)
Cover Page picture: Lion
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

लोक कथाओं में शेर 7

1 जब शेर उड़ सकता था 9

2 नौ हयीना और शेर 12

3 शेर का बॅटवारा 15

4 न्याय में अन्तर 20

5 शेर का बच्चा 24

6 शेर और गीदड़ 28

7 शेर और गीदड़–**2** 33

8 शेर और गीदड़ शिकार करने चले 37

9 शेर का हिस्सा 40

10 गीदड़ की दुलहिन 46

11 एक शेर और एक छोटे गीदड़ की कहानी 48

12 एक डैम की कहानी 55

13 शेर जो स्त्री बन गया 63

14 एक शेर, एक गीदड़ और एक आदमी 73

15 सीधा कुत्ता और चालाक लोमड़ा 77

16 अक्लमन्द भेड़िया 79

17 कुत्ता और शेर 81

18 अक्लमन्द कुत्ता 83

19 मगर की बदमाशी 92

20 शेर और बीटिल 102

21 शेर जो अपने आपको अपनी मॉ से ज़्यादा अक्लमन्द समझता था 106

22 ख़रगोश और शेर 109

23 खरगोश, हयीना और शेर..... 120
24 शेर का राज्य मन्त्री..... 125
25 खरगोश और शेर की कहानी 131
26 गीदड़ और शेर..... 137
27 राजा शेर की भेंटें 140
28 शेर, खरगोश और हयीना..... 152
29 एक शेर और एक छोटी चुहिया 158
30 शेर और सारस..... 164
31 शेर की खाल में गधा..... 167
32 शेर के मुँह में..... 169

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में शेर

शेर जंगल का राजा होता है। जंगल के सारे जानवर उसकी इज़्ज़त करते हैं। आज हम भी उसकी इज़्ज़त में उसकी कुछ कथाओं का यह संग्रह प्रकाशित कर रहे हैं। इस संग्रह में हमने उसकी सारी दुनियॉ के देशों से बहुत सारी कथाऐं इकट्ठी की हैं। उसकी बहुत सारी कथाऐं तो गीदड़ के साथ हैं जिनमें अक्सर ही गीदड़ उसको बेवकूफ बना देता है। कुछ और उसकी दूसरे जानवरों के साथ भी हैं।

हमने देखा कि उसकी बहुत सारी कथाऐं तो बेवकूफी की ही हैं चाहे वह अफ्रीका मे रहे या फिर भारत में और या फिर किसी टापू पर पर उसकी कुछ कथाऐं अक्लमन्दी की भी हैं। कहीं वह दानवीर है तो कहीं वह उदार है। कहीं वह गुस्सा है तो कहीं वह दयालु है। इस पुस्तक में शेर की वे कथाऐं नहीं हैं जो "शेर और आदमी" जैसी हैं जिनमें सहायता करने वाले जानवर को सहायता लेने वाला खा जाता है। वैसी कहानियॉ "आदमी और शेर जैसी कहानियॉ" पुस्तक में दी गयी हैं।

शेर की लोक कथाओं के इस संग्रह में कुछ लोक कथाऐं दक्षिण अफ्रीका की भी है जो एक पुस्तक से ली गयी है।[1] वे कहानियॉ दक्षिण अफ्रीका की भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद कर के लिखी गयी हैं। इन कहानियों में तारतम्य की कुछ कमी है। अब यह कमी मूल कहानी में है या अनुवादित कहानी में यह नहीं कहा जा सकता। पर जैसी ये लिखी हुई मिली हैं हमने उनको लगभग उसी तरह से यहॉ प्रस्तुत कर दिया है। इसके लिये हम क्षमाप्रार्थी हैं।

---

[1] "South-African Folk-Tales". By James A Honey. 1910.
This book is available in English at the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/index.htm
The tales written in this book have too much problem of coherency, so that sometimes it has become impossible to maintain it. I am sorry for it. I have tried to maintain it at my best but still…

1 जब शेर उड़ सकता था[2]

क्या तुमने कभी तुमने शेर को उड़ते देखा है या फिर सुना है? नहीं न। तो आज हम अपनी यह पुस्तक शेर की एक ऐसी ही अजीबो गरीब कहानी से शुरू करते हैं जो विश्वास के लायक ही नहीं है।

अफ्रीका महाद्वीप की यह लोक कथा यह बताती है कि एक समय था जब शेर उड़ सकता था। देखने वाली बात यह है कि फिर क्या हुआ जो शेर जी जमीन पर चलने लगे। आओ पढ़ते हैं कि उनके साथ ऐसा क्या हुआ।

ऐसा सुना जाता है कि एक समय था जब शेर भी उड़ सकता था और उस समय कोई उसके सामने ठहर भी नहीं सकता था।

क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि जो कोई शिकार जिसे वह पकड़े उसकी हड्डियॉ तोड़ी जायें सो उसने सफेद कौए[3] के एक जोड़े को उनकी पहरेदारी के लिये रख दिया था।

[2] When Lion Could Fly – a folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft37.htm

[3] White crow – normally crows are black but there are a few species of crow which are pure white. See the picture of one of its species above.

वे हड्डियॉ एक काल[4] के पीछे की तरफ पड़ी हुई थीं कि एक दिन एक बहुत बड़ा मेंढक वहॉ आया और उसने उन हड्डियों के टुकड़े टुकड़े कर दिये और बोला — "आदमी और जानवर एक साथ क्यों नहीं रह सकते?"

फिर वह बोला — "जब वह आये तो उससे कहना कि मैं वहॉ पास वाले तालाब पर रहता हूँ। अगर वह मुझसे मिलना चाहे तो वहॉ आ कर वह मुझसे मिल सकता है।"

शेर लेटा हुआ कुछ देर से अपने शिकार का इन्तजार कर रहा था और अब उड़ना चाहता था पर उसने देखा कि वह तो उड़ ही नहीं पा रहा था।

इससे वह नाराज हो गया और यह सोचते हुए कि काल में कुछ गड़बड़ हुई है वह घर वापस आया। घर आ कर उसने सफेद कौओं से पूछा — "तुमने क्या किया है जो मैं उड़ नहीं सकता।"

कौए बोले — "कोई यहॉ आया था और हड्डियों के टुकड़े कर के चला गया है। और कह गया है कि अगर वह मुझसे मिलना चाहे तो मैं पास वाले तालाब पर रहता हूँ वहॉ आ कर वह मुझसे मिल ले।"

[4] Kraal is a small village of a few huts surrounded by a wall. See its picture above. It is indigenous to South Africa in Zulu Tribe.

सो शेर उससे मिलने गया। जब वह वहॉ पहुॅचा तो मेंढक पानी के किनारे बैठा हुआ था। शेर ने सोचा कि वह धीरे से पीछे से जा कर उसे दबोच लेगा।

वह उसको पकड़ने ही वाला था कि मेंढक बोला — "हो।" और यह कह कर तालाब के पानी में कूद कर तालाब के दूसरे किनारे की तरफ चला गया और वहॉ जा कर बैठ गया।

शेर ने उसका पीछा किया पर क्योंकि बीच में तालाब था सो वह उसको पकड़ नहीं सका और घर वापस लौट गया।

कहा जाता है कि उसी दिन से शेर के उड़ने की ताकत चली गयी और वे अपने पैरों पर चलने लगे। वे अपना शिकार भी दबे पॉव करने लगे। सफेद कौओं ने भी उसी समय से बोलना छोड़ दिया जबसे उन्होंने यह कहा कि "इस मामले में कुछ नहीं कहा जा सकता।"

2 नौ हयीना और शेर[5]

शेर के अपने शिकार का बॅटवारा करने की यह लोक कथा हमने अफ्रीका महाद्वीप के इथियोपिया देश की लोक कथाओं से ली है। देखो कि शेर ने अपने शिकार का बॅटवारा कितनी होशियारी से किया।

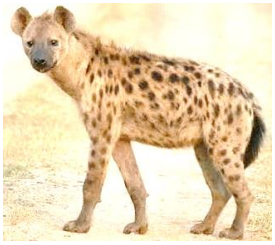

एक बार नौ हयीना[6] और एक शेर शिकार करने के लिये निकले और दस गायें ले कर घर आये।

जब वे उनका बॅटवारा करने लगे तो शेर ने उन नौ हयीना से कहा — "हयीना भाई देखो, हम दस लोग शिकार के लिये गये थे और वहॉ से दस गाय ले कर लौटे हैं इसलिये अब हम सब जब अलग अलग हों तो तभी भी हमको दस ही होना चाहिए। है न?

तुम लोग नौ हो तो अगर तुम एक गाय ले लोगे तो तुम लोग दस हो जाओगे और मैं क्योंकि अकेला हूॅ इसलिये दस होने के लिए मुझे नौ गाय चाहिये सो अगर मैं नौ गाय ले लूॅगा तो हम दोनों दस दस हो जायेंगे।"

अब हयीना और शेर का क्या मुकाबला। बेचारे हयीना यह जानते हुए भी कि यह बॅटवारा गलत है चुपचाप शेर की बात मान

[5] Nine Hyena and a Lion – a folktale of Hadiya Tribe of Ethiopia, East Africa

[6] Hyena is a Cheeta-like animal. See its picture above.

गये और उसको यह जताते हुए कि यही बॅटवारा ठीक है वे बेचारे एक गाय ले कर चले आये।

जब बेटे हयीना घर लौटे तो उनके पिता ने अपने उन नौ हयीना बेटों से पूछा — "अरे तुम क्या केवल एक ही गाय ले कर आये हो? यह एक गाय तुम कैसे लाये?"

हयीना बोले — "हम सब आज शेर भाई के साथ मिल कर शिकार करने गये थे। हम सबने मिल कर वहॉ दस गायें पकड़ीं और उनको ले आये।

जब हम उनको ला रहे थे तो शेर भाई बोले "तुम नौ भाई एक गाय ले लो और मैं अकेला नौ गायें ले लूॅ तो हम दोनों की गिनती दस दस हो जायेगी। उन्होंने हमसे जैसा कहा हमने वैसा ही किया और इस तरह हम यह एक गाय ले कर आ गये।"

यह सुन कर उनके पिता ने कहा — "उस शेर ने तो तुमको बेवकूफ बनाया है मेरे बच्चों, चलो तुम मुझे उस शेर के पास ले चलो जिसने तुम्हारे साथ ऐसा किया है। मैं उसे देखता हूॅ। मेरा घोड़ा तैयार करो।"

नौ हयीना बेटों ने मिल कर अपने पिता के लिये घोड़ा तैयार किया और पिता हयीना उस शानदार घोड़े पर सवार हो कर अपने बच्चों के साथ उस शेर के पास चल दिये।

जब वे सब शेर की मॉद के पास पहुँचे तो पिता हयीना ने कहा — "वह शेर कहॉ है जिसने तुम्हें बेवकूफ बनाया है? वह इस पहाड़ के किस तरफ रहता है?"

बच्चों ने कहा — "पिताजी, वह जो पहाड़ आपको दिखायी दे रहा है वही तो शेर है।"

पिता फिर बोला — "तो उस पहाड़ के बराबर में वह लाल लाल आग क्या है?"

इस पर बच्चे बोले — "वे तो शेर की ऑखें हैं पिता जी।"

वे थोड़ा और आगे बढ़े तो पिता हयीना ने कहा — "शेर जी, नमस्कार।"

शेर ने जवाब दिया — "नमस्कार। कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

पिता हयीना बोला — "मैं इसलिए आया हूँ सरकार ताकि आपको वह गाय भी दे दूँ जो आपने मेरे बच्चों को दी थी और साथ में अपना यह घोड़ा भी।"

बड़ी मुश्किल से वह इतना ही कह सका और शेर की दी हुई गाय और अपना घोड़ा दोनों ही वहीं छोड़ कर वहॉ से भाग लिया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अपने से ज़्यादा ताकतवर आदमी के साथ बहस करने से कोई फायदा नहीं।

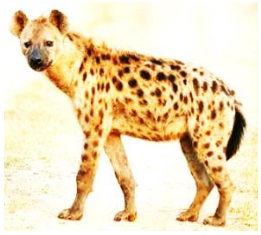

3 शेर का बॅटवारा[7]

शेर के अपना शिकार के बॅटवारे की चालाकी की एक और लोक कथा। इस लोक कथा में देखने वाली बात यह है कि इथियोपिया का एक शेर हयीनाओं[8] के पकड़े शिकार का कितने इन्साफ से बॅटवारा करता है।

एक समय की बात है कि एक पहाड़ की तलहटी में एक बूढ़ा हयीना अपने नौ बेटों के साथ रहता था। हालॉकि पिता हयीना की तन्दुरुस्ती ठीक थी पर फिर भी वह दिन रात अपनी गुफा में ही रहना ज़्यादा पसन्द करता था।

उसके बेटे खाना ढूँढने के लिये बाहर जाते रहते थे और उसके लिये खाना लाते रहते थे फिर भी वह अपने पिता होने के कर्त्तव्य को पूरी तरह निबाहता था क्योंकि वह अपने बेटों को सदा अपनी ताकत की और अपने साहस की कहानियॉ सुनाया करता था।

उसने अपने बेटों को यह भी साफ तरीके से बता दिया था कि वह अपने बेटों से भी ऐसी ही आशा करता था कि वे उसके कदमों पर चलें।

---

[7] A Lion's Division – a folktale of Afar Tribe of Ethiopia, East Africa

[8] Hyena – a tiger like animal. See its picture above.

एक शाम वे नौ हयीना भाई अपने लिये खाने की तलाश में निकले। वे लोग अभी बहुत दूर नहीं जा पाये थे कि रास्ते में उनको एक शेर मिल गया। वह शेर उनके पड़ोस में ही रहता था। वे उस शेर से बच कर निकल जाना चाहते थे परन्तु शेर ने उनको बीच रास्ते ही में रोक लिया।

शेर बोला — "दोस्तों, क्यों न हम लोग आज साथ साथ शिकार पर चलें। मैं दो घन्टे से इधर उधर घूम रहा हूँ पर आज मुझे कुछ मिला ही नहीं। तुम्हारी सूँघने की ताकत और मेरी शारीरिक ताकत दोनों मिल कर शायद कुछ पा सकें। फिर हम लोग उसे बॉट लेंगे।"

हालॉकि हयीना लोग अपना शिकार खुद ही करना पसन्द करते थे परन्तु यह बात शेर से कहे कौन? आज तो वे फॅस चुके थे सो वे सब शेर के साथ चल दिये।

पर शायद किस्मत उनके साथ थी इसलिये हयीनाओं की सूँघने की ताकत जल्दी ही उन सबको एक पेड़ के पीछे ले गयी जहॉ एक शिकारी ने अपनी शिकार की गई मुर्गियॉ एक थैले में रखी हुई थीं। शेर ने तुरन्त ही वह थैला फाड़ डाला और उसमें से सारी मुर्गियों को बाहर निकाल लिया। वे पूरी दस थीं।

शेर बोला "देखो न हयीना, हम लोगों का साथ साथ शिकार पर निकलना कितना अच्छा रहा। हम लोगों को तुरन्त ही खाना मिल गया। आओ अब इसे बॉट लेते हैं।"

ऐसा कह कर उसने नौ सबसे अच्छी मोटी मोटी मुर्गियॉ अपने लिये चुन लीं और एक पतली सी छोटी सी मुर्गी उसने हयीनाओं की तरफ उछाल दी।

हालॉकि सब हयीनाओं ने धीरे से गुर्रा कर इस बॅटवारे पर अपना गुस्सा जाहिर किया परन्तु शेर की एक हल्की सी गुर्राहट पर ही सारे हयीना शान्त भी हो गये।

शेर ने हयीनाओं से पूछा — "क्या बात है? आप लोग मेरे इस बॅटवारे से कुछ अनमने से क्यों हैं? क्या मैंने बॅटवारा ठीक से नहीं किया?"

हयीना डर के मारे कोई जवाब नहीं दे पा रहे थे। कुछ देर तो शेर ने उनके जवाब का इन्तजार किया फिर जब उसको उनसे कोई जवाब नहीं मिला तो उसने अपनी नौ मुर्गियॉ उठायीं और अपने घर की तरफ चल दिया।

उधर वे दुखी उदास हयीना भी अपनी पतली सी छोटी सी मुर्गी उठा कर इसलिये जल्दी जल्दी अपने घर चल दिये ताकि उनके पिता को उनके देर से घर आने की चिन्ता न हो। घर आ कर उन्होंने अपने पिता को अपने शिकार की कहानी सुनायी।

पिता हयीना ने जब अपने बेटों की कहानी सुनी तो उसने अपने बेटों को उनकी सुस्ती और डरपोक होने पर आधे घंटे का एक भाषण दिया और फिर आखीर में कहा "यह तो एक हयीना का एक कौर भी नहीं है। हम सब इसमें से कैसे खायेंगे?"

हयीना का एक बेटा बोला — "पिता जी, हमने तो आपके लिये बहुत ही बढ़िया खाना चुना था पर शेर का हिस्सा हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा निकला। हम क्या करते।"

इसके बाद उसने अपने पिता को सारी कहानी विस्तार से सुना दी कि किस प्रकार रास्ते में उनको शेर मिल गया था और फिर किस प्रकार मुर्गियों का बॅटवारा हुआ।

पिता हयीना सारी कहानी सुनने के बाद तो और भी ज़्यादा गुस्सा हुआ और इतना ज़्यादा गुस्सा हुआ कि उसके बेटों को लगा कि उनके पिता को दौरा पड़ गया है। उसका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था।

गुस्से में उसने वह दुबली सी पतली सी मुर्गी उठायी और अपने बेटों से बोला — "आओ चलो, मेरे साथ चलो। मैं इस चिड़िया के बदले में अपनी मुर्गियों का हिस्सा शेर से ले कर आता हूँ। न्याय तो होना ही चाहिये न।

तुमको तो खुश होना चाहिए कि तुम्हारा पिता अभी भी इतना बहादुर और हिम्मत वाला है कि वह शेर का सामना कर सकता है।"

कह कर हयीना ने अपने सब बेटों को अपने साथ लिया और वे सब शेर की मॉद के पास पहुँचे। पिता हयीना ने शेर को आवाज लगायी — "ए शेर, तुम ज़रा अपनी मॉद से बाहर तो निकलो, मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ।"

एक पल की ख़ामोशी के बाद शेर सोता हुआ सा अपनी माँद में से बाहर आया और बाहर आ कर ज़ोर की एक गरज की। फिर बड़ी नम्रता से पिता हयीना से बोला — "दोस्त, तुम्हें कुछ चाहिये क्या?"

पिता हयीना ने अपने गले का थूक सटका, फिर अपना गला साफ किया और वह दुबली सी और पतली सी मुर्गी उसकी ओर बढ़ाता हुआ बोला — "मेरे दोस्त शेर, मेरे बच्चों ने मुझे बताया कि किस उदारता के साथ तुमने खाने का बँटवारा किया। उस उदारता के लिये धन्यवाद के तौर पर मैं तुम्हें यह दुबली सी और पतली सी मुर्गी भेंट करने आया हूँ।"

कह कर उसने वह दुबली सी और पतली सी मुर्गी वहीं छोड़ी और अपने घर वापस आ गया।

इस कहानी से भी हमको यही शिक्षा मिलती है कि अपने से ताकतवर दुश्मन के साथ लड़ने झगड़ने और बहस करने से कोई फायदा नहीं।

4 न्याय में अन्तर[9]

अफ्रीका महाद्वीप के इथियोपिया देश की इस लोक कथा में शेर बेचारा जंगल का राजा होते हुए भी एक बन्दर से हार जाता है। देखो कैसे।

एक बार एक शेर और एक हयीना[10] दोनों खाना ढूँढने निकले। शेर को एक बैल मिल गया और हयीना ने एक गाय पकड़ ली।

दोनों अपना अपना शिकार ले कर घर आये और दोनों ने उनको अपने अपने घर के सामने वाले पेड़ से बॉध दिया।

जब हयीना ने गाय पकड़ी तो कुछ ही दिनों में उस गाय के बच्चा होने वाला था। जब शेर ने देखा कि उसके पास तो केवल एक ही बैल है परन्तु हयीना के पास दो जानवर होने वाले हैं तो उसे एक चालाकी सूझी।

जब शेर ने देखा कि अब गाय के बच्चा होने वाला है तो उसने हयीना का ध्यान बॅटाने के लिये हयीना से कहा "ज़रा मेरे लिए थोड़ा सा पानी ला दो मुझे बहुत प्यास लगी है।" हयीना बेचारा उसके इरादों से बेखबर उसके लिए पानी लाने चला गया।

[9] Difference in Justice – a folktale of Hadiya Tribe of Ethiopia, East Africa

[10] Hyena is a Cheetah-like animal. See its picture above.

इत्तफाक से इसी बीच गाय ने एक बछड़े को जन्म दिया। शेर बछड़े को गाय के पास से उठा लाया और उसे अपने बैल के पास ला कर बिठा दिया।

थोड़ी देर बाद हयीना जब पानी ले कर वापस लौटा तो उसने शेर को पानी दिया और अपने घर की तरफ चला तो शेर बोला "देखो हयीना, मेरे बैल ने एक बछड़े को जन्म दिया है।"

हयीना ने तो कोई ध्यान ही नहीं दिया था परन्तु शेर की यह बात सुन कर उसको बहुत गुस्सा आया। वह बोला — "शेर भाई, तुम मजाक कर रहे हो। बैल थोड़े ही बच्चों को जन्म देते हैं वह तो गाय देती है। यह मेरी गाय का बछड़ा है तुम्हारे बैल का नहीं।"

शेर बोला — "नहीं, यह मेरे बैल का बछड़ा है क्योंकि यह मेरे बैल के पास बैठा है।"

हयीना ने फिर नम्रतापूर्वक कहा — "शेर भाई, किसी के पास बैठने से कोई किसी का बच्चा नहीं हो जाता। यह मेरी गाय का बछड़ा है तुम्हारे बैल का नहीं।" पर शेर अपनी ही बात पर अड़ा रहा।

जब शेर नहीं माना तो हयीना ने फैसले के लिए जंगल के सारे जानवरों को इकट्ठा कर लिया क्योंकि उसको शेर की बात पर कतई विश्वास नहीं था कि एक बैल एक बछड़े को जन्म दे सकता है।

जंगल के सारे जानवर शेर और हयीना के घरों के पास आ कर इकट्ठा हो गये पर सभी जानवर शेर से डरते थे इसलिये उन सभी ने

एक आवाज में कहा "यह तो बैल का ही बछड़ा है कोई गाय भला बच्चा कैसे दे सकती है?"

तभी एक बन्दर जो जानवरों की भीड़ में सबसे पीछे खड़ा था आगे निकल आया। शेर ने उससे पूछा "अरे तुम कहॉ से आ रहे हो?"

बन्दर सिर खुजलाते हुए बोला "मुझे थोड़ी देर हो गयी सरकार। असल में धरती और आसमान में छेद हो गये थे सो मैं ज़रा उनमें पैबन्द लगा रहा था।"

शेर को उसकी यह बात सुन कर बहुत गुस्सा आया और वह बोला — "बन्दर, यह तुम क्या बेवकूफी की बात करते हो? धरती और आसमान में भला छेद होने का क्या काम? यह कैसे हो सकता है?"

इस पर बन्दर ने घुड़की मारते हुए कहा — "जैसे बैल के बछड़ा हो सकता है उसी तरह से धरती और आसमान में भी तो छेद हो सकते हैं सरकार।"

यह सुन कर तो शेर और भी ज़्यादा गुस्से में भर गया और बन्दर को पकड़ने दौड़ा पर बन्दर तो पहले ही एक ऊॅचे पेड़ पर चढ़ चुका था।

शेर तो गुस्से में था ही। बन्दर को पकड़ने के लिये दौड़ते समय वह एक गड्ढे में गिर गया और मर गया। यह सब देख कर हयीना तो मारे खुशी के वहीं मर गया।

अब बन्दर गाय का अकेला मालिक हो गया। एक हफ्ते तक उसने गाय का गाढ़ा गाढ़ा दूध इकट्ठा किया और आठवें दिन जंगल के सब जानवरों को उस दूध पीने की दावत दी। बड़े ज़ोर शोर से दूध की दावत का इन्तजाम किया गया।

दावत में सबके साथ बन्दर ने भी दूध पिया। वह दूध पीता गया और पीता गया और पीता गया। उसने इतना दूध पिया कि उसका पेट गले तक भर गया।

कुछ दूध उसके पेट पर भी गिर गया। जब बन्दर उस दूध को चाटने के लिये नीचे झुका तो उसका पेट फट गया और वह भी मर गया।

इस पर जंगल के सारे हयीनाओं ने मिल कर सोचा कि इस बन्दर ने हमको दावत पर बुलाया था इसलिए इसको मरने के बाद जमीन में नहीं बल्कि आसमान में गाड़ना चाहिये।

ऐसा सोच कर वे सभी हयीना एक के ऊपर एक चढ़ते गये और आसमान तक पहुॅच गये। तभी सबसे नीचे वाले हयीना के पॉव में एक चींटी ने काट लिया और सारे हयीना नीचे गिर गये। इस तरह उनका उस बन्दर को आसमान में गाड़ने का प्लान फेल हो गया।

5 शेर का बच्चा[11]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार इथियोपिया के जंगलों में रहने वाले एक शेर के बच्चे ने अपने पिता से बड़े शेरों के साथ शिकार पर जाने की जिद की।

उसके पिता ने उससे कहा भी — "बेटा, तुम अभी बहुत छोटे हो। तुम अभी शिकार पर जाने लायक नहीं हो। तुम या तो शिकार में घायल हो जाओगे या फिर जंगल में खो जाओगे इसलिये तुम्हें अभी घर पर ही रहना चाहिए।"

पर बच्चे ने जिद करते हुए पिता शेर से प्रार्थना की — "पिताजी, मैं अब इतना छोटा बच्चा भी नहीं हूँ जो अपनी देख भाल अपने आप न कर सकूँ। मुझे भी शिकार पर जाने की इजाज़त दे दीजिये न।"

अन्त में पिता शेर राजी हो गया और बच्चा शेर भी शिकार के लिए बड़े शेरों के साथ चल दिया।

पिता शेर ने उसको सावधान करते हुए कहा "बेटा, तुम शिकार के लिये जा तो रहे हो पर तुम दूसरे बड़े शेरों के साथ ही रहना वरना तुम मुसीबत में फँस जाओगे।"

"ठीक है पिताजी।"

[11] Baby Lion - a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, East Africa

बच्चा शेर जब जंगल से गुजर रहा था तो उसको सब कुछ नया नया लग रहा था इसलिये वह हर एक चीज़ को बड़े आश्चर्य और ध्यान से देखता चला जा रहा था। इस देखने के चक्कर में वह बड़े शेरों के झुंड से पीछे अकेला रह गया।

जब उसने अपने आपको अकेला पाया तो वह बहुत घबराया पर उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। वह अपने घर से काफी दूर निकल आया था और अब अपने घर का रास्ता भी भूल गया था।

जैसे जैसे समय गुजरता जा रहा था उसका डर बढ़ता ही जा रहा था। अब उसको अपने पिता की दी हुई सलाह याद आयी कि उसके पिता ने उसको बड़े शेरों के साथ रहने के लिये क्यों कहा था। पर अब क्या हो सकता था।

धीरे धीरे वह एक बड़े घास के मैदान में निकल आया। यहॉ तो हाथी रहते थे। उसने देखा कि उस मैदान में हाथी घास खा रहे थे।

अब उस शेर के बच्चे ने तो हाथी पहले कभी देखे नहीं थे। वह जानता ही नहीं था कि हाथी क्या होता है सो वह उन हाथियों के झुंड में निडर हो कर घूमने लगा। इतने में एक बड़े हाथी का पैर उसके ऊपर पड़ गया और वह बच्चा शेर मर गया।

उधर काफी देर बाद शेरों को पता चला कि बच्चा शेर उनके झुंड में नहीं है तो उन्हें चिन्ता हुई कि वह कहाँ रह गया। उन्होंने उसको बहुत ढूँढा पर वह उन्हें कहीं दिखायी नहीं दिया।

उनमें से कुछ ने कहा "हम लोग तो उसको दोपहर से ढूँढ रहे हैं पर वह हमें कहीं दिखायी ही नहीं दे रहा है।"

अन्त में उनको उसका कुचला हुआ शरीर हाथियों वाले घास के मैदान में मिल गया। उन्होंने आपस में इस बात पर बहुत दुख प्रगट किया और फिर यह बात उसके पिता को बताने गये।

वे बोले — "शेर भाई हमें बहुत दुख है कि तुम्हारा बेटा मर गया है।"

यह सुन कर पिता शेर रोने लगा और रोते रोते बोला — "मेरे बेटे को किसने मारा है, जल्दी बताओ। मैं उस खूनी को सजा दूँगा।"

शेरों ने कहा — "उसको हाथियों ने मारा है। बच्चा शेर घास के मैदान सैवैना[12] में खो गया था। वहाँ एक बड़े हाथी का पैर उसके ऊपर पड़ गया और वह मर गया।"

बूढ़े पिता शेर ने कुछ पल सोचा और फिर बोला — "नहीं मेरे बेटे को हाथियों ने नहीं बल्कि बकरों ने मारा है।"

दूसरे शेरों ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की कि बच्चा शेर को बकरों ने नहीं मारा क्योंकि बकरे तो उसको मार ही नहीं

[12] Savannah – large grass fields

सकते थे बल्कि उसको तो हाथियों ने मारा है परन्तु पिता शेर अपनी बात पर अड़ा रहा कि उसको हाथियों ने नहीं बल्कि बकरों ने मारा है।

बूढ़ा शेर बहुत नाराज व दुखी था। वह उठा और चल दिया। कुछ दूर जाने पर उसको बकरों का एक झुंड घास खाता दिखायी दे गया।

बस उसने आव देखा न ताव और कर दिया बकरों पर हमला। उसने कई बकरों को मार दिया। जब काफी खून बह गया तब कहीं जा कर शेर को शान्ति मिली और वह घर लौटा।

कई बार ऐसा होता है कि जब कोई अपने से ज़्यादा ताकतवर आदमी का सताया हुआ होता है तो क्योंकि वह उस ताकतवर से लड़ नहीं पाता इसलिए वह अपने से कमजोर को उसकी सजा दे कर अपने मन को तसल्ली दे लेता है।

यही हाल शेर का भी हुआ। वह हाथियों से तो लड़ नहीं सकता था इसलिए उसने अपना बदला उन बेचारे कमजोर बकरों को मार कर ले लिया।

6 शेर और गीदड़[13]

दक्षिण अफ्रीका में एक बार एक शेर और एक गीदड़ ने आपस में यह तय किया कि वे एक साथ शिकार करने जायेंगे और फिर आपस में उसको बॉट लेंगे। इस तरह वे अपने अपने परिवार के लिये जाड़े का मौसम के लिये कुछ खाना इकट्ठा कर लेंगे।

अब शेर तो गीदड़ से कहीं ज़्यादा अच्छा शिकारी था सो गीदड़ ने उसको सलाह दी कि शेर शिकार करेगा और वह खुद शेर के शिकार किये हुए मॉस को उनके घर तक ले जाने में उसकी सहायता करेगा। और मिसेज़ गीदड़ और उनके बच्चे उस मॉस को तैयार करने और सुखाने में उसकी सहायता करेंगे।

साथ में वे यह भी ख्याल रखेंगे कि मिसेज़ शेर और उनके परिवार को मॉस की कमी न पड़े।

शेर इस बात पर राजी हो गया और दोनों शिकार के लिये चल दिये। वे लोग काफी समय तक शिकार करते रहे और उन दोनों ने बहुत शिकार किया।

शिकार के बाद शेर अपने परिवार को देखने और अपने शिकार किये गये मॉस को खाने के लिये लौटा जैसी कि वह आशा कर रहा था कि उसके घर में तो बहुत सारा मॉस होगा।

[13] The Lion and Jackal – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/African_folktales/African_Folktale_4.html

पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि मिसेज़ शेर और उसके बच्चे तो भूख से मरने वाले थे और बहुत ही खराब हालत में थे।

ऐसा लगता था कि गीदड़ ने उनको शिकार के केवल कुछ ही टुकड़े दिये थे। और वे भी इतने कम कि बस वे केवल ज़िन्दा ही रह सकें। वह हमेशा ही उनसे यही कहता रहा कि उसे और शेर को जंगल में कोई बहुत ज़्यादा शिकार नहीं मिला।

जबकि उसके अपने परिवार में मॉस बहुत सारा था और उसके परिवार को सब लोग खूब तन्दुरुस्त थे।

यह सब शेर से सहन नहीं हुआ। वह गुस्से में भर कर गीदड़ और उसके पूरे परिवार को वहीं मारने चला जहॉ भी कहीं वे उसको मिल जाते।

गीदड़ यह बात पहले से ही जानता था सो वह इसका सामना करने को तैयार था। उसने अपनी सारी चीज़ें पहले ही एक पहाड़ की चोटी पर रख दी थीं। और वे सब एक ऐसी जगह रखी थीं जहॉ तक पहुचने का रास्ता बहुत कठिन था और केवल वही वहॉ तक पहुँच सकता था।

शेर ने जब उसे उस पहाड़ की चोटी पर देखा तो गीदड़ ने भी उसको यह कह कर नमस्ते की — "गुड मौर्निंग चाचा शेर।"

यह सुन कर शेर गुस्से में भर कर अपनी बिजली की सी कड़कती आवाज में बोला — "ओ गधे के बच्चे जैसा तूने मेरे

परिवार के साथ किया है उस हैसियत से तेरी मुझे चाचा कहने की हिम्मत कैसे हुई?"

गीदड़ बोला — "ओह चाचा अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ? मेरी पत्नी तो बस एक बहुत ही जंगली जानवर है।"

तभी शेर ने "पटाक पटाक" की आवाज सुनी। गीदड़ सूखी खाल को एक डंडे से मार कर यह दिखाना चाह रहा था कि वह अपनी जंगली पत्नी को पीट रहा था।

और साथ में आ रही थीं मिसेज़ गीदड़ की आवाज़ें जैसे कोई उसको पीट रहा हो और उनके बच्चों के चिल्लाने की आवाज़ें जिनको उनकी मॉ को न मारने के लिये चिल्लाने के लिये कहा गया था।

"वह बहुत बदमाश है। यह सब उसी का किया धरा है। मैं आज उसे अभी मार दूँगा।" और उसने फिर से उस सूखी हुई खाल को मारना शुरू कर दिया।

मिसेज़ गीदड़ और उसके बच्चों की दर्द भरी चिल्लाहट सुन कर शेर का दिल पसीज गया। उसने गीदड़ से कहा कि वह अब मिसेज़ गीदड़ को मारना बन्द करे। तब कहीं जा कर गीदड़ ने अपनी पत्नी को मारना बन्द किया।

जब गीदड़ का दिमाग कुछ ठंडा हो गया तो उसने शेर को ऊपर बुलाया और कहा कि वह उसके घर कुछ खा कर जाये।

शेर ने उस पहाड़ी पर चढ़ने की बहुत कोशिश की पर वह उस पर चढ़ नहीं सका। गीदड़ जो हमेशा ही सबकी सहायता करने को तैयार रहता था बोला — "मैं ऐसा करता हूँ कि तुम्हारे लिये नीचे एक रस्सी फेंकता हूँ तुम उसको पकड़ कर ऊपर आ सकते हो।"

शेर राजी हो गया तो गीदड़ ने उसके लिये एक रस्सी फेंकी। जब उसने और उसके परिवार ने शेर को आधे रास्ते तक ऊपर खींच लिया तो चतुराई से उसने उसकी वह रस्सी काट दी। शेर धम्म से नीचे गिर पड़ा और उसको बहुत चोट आयी।

इस पर गीदड़ ने फिर से अपनी पत्नी को वैसे ही मारना शुरू किया जैसे वह पहले मार रहा था कि उसने शेर को खींचने के लिये उसको सड़ी हुई रस्सी क्यों दी और उसके परिवार वालों ने भी फिर से वैसे ही चिल्लाना शुरू किया जैसे वे पहले चिल्ला रहे थे।

उसने अपनी पत्नी से कहा कि अबकी बार वह उसको भैंस की खाल की मजबूत वाली रस्सी दे जो किसी भी बोझ को आसानी से खींच सकती थी। सो अबकी बार यह नयी रस्सी फेंकी गयी जिससे शेर ने अपने आपको बॉध लिया।

सबने मिल कर ऊपर से फिर से वह रस्सी खींचनी शुरू कर दी। जब शेर इतनी ऊपर पहुँच गया कि वह पहाड़ी के ऊपर यह झॉक कर देख सकता कि मॉस कहॉ पक रहा था और बाकी मॉस कहॉ सूख रहा था वह रस्सी फिर से काट दी गयी।

अबकी बार शेर इतनी ज़ोर से नीचे गिरा कि काफी देर तक तो उसको होश ही नहीं आया। जब शेर को थोड़ा होश आया तो गीदड़ उससे उसके ऊपर दया दिखाते हुए बोला कि इससे कोई फायदा नहीं है कि उसको रस्सी से ऊपर खींचा जाये।

अब यही ज़्यादा ठीक रहेगा कि यहीं से मॉस का एक बहुत बढ़िया सा भुना हुआ टुकड़ा शेर के गले में डाल दिया जाये।

अब शेर तो भूख से पागल सा हो रहा था और दो बार गिरने से घायल हो रहा था सो वह इस बात पर भी राजी हो गया। अब वह उस मॉस के बढ़िया भुने हुए टुकड़े के कौर का इन्तजार करने लगा जो गीदड़ उसके मुॅह में फेंकेगा।

इस बीच गीदड़ ने एक गोल पत्थर खूब गर्म किया और उसको मॉस के एक पतले से टुकड़े में लपेटा और शेर के गले की तरफ फेंक दिया। शेर ने भी अपना गला पूरा खोल रखा था।

सो जैसे ही गीदड़ का फेंका गर्म पत्थर शेर के गले में पड़ा वह गरम पत्थर सीधा शेर के गले में चला गया उसका गला पूरा का पूरा जल गया। और वह वहीं मर गया।

अब यह तो कहने की कोई बात ही नहीं है कि उस रात पहाड़ी पर बहुत खुशियॉ मनायी गयीं।

7 शेर और गीदड़–2[14]

शेर की यह लोक कथा अफ्रीका के दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाओं से ली गयी है।

शेर ने अभी अभी एक बहुत बड़ा हिरन पकड़ा था जो नदी के एक ऊँचे किनारे पर मरा पड़ा था। शेर को प्यास भी बहुत लगी थी। वह पानी पीने जाना चाहता था सो उसने गीदड़ से कहा — "गीदड़ ज़रा मेरे हिरन को देखना मैं ज़रा पानी पी कर आता हूँ। और देखो हॉ इसको खाना बिल्कुल नहीं।"

गीदड़ बोला — "ठीक है चाचा शेर।"

यह कह कर शेर तो नदी पर पानी पीने चला गया और गीदड़ ने चुपचाप से बिना आवाज किये उस जगह से एक पत्थर निकाल लिया जिस पर से हो कर शेर को नदी के किनारे से वापस लौटना था।

उसके बाद गीदड़ और उसकी पत्नी गीदड़ी ने भर पेट खाना खाया। शेर पानी पी कर वापस लौटने लगा तो नदी के किनारे से वापस नहीं लौट सका। उसने गीदड़ को आवाज लगायी — "ओ गीदड़ ज़रा मेरी सहायता करना।"

[14] The Lion and Jackal-2 – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft13.htm

गीदड़ बोला — "हॉ चाचा शेर। मैं अभी आपके लिये रस्सी नीचे डालता हूँ। आप उसको पकड़ कर ऊपर चढ़ सकते हैं।"

गीदड़ अपनी पत्नी से बोला — " मुझे एक पुरानी पतली सी रस्सी दे दो।" फिर वह ज़ोर से बोला — "मुझे एक भैंस की खाल की एक मजबूत सी रस्सी देना ताकि चाचा शेर गिरे नहीं।"

सो उसकी पत्नी ने उसको एक बहुत पुरानी सड़ी हुई रस्सी दे दी। गीदड़ और गीदड़ी ने पहले सारा मॉस खत्म किया फिर दोनों ने शेर को खींचने के लिये रस्सी नीचे लटकायी। शेर ने रस्सी पकड़ी और ऊपर आने की कोशिश करने लगा।

जब शेर ऊपर तक आने ही वाला था तो गीदड़ ने रस्सी को ज़ोर से एक झटका दिया। रस्सी टूट गयी और शेर लुढ़कता हुआ नीचे तक नदी के किनारे पर जा गिरा।

गीदड़ ने एक सूखी खाल को मारना शुरू किया और चिल्लाया — "ओ मेरी पत्नी। तुमने मुझे इतनी खराब रस्सी क्यों दी जिससे चाचा शेर नीचे गिर पड़े।"

शेर ने उन दोनों का यह झगड़ा सुना तो वह नीचे से ही चिल्लाया — "अरे गीदड़ अपनी पत्नी को पीटना बन्द करो। अगर तुमने उसे पीटना बन्द नहीं किया तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा। बस अब तुम मुझे ऊपर आने में मदद करो।"

गीदड़ बोला — "चाचा शेर मैं आपके लिये फिर से एक रस्सी फेंकता हूँ।" कह कर वह अपनी पत्नी से फुसफुसा कर बोला — "एक दूसरी पुरानी कमजोर सी रस्सी देना।"

फिर ज़ोर से बोला — "अबकी बार एक और मजबूत रस्सी देना ताकि वह चाचा शेर के बोझ से टूट न जाये।"

गीदड़ ने फिर से एक रस्सी नीचे फेंकी और जब शेर उसे पकड़ कर ऊपर आने ही वाला था तो गीदड़ ने फिर से रस्सी काट दी – फटाक। शेर फिर से नीचे लुढ़कने लगा और लुढ़कते लुढ़कते नदी के पास तक पहुँच गया।

अबकी बार उसने फिर से सूखी हुई खाल को बहुत ज़ोर से मारा और अपनी पत्नी पर बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "यह तुम बार बार मुझे ऐसी रस्सी क्यों देती हो जिससे चाचा शेर ऊपर आ ही नहीं सकते। तुमने मुझे ऐसी खराब रस्सी दी ही क्यों। क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि अबकी बार मुझे बहुत मजबूत रस्सी देना।"

शेर को उनकी यह लड़ाई सुन कर अच्छा नहीं लगा सो उसने उससे फिर कहा — "अपनी पत्नी को पीटना बन्द करो और जल्दी से मुझे ऊपर खींचो नहीं तो तुम बहुत मुश्किल में पड़ जाओगे।"

गीदड़ फिर से अपनी पत्नी से बहुत ज़ोर से बोला — "ओ पत्नी अबकी बार तुम मुझे अपनी सबसे मजबूत वाली रस्सी दो।" और चुपके से उससे कहा "अबकी बार अपनी सबसे खराब वाली रस्सी देना।"

सो गीदड़ ने एक बार फिर से चाचा शेर के लिये रस्सी नीचे गिरायी पर जैसे ही वह फिर से ऊपर तक आया तो उसने रस्सी को ज़ोर से खींचा और रस्सी टूट गयी।

बेचारे चाचा शेर एक बार फिर से लुढ़कते हुए नीचे नदी के पास जा गिरे। इस बार उनको पहले दो बार के मुकाबले बहुत ज़ोर से चोट आयी थी वह दर्द से तड़प उठे।

गीदड़ ने उनसे बनावटी हमदर्दी दिखाते हुए पूछा — "चाचा शेर क्या आपको बहुत चोट आ गयी। क्या आपको बहुत दर्द हो रहा है। ज़रा ठहरिये मैं आपके पास अभी आता हूँ।"

कह कर गीदड़ और गीदड़ी वहॉ से चलते बने।

8 शेर और गीदड़ शिकार करने चले[15]

शेर और गीदड़ की एक और लोक कथा। यह लोक कथा भी दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाओं से ली गयी है।

कुछ ऐसा कहा जाता है कि एक बार शेर और गीदड़ किसी बड़े हिरन की तलाश में एक जगह लेटे हुए थे। शेर ने अपने तीर कमान से एक बड़े हिरन को मारा भी मगर उसका निशाना चूक गया। जबकि गीदड़ ने मारा तो उसके तीर से वह हिरन मर गया सो वह खुशी से चिल्लाया "हा हा हा हा।"

शेर बोला "नहीं यह हिरन तुमने नहीं मारा यह मैंने मारा।"

गीदड़ बोला "हॉ मेरे पिता जी यह आपने ही मारा।"

उसके बाद दोनों घर चले गये ताकि जब वह बड़ा हिरन मर जाये तब उसे आ कर वे ले जायें और काट सकें।

लेकिन गीदड़ तुरन्त ही वापस लौट आया और शेर के पीछे ही अपनी नाक में मारा जिससे उसकी नाक में खून निकल आया। गीदड़ वहॉ से थोड़ी दूर चला तो उसके पीछे पीछे खून की धारा भी बहती चली गयी। यह सब उसने शेर को धोखा देने के लिये किया था।

[15] The Hunt of Lion and Jackal – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft15.htm

जब वह कुछ दूर चला गया तो फिर एक दूसरे रास्ते से उसी जगह वापस आया जहॉ वह हिरन पड़ा हुआ था और उसके ढॉचे में घुस कर उसकी सारी चर्बी निकाल ली।

इस बीच शेर गीदड़ के खून से सने बदन की खुशबू सूँघते सूँघते आया यह सोच कर कि वह बड़े हिरन के खून की खुशबू थी। लेकिन जब वह कुछ दूर तक आ गया तो उसे लगा कि उसको तो धोखा दिया गया है।

तो वह गीदड़ के खून की खुशबू सूँघते सूँघते चला तो वह मरे हुए बड़े हिरन के पास आ गया। उसने उसकी पूँछ पकड़ कर उसको खींच लिया।

शेर ने गीदड़ से कहा — "तुम मुझे धोखा देना क्यों चाहते हो।"

गीदड़ बोला — "नहीं पिता जी। मैं आपको धोखा नहीं देता। मैं आपको बता दूँ कि मैंने यह चर्बी आप ही के लिये तैयार की है।"

शेर बोला — "ठीक है। तब तुम इसे लो और इसे अपनी मॉ को दे आओ।" और उसने उसकी चर्बी उसको अपनी पत्नी को देने के लिये दे दी और उसके फेंफड़े उसको दे कर कहा कि वह उन्हें अपनी पत्नी के पास ले जाये।

जब गीदड़ शेरनी के पास आया तो उसने उसे चर्बी नहीं दी बल्कि वह उसने अपनी पत्नी और बच्चों को दे दी और फेंफड़े

शेरनी और उसके बच्चों को यह कहते हुए दे दिये — "ओ बड़े पंजों वाले के बच्चों तुम तो खुद भी बड़े पंजे वाले हो।"

शेरनी से उसने कहा — "मैं अपने पिता जी की सहायता करने जा रहा हूॅ।" पर वह अपनी पत्नी और बच्चों को ले कर वहॉ से कहीं दूर चला गया।

9 शेर का हिस्सा[16]

यह लोक कथा भी इससे पिछली लोक कथा – "शेर और गीदड़ शिकार करने चले" जैसी ही है। यह तो पता नहीं कि एक ही पुस्तक में एक जैसी ही दो लोक कथाऐं क्यों दी गयी हैं पर क्योंकि दी गयी हैं इसलिये हम भी इस लोक कथा को यहॉ अपने संग्रह में शामिल कर रहे हैं।

शेर और गीदड़ अक्सर शिकार के लिये साथ साथ जाया करते थे। वे तीर कमान से शिकार करते थे। एक बार जब वे शिकार पर गये तो शेर ने अपना तीर पहले चलाया पर उसका निशाना चूक गया। फिर गीदड़ ने तीर मारा तो उसका तीर निशाने पर लगा तो वह खुशी से चिल्लाया — "आहा मेरा निशाना लग गया।"

शेर ने उसकी तरफ अपनी बड़ी बड़ी ऑखों से घूर कर देखा फिर भी गीदड़ ने अपनी हिम्मत नहीं खोयी और बोला — "नहीं नहीं मेरा मतलब है चाचा कि आपका तीर लग गया।"

फिर वे शिकार के पीछे भागे तो गीदड़ शेर की नजर बचा कर शेर के तीर के उस पार तक चला गया। जब वे एक चौराहे पर पहुॅचे तो गीदड़ बोला — "चाचा आप बूढ़े हो गये हैं और आप

[16] Lion's Share – a folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft22.htm

थक भी गये हैं इसलिये आप यहीं ठहरिये। मैं शिकार को देख कर लाता हूँ।"

तब गीदड़ गलत रास्ते से चला गया अपनी नाक एक पत्थर पर दे मारी और वहॉ से खून बिखेरता हुआ चला आया और आ कर बोला — "मुझे वहॉ कुछ नहीं मिला पर मुझे वहॉ खून की कुछ बूँदें दिखायी दे गयीं। अच्छा हो कि आप वहॉ खुद जा कर देख कर आयें। मैं दूसरे रास्ते पर देख कर आता हूँ।"

कह कर शेर को तो उसने उस गलत रास्ते पर भेज दिया जिस पर खून की बूँदें गिरी पड़ी थीं और वह खुद ठीक रास्ते पर चला गया। अब गीदड़ तो क्योंकि ठीक रास्ते पर था सो उसको तो शिकार मिल गया।

वह उसके अन्दर घुस गया और उसका सबसे अच्छा हिस्सा निकाल लिया पर उसकी अपनी पूँछ बाहर ही रही और जब शेर आया तो उसने गीदड़ को उसकी पूँछ पकड़ कर खींच कर उसको बाहर निकाल कर फेंक दिया — "ओ गधे।"

गीदड़ जल्दी से उठ खड़ा हुआ और अपने साथ ऐसा बुरा व्यवहार करने की उससे शिकायत करते हुए उससे पूछा — "अब मैंने क्या किया चाचा जी। मैं तो उसका सबसे अच्छा हिस्सा काट रहा था।"

शेर बोला — "ठीक है। चलो हम अपनी अपनी पत्नियों को बुला कर लाते हैं।"

पर गीदड़ ने अपने प्यारे चाचा को इस बात पर मना लिया कि वह वहीं रहे क्योंकि वह बहुत बूढ़ा था और गीदड़ खुद यह काम कर के लायेगा।

वह जब गया तो अपने साथ दो हिस्से ले गया – एक हिस्सा अपनी पत्नी के लिये और दूसरा सबसे अच्छा हिस्सा शेर की पत्नी के लिये। जब गीडड़ मॉस ले कर शेर के घर पहुँचा तो शेर के बच्चे उसे देखते ही कूदने लगे और तालियॉ पीट पीट कर चिल्लाने लगे — "देखो हमारा भाई हमारे लिये मॉस ले कर आ गया।"

गीदड़ ने कुछ गुस्सा होते हुए और यह कहते हुए उनकी तरफ सबसे बुरे मॉस का एक हिस्सा फेंका — "लो यह मॉस का टुकड़ा ओ बड़ी ऑख वाले के बेटों।"

यह कर के वह अपने घर गया और अपनी पत्नी से तुरन्त ही अपना घर तोड़ने के लिये कहा और वहॉ जाने के लिये कहा जहॉ शिकार मरा पड़ा था।

शेरनी भी यही करना चाहती थी परन्तु उसने उसको यह कह कर यह करने से मना कर दिया कि शेर खुद आ कर उसको वहॉ से ले जायेगा।

जब गीदड़ अपनी पत्नी और बच्चों के साथ शिकार के पास पहुँचा तो वह एक कॉटों वाली झाड़ी में घुस गया जिससे उसका चेहरा छिल गया और उसके चेहरे से खून टपकने लगा।

तब वह शेर के सामने आया और उससे बोला — "ओह आपको कैसी पत्नी मिली है चाचा जी। जब मैंने उनसे कहा कि आप हमारे साथ चल सकती हैं तो देखिये तो ज़रा उन्होंने किस तरह से मेरा चेहरा खरोंच दिया। आप खुद ही उनको जा कर लाइये। मैं उनको यहॉ ले कर नहीं आ सकता।"

यह सुन कर शेर बहुत गुस्सा हुआ और खुद ही उसको लाने के लिये अपने घर चला गया।

शेर के जाने के बाद गीदड़ अपने परिवार से बोला — "चलो हम अब एक मीनार बना लेते हैं।"

उन्होंने सबने मिल कर पत्थर इकट्ठा किये और एक के ऊपर एक पत्थर रख कर एक ऊॅची सी मीनार बना ली। जब वह काफी ऊॅची हो गयी तब उन्होंने सब कुछ वहॉ ला कर रख लिया।

जब गीदड़ ने देखा कि शेर अपनी पत्नी और बच्चों को साथ लिये वहॉ चला आ रहा है तो वह वहीं से ज़ोर से चिल्लाया — "चाचा जब तक आप लौट कर आते तब तक हमने यह एक मीनार बना ली ताकि हम यहॉ से अपने शिकार की ठीक से देखभाल कर सकें।"

शेर बोला — "यह तुमने ठीक किया। पर अब तुम मुझे भी तो वहॉ आने दो।"[17]

[17] Here did the lioness not tell her husband about the behavior of the Jackal with her and her children?

गीदड़ बोला — "यकीनन चाचा जी। पर आप ऊपर आयेंगे कैसे? हम आपके ऊपर आने के लिये एक रस्सी फेंक देते हैं।"

सो गीदड़ ने एक रस्सी शेर के लिये ऊपर आने के लिये नीचे फेंक दी। शेर ने उसे अपने शरीर के चारों तरफ बॉध लिया। गीदड़ ने रस्सी खींचनी शुरू की। जब वह बस ऊपर पहुॅचने ही वाला था कि गीदड़ चिल्लाया — "ओह चाचा जी। आप कितने भारी हैं।"

कह कर शेर की नजर बचा कर उसने वह रस्सी काट दी। शेर बहुत ज़ोर से नीचे गिर पड़ा।

उधर गीदड़ गुस्से में भर कर अपनी पत्नी को डॉटने लगा "जाओ मेरे लिये एक नयी रस्सी ले कर आओ।" फिर धीरे से उससे कहा "पुरानी वाली।"[18]

शेर ने फिर से रस्सी अपने शरीर के चारों तरफ बॉध ली और जैसे ही वह ऊपर पहुॅचने वाला था कि गीदड़ ने शेर की ऑख बचा कर फिर से रस्सी काट दी। इस बार शेर ज़ोर से कराहते हुए नीचे गिर पड़ा क्योंकि अबकी बार वह बहुत ज़्यादा घायल हो गया था।

गीदड़ बोला — "ऐसे काम नहीं चलेगा। आपको किसी तरह और ऊपर तक आना पड़ेगा ताकि आपको कम से कम एक कौर तो खाने के लिये मिल सके।"

[18] Where did the Jackal get the rope to bring the lion up? And if he got one, then how did he get another one, by choice, he said "the old one" as if he had several ropes there in the forest? This is not clear in this story.

फिर उसने अपनी पत्नी को मॉस का एक अच्छा सा टुकड़ा तैयार करने के लिये कहा पर बाद में उसने उसको एक पत्थर गर्म करने के लिये कहा जिसके चारों तरफ चर्बी लगी हो।

उसने शेर को एक बार फिर से ऊपर खींचने की कोशिश की पर यह शिकायत करते हुए कि वह कितना भारी था इसलिये वह उसे ऊपर तक नहीं खींच सकता था उसने उससे मुॅह खोलने के लिये कहा। जब शेर ने अपना मुॅह खोला तो उसने उसमें गर्म पत्थर डाल दिया।

शेर जलन की वजह से नीचे गिर पड़ा और उसने पानी मॉगा पर पानी देना तो दूर गीदड़ अपने परिवार को साथ ले कर वहॉ से बच कर भाग गया।

10 गीदड़ की दुलहिन[19]

यह दक्षिण अफ्रीका की बात है कि वहॉ कुछ ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक गीदड़ ने एक हयीना से शादी की और चींटियों की गाय को ले कर चला गया ताकि अपनी शादी में वह उसे मार सके।

जब उसने उसे मार दिया तो उसने उसकी खाल अपनी दुलहिन को ओढ़ा दी। फिर उसने एक खम्भा गाड़ा जिस पर रस्सी मछली मारनी थी तो उसने उस जगह पर खाना पकाने के लिये भट्टी रखी जिस पर बहुत सारे स्वादिष्ट खाने पकाये जाने वाले थे।

उसकी शादी में शेर भी आया। वह उस खम्भे के ऊपर जाना चाहता था सो गीदड़ ने अपनी छोटी बेटी से कहा कि वह एक रस्सी ले आये जिससे वह शेर को बॉध कर ऊपर खींच लेगा।

पर जब वह उसको खींचने लगा और जब उसका चेहरा खाना बनाने वाले बर्तन तक आ गया तो उसने रस्सी को दो हिस्सों में काट दिया। शेर बेचारा लुढ़क कर नीचे गिर पड़ा।

इस पर गीदड़ ने अपनी छोटी सी बेटी को खूब डॉटा कि उसने उसे ऐसी पुरानी सी रस्सी क्यों दी कि वह रास्ते में ही टूट गयी। फिर वह उससे बोला कि वह उसे कोई दूसरी रस्सी दे। सो उसने उसको एक नयी रस्सी दे दी।

---

[19] Jackal's Bride – a folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft23.htm

पर जब वह उससे शेर को खींचने लगा तो फिर जब शेर का चेहरा खाना बनाने वाले बर्तन तक आ गया जो आग के ऊपर रखा था तो उसने शेर से कहा — "अपना मुँह खोलो।" और उसके मुँह में एक पत्थर का टुकड़ा रख दिया जो चर्बी के साथ ही उबल रहा था। वह पत्थर उसके गले में नीचे उतर गया और उसकी वजह से वह वहीं का वहीं मर गया।

उसी समय चींटियॉ भी अपनी गाय को ढूँढती ढूँढती भागती हुई वहॉ आ गयीं। जब गीदड़ ने उनको वहॉ आते देखा तो वह तो वहॉ से भाग लिया।

चीटियों ने सोचा कि गाय की खाल ओढ़े गीदड़ बैठा है सो वे हयीना के ऊपर जा कर चिपक गयीं। हयीना ने सोचा कि गीदड़ उससे प्यार कर रहा है सो वह ज़रा नखरे से बोली — "उफ़ तुम तो बड़े ही दुष्ट हो। इस समय क्या तुम्हें इससे अच्छा और प्यारा कोई खेल खेलने के लिये नहीं मिला।"

लेकिन जब उसने गाय की खाल में छेद कर के देखा तो वहॉ तो गीदड़ नहीं था बल्कि हजारों चींटियॉ थीं तो वह वहॉ से गिरती पड़ती किसी तरह से उनसे बच कर भाग गयी।

11 एक शेर और एक छोटे गीदड़ की कहानी[20]

एक बार की बात है कि दक्षिण अफ्रीका में एक छोटा गीदड़ शिकार करने के इरादे से बाहर निकला तो रास्ते में उसको एक शेर मिल गया। शेर ने उससे कहा कि वे साथ साथ इस शर्त पर शिकार करने चलेंगे कि वे अगर कोई छोटा हिरन मारेंगे तो वह छोटे गीदड़ का होगा और अगर वह कोई बड़ा वाला जानवर मारेंगे तो उसे शेर ले लगा।

छोटे गीदड़ ने यह शर्त मान ली और दोनों चल दिये।

पहला जानवर जो उन्होंने मारा वह एक बड़ा हिरन था। शेर यह देख कर बहुत खुश हुआ वह छोटे गीदड़ से बोला — "मैं यहॉ और शिकार ढूँढता रहूँगा तब तक तुम मेरे घर चले जाओ और मेरे बच्चों को यहॉ से शिकार घर ले जाने के लिये बुला लाओ।"

छोटा गीदड़ बोला "हॉ यह तो आप ठीक कहते हैं।"

सो शेर तो और शिकार करने चला गया। उसे जब गये थोड़ी देर हो गयी तो छोटा गीदड़ अपने घर गया और अपने बच्चों से बड़े हिरन का मॉस ले आने के लिये कहा।

[20] Story of Lion and Little Jackal – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft16.htm

वह बोला — "शेर क्या मुझे बेवकूफ समझता है जो अगर वह यह समझता है कि मैं शिकार ले जाने के लिये उसके बच्चों को बुलाऊँगा जबकि मेरे अपने बच्चे भूख से मर रहे हैं।"

सो छोटे गीदड़ के बच्चों ने मॉस एक बड़े से पत्थर पर रखा और उसको वहॉ से ले जाने का एक ही तरीका था कि वे उसको एक रस्सी की सहायता से घसीट कर ले जाते।

उधर शेर को कोई और शिकार नहीं मिला सो कुछ देर में ही वह अपने घर लौट आया और अपनी पत्नी से पूछा कि मॉस कहॉ है। उसने कहा "मॉस कैसा मॉस? यहॉ तो कोई मॉस नहीं है।"

उसने पूछा — "क्या छोटा गीदड़ यहॉ मेरे बच्चों के लिये मेरा सन्देश ले कर नहीं आया कि वे वहॉ से मॉस उठा कर ले जायें।"

उसकी पत्नी बोली — "वह तो यहॉ आया ही नहीं। हम तो भूख के मारे मरे जा रहे हैं।"

यह सुन कर शेर छोटे गीदड़ के घर गया पर वह उस चट्टान तक नहीं पहुँच सका जहॉ वह रहता था। सो वह वहीं नीचे पानी के पास उसका इन्तजार करता बैठ गया।

कुछ समय बाद छोटा गीदड़ पानी लेने आया। वह जब पानी के पास पहुँचा तो उसने वहॉ शेर को बैठे देखा। वह वहॉ से तुरन्त ही भाग लिया तो शेर भी उसके पीछे पीछे भाग लिया।

छोटा गीदड़ एक पेड़ में बने बिल में छिप कर बैठ गया पर जब तक वह उसके अन्दर तक दूर तक जाता शेर ने उसकी पूँछ पकड़ ली।

छोटा गीदड़ बोला — "अरे यह मेरी पूँछ नहीं है जो तुमने पकड़ रखी है यह तो पेड़ की जड़ है जो तुम्हारे हाथ में है। अगर तुम्हें मेरा विश्वास नहीं होता तो तुम इसको किसी पत्थर से मार कर देखो कि इसमें से खून निकलता है या नहीं।"

शेर ने उसकी पूँछ तो छोड़ दी और एक पत्थर लाने चल दिया ताकि वह यह देख सके कि वह क्या था। जब वह पत्थर लाने के लिये गया तो छोटा गीदड़ तुरन्त ही उस बिल में बहुत दूर तक चला गया।

शेर जब पत्थर ले कर वापस आया तो छोटा गीदड़ तो वहॉ था ही नहीं। शेर वहीं उसी छेद के पास लेट गया और छोटे गीदड़ के बाहर निकलने का इन्तजार करने लगा।

काफी देर के बाद छोटा गीदड़ अपने बिल के बाहर आया। दरवाजे तक आ कर उसने उसके चारों तरफ देखा पर उसको शेर नहीं दिखायी दिया। पक्का करने के लिये वह बोला — "ओह मेरे मालिक। हालॉकि आप छिपे हुए हैं पर फिर भी मुझे आप दिखायी दे रहे हैं कि आप कहॉ हैं।"

शेर जहॉ छिपा हुआ लेटा हुआ था वहीं लेटा रहा वहॉ से बिल्कुल भी नहीं हिला। सो गीदड़ बिल में से बाहर निकल आया शेर उसके पीछे भागा पर वह उससे बच कर निकल गया।

शेर उसको इधर उधर ढूँढता रहा। एक दिन जब छोटा गीदड़ फिर से शिकार के लिये निकला तो वह एक ऐसी आ जगह आ गया जहॉ से वह शेर से बच कर नहीं जा सकता था।

शेर उसके ऊपर कूदने ही वाला था कि छोटा गीदड़ उससे बहुत नर्मी से बोला — "चुपचाप खड़े रहिये। आप देख नहीं रहे हैं कि चट्टान के दूसरी तरफ हिरन है। मुझे बहुत खुशी है कि आप मेरी सहायता के लिये यहॉ आ गये हैं। अब आप यहीं रुकिये मैं गोल गोल घूम कर उसको आपकी तरफ लाने की कोशिश करता हूँ।"

शेर वहीं खड़ा रहा और छोटा गीदड़ वहॉ से बच कर भाग गया।

एक दूसरे समय एक बार जानवरों की एक मीटिंग थी और शेर उस मीटिंग का सरदार था। छोटा गीदड़ भी वहॉ आना चाहता था पर वहॉ के लिये एक कानून था कि जिस किसी को इस मीटिंग में आना था उसके सींग होने चाहिये।

सो छोटे गीदड़ ने मधुमक्खी के छत्ते से थोड़ा सा मोम लिया और उसने अपने लिये उसके सींग बना लिये। वे सींग उसने अपने सिर पर बॉध लिये और उस मीटिंग में चला गया। शेर ने सींगों के लगे होने की वजह से उसको पहचाना नहीं।

वह आग के पास बैठा था सो जैसे ही आग की गर्मी उसको लगी तो वह सो गया पर उसकी गर्मी से वह मोम पिघल गया जिससे उसके सींग चिपके हुए थे। जब शेर की नजर उस पर पड़ी तब उसने पहचाना कि वह कौन था। उसने तुरन्त ही उसको पकड़ने की कोशिश की पर वह वहॉ से भी तुरन्त ही कूद कर भाग गया।

वह एक आगे को निकली हुई चट्टान के नीचे खड़ा हो गया और चिल्लाने लगा — "कोई मुझे बचाओ। कोई मुझे बचाओ। मेरे ऊपर चट्टान गिर रही है।"

शेर उस चट्टान को रोकने के लिये एक बड़ा मोटा सा डंडा लेने चला गया ताकि वह छोटे गीदड़ को ज़िन्दा पकड़ सके। जब वह डंडा लाने चला गया तो छोटा गीदड़ वहॉ से भाग गया।

उसके बाद वे दोनों फिर से एक दूसरे को दोस्त बन गये और एक बार फिर से शिकार करने गये। इस बार उन्होंने एक बैल मारा। शेर बोला — "मैं इसको यहॉ ठहर कर देखता हूँ और तुम इसको यहॉ से टुकड़े टुकड़े कर के ले जाओ।"

शेर ने उसको बैल की छाती दी और उससे कहा कि उसको ले जा कर वह उसकी पत्नी को दे दे। छोटा गीदड़ उसको ले गया और उसको ले जा कर अपनी पत्नी को दे दिया।

जब वह छाती दे कर वापस आया तो उसने उसे उसकी एक टॉग दी और उससे कहा कि वह उसे अपनी पत्नी को दे दे। छोटा गीदड़ उसे शेर की पत्नी को देने गया तो शेरनी ने उसे लेने से

इनकार कर दिया कि "मैं इसको नहीं ले सकती क्योंकि यह यहाँ आनी ही नहीं चाहिये।"

इस पर छोटे गीदड़ ने उसे शेरनी के मुँह पर दे मारा और वहाँ चला गया जहाँ शेर ने बैल को मारा था। शेर ने फिर उसको माँस का एक बहुत बड़ा टुकड़ा दे कर कहा कि वह उसे उसकी पत्नी को दे आये। छोटा गीदड़ उसे अपनी पत्नी के पास ले गया। ऐसा तब तक चलता रहा जब तक कि सारा बैल खत्म नहीं हो गया।

उसके बाद दोनों अपने अपने घर चले गये। जब शेर अपने घर पहुँचा तो देखा कि उसके घर में तो सब रो रहे थे।

उसकी पत्नी ने उससे पूछा — "क्या वह तुम थे जिसने छोटे गीदड़ को मुझे और बच्चों को पीटने के लिये भेजा था? और क्या वह तुम थे जिसने मेरे खाने के लिये टाँग भेजी थी? तुम्हें मालूम नहीं कि क्या मैं टाँग खाती हूँ?"

शेर ने जब यह सब सुना तो वह तो गुस्से के मारे काँपने लगा। वह तुरन्त ही छोटे गीदड़ के घर चल दिया।

जब वह उस चट्टान के पास पहुँचा तो छोटे गीदड़ ने नीचे झाँक कर पूछा — "आप कौन हैं और आपका क्या नाम है। आप किसके बेटे हैं और आप कहाँ से आ रहे हैं और कहाँ जा रहे हैं? आपको किससे मिलना है और उससे आपको क्या काम है?"

शेर बोला — "मैं तो सिर्फ तुम्हें देखने आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम एक रस्सी नीचे फेंक दो।"

छोटे गीदड़ ने चूहे की खालों से बनी एक रस्सी नीचे लटका दी और जब शेर उस पर थोड़ा सा चढ़ आया तो वह रस्सी टूट गयी। वह नीचे गिर गया और घायल हो गया। फिर वह अपने घर वापस चला गया।

12 एक डैम की कहानी[21]

शेर की यह लोक कथा दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि देश में अकाल पड़ा तो जंगल का राजा होने के नाते शेर ने बहुत सारे जानवरों को बुलाया ताकि वे इस कठिनाई के समय में उसे कुछ सलाह दे सकें कि जब बारिश हो तो वहॉ बाद के इस्तेमाल के लिये पानी कैसे इकट्ठा किया जाये।

शेर के इस बुलावे पर वहॉ बबून, चीता[22], हयीना, गीदड़, बड़ा खरगोश[23] और पहाड़ों वाला कछुआ आये थे। इस मीटिंग में यह तय पाया गया कि बारिश का पानी भरने के लिये किसी ठीक जगह पर एक बहुत बड़ा गड्ढा खोदा जाये और जब बारिश होगी तब उसमें पानी भर जायेगा जिसे वे सब बाद में काम में ले सकते हैं।

बस अगले ही दिन से सबने काम शुरू कर दिया सिवाय गीदड़ के जो अक्सर वहॉ उस जगह घूमता हुआ पाया गया और यह बुदबुदाते हुए भी सुना गया कि वह पानी के लिये गडढे खोदने में अपने नाखून खराब नहीं करने वाला।

---

[21] The Story of a Dam – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft19.htm

[22] Translated for the word “Leopard”

[23] Translated for the word “Hare”. Hare is a rabbit-like animal but only a little bigger than it.

जब वह डैम बन कर पूरा हो गया तो बारिश हुई इससे उन जानवरों को बहुत खुशी हुई जिन्होंने इतनी मेहनत से वह गड्ढा खोदा था। सबसे पहले वहॉ पानी पीने आने वालों में था गीदड़ जिसने न केवल पानी पिया बल्कि अपना घड़ा भी पानी से भर लिया और बाकी बचे पानी में तैरने के लिये घुस गया। उसने उसे जितना गन्दा और कीचड़ वाला बना सकता था बना दिया।

यह बात शेर को बतायी गयी तो शेर तो यह सुन कर बहुत ही गुस्सा हुआ। अगले दिन शेर ने बबून को कहा कि वह अपने हाथ में एक डंडा[24] ले कर पानी की रखवाली करे।

बबून को यह भी कहा गया कि वह पानी के पास की किसी झाड़ी में छिप जाये और वहॉ से पानी पर नजर रखे। पर गीदड़ को इस बात का तुरन्त ही पता चल गया और उसने उसके वहॉ होने का मतलब भी भॉप लिया।

गीदड़ को यह मालूम था कि बबून को शहद बहुत अच्छा लगता था। बस उसके दिमाग में तुरन्त ही एक तरकीब दौड़ गयी। इधर उधर घूमते हुए वह जब तब अपनी उॅगलियॉ अपने घड़े में डुबोता रहा और उनको स्वाद ले ले कर चाटता रहा।

[24] Translated for the word “Knobkerrie”. See its picture above. This is an indigenous weapon in South Africa.

और साथ में नीची आवाज में यह भी कहता रहा "मुझे उनके उस गन्दे पानी की जरूरत नहीं है जबकि मेरे पास इतने स्वादिष्ट शहद का बर्तन है।"

यह बात बेचारे बबून के लिये बहुत ज़्यादा थी। कुछ देर तक तो वह अपने आपको रोके रहा पर फिर उसके मुॅह में पानी भर आया। वह जल्दी ही गीदड़ के पास पहुॅचा और उसने उससे उसे कुछ शहद देने की विनती की। क्योंकि वह वहॉ कई घंटे से खड़ा था सो वह वहॉ खड़े खड़े थक गया था और उसे भूख भी लग आयी थी।

पहले तो गीदड़ ने बबून की तरफ ध्यान ही नहीं दिया। वह अपने चारों तरफ ही देखता रहा फिर बोला कि उसको ऐसे अभागे जीव पर दया आती है जैसा कि वह था। फिर उसने कहा कि वह कुछ शर्तों पर ही उसको शहद दे सकता है।

पहली शर्त तो यह कि बबून अपना डंडा छोड़ दे और दूसरी शर्त यह कि वह अपने आपको गीदड़ से बॅधवाने दे। बेवकूफ बबून इन शर्तों पर राजी हो गया। उसने अपना डंडा छोड़ दिया और गीदड़ ने उसे इस तरह बॉध दिया कि वह अपने हाथ या पैर कुछ भी नहीं हिला सकता था।

अब गीदड़ पानी पीने चला। उसने पानी पिया फिर अपना पानी का घड़ा भरा फिर वह पानी में तैरा। और यह सब भी उसने बबून के सामने ही किया।

कुछ कुछ देर में वह उससे कहता रहा कि उसने ऐसा बेवकूफ जानवर कहीं नहीं देखा जिसको इतनी जल्दी धोखा दिया जा सकता था। उसके पास गीदड़ को देने के लिये कोई शहद भी नहीं था सिवाय इसके कि वह उसके डंडे से उसी को कभी कभी मार देता था।

इतने में कुछ और जानवर वहॉ आ गये और बबून को इस दुखी दशा में देखा।

शेर बबून से इतना गुस्सा था कि उसने उसको बड़ी भारी सजा सुनायी और उसकी बेवकूफी के लिये बहुत डॉटा।

यह देख कर कछुआ आगे आया और शेर से कहा कि वह उसके लिये बबून को पकड़ देगा। पहले तो शेर ने सोचा कि कछुआ मजाक कर रहा है पर जब उसने उसको यह समझाया कि वह उसको कैसे पकड़ेगा तब शेर राजी हो गया।

उसने सलाह दी कि मधुमक्खी के छत्ते पर पायी जाने वाली काली चिपकने वाली चीज़ उसके सारे शरीर पर मल दी जाये। फिर वह डैम के घुसने वाले दरवाजे के पास जा कर पानी की सतह के बराबर में खड़ा हो जायेगा। सो जब भी गीदड़ वहॉ पानी पीने आयेगा तो वह उससे चिपक जायेगा।

ऐसा ही किया गया और कछुआ वह चिपकने वाली चीज़ अपने शरीर पर पोत कर पानी के पास ही खड़ा हो गया।

अगले दिन जब गीदड़ पानी पीने आया तो वह बड़ी सावधानी के साथ पानी की तरफ बढ़ा। पानी में घुसने वाले दरवाजे की तरफ बढ़ा तो उसने जानवरों की तारीफ की कि वे कितने अच्छे हैं कि उन्होंने पानी में जाने के लिये उसके पैर रखने के लिये एक काला पत्थर रख दिया है।

जैसे ही उसने उस काले पत्थर पर अपना आगे वाला पैर रखा वह तो उससे चिपक गया। उसने देखा कि उसको तो धोखा दिया गया है क्योंकि अब कछुए ने अपना सिर बाहर निकाल लिया था और वह चलने लगा था।

गीदड़ के पैर तो उससे चिपक गये थे पर उसके हाथ अभी भी आजाद थे सो उसने कछुए को धमकी दी कि अगर उसने गीदड़ को नहीं छोड़ा तो वह उसको कुचल कर रख देगा।

कछुआ फिर वही बोला कि वह जो चाहे कर सकता था। तब गीदड़ ने एक बहुत ज़ोर की कूद लगायी तो वह तो यह देख कर ही डर गया कि उसके तो पीछे वाले पैर भी कछुए के शरीर से चिपक गये थे।

वह फिर बोला — "ओ कछुए मेरा मुॅह और दॉत अभी भी आजाद हैं। अगर तू मुझे जाने नहीं देगा तो मैं चाहॅू तो तुझे अभी अभी खा सकता हॅू।"

कछुए ने फिर वही जवाब दिया — "तुम जो चाहे करो।"

गीदड़ ने उससे आजाद होने के लिये अपनी अखिरी कोशिश की कि उसके शरीर में अपने दॉत गड़ा दिये जिससे वह अपना सिर और पैर दोनों कछुए से चिपका बैठा।

कछुए को अपना शिकार पकड़ने पर बड़ा गर्व हुआ। वह गीदड़ को अपनी पीठ पर बिठाये पानी के किनारे किनारे ऊपर की तरफ चल दिया। ताकि वहॉ पानी पीने आने वाले जानवर उसके इस कारनामे को अच्छी तरह देख सकें।

जब जानवरों ने कछुए की पीठ पर गीदड़ को इस तरह आते देखा तो वे वास्तव में बड़े आश्चर्य में पड़ गये कि किस तरह कछुए ने होशियारी से चालाक गीदड़ को पकड़ा है। जबकि बबून को फिर से बेवकूफ कह कर चिढ़ाया गया।

शेर ने गीदड़ को तुरन्त ही मौत की सजा सुना दी और हयीना को उसे मौत की सजा देने के लिये चुना गया। गीदड़ ने शेर से उस पर दया करने की बहुत विनती की पर उसने देखा कि वह सब बेकार था तो उसने शेर से एक आखिरी विनती की कि उसको ऐसी मौत दी जाये जिसमें उसको बहुत देर तक मरने का कष्ट न सहना पड़े।

यह सुन कर शेर ने उससे पूछा कि वह कैसे मरना चाहता था तो गीदड़ ने कहा कि उसकी पूँछ के सारे बाल साफ करवा दिये जायें और उस पर थोड़ी सी चिकनाई लगा दी जाये। जब हयीना

उसको हवा में दो बार घुमा ले तो उसका सिर एक पत्थर पर मार कर उसका दिमाग बाहर निकाल लिया जाये।

शेर ने सोचा कि यह तो बिल्कुल ठीक कह रहा है सो उसने अपनी मौजूदगी में हयीना को गीदड़ को इसी तरीके से मारने के लिये कहा।

जब गीदड़ की पूँछ से उसके सारे बाल साफ कर दिये गये और उस पर चिकनाई लगा दी गयी तो हयीना ने उसको बहुत ज़ोर से पकड़ा पर उसके उसे जमीन पर से उठाने से पहले ही चालाक गीदड़ हयीना की पकड़ से अपनी जान बचाने के लिये फिसल कर भाग गया। और दूसरे जानवर जो वहॉ खड़े थे उसके पीछे पीछे भागे।

शेर उसके पीछे सबसे पहले भागा। काफी दूर तक भागने के बाद गीदड़ बाहर को निकली हुई एक चट्टान के नीचे जा कर छिप गया।

वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया अपने कन्धे चट्टान के नीचे लगा लिये और चिल्ला कर शेर से बोला कि क्योंकि चट्टान उसके ऊपर गिरने वाली थी सो वह उसकी सहायता करे नहीं तो दोनों मारे जायेंगे।

यह देख कर शेर ने अपने दोनों कन्धे चट्टान के नीचे लगा दिये और अपनी पूरी ताकत से उसे रोके रहा। कुछ देर बाद उसने शेर से कहा — "मैं अब यहॉ से बाहर जा सकता हूँ और उस चट्टान को

रोकने के लिये कोई मोटा डंडा ले कर आ सकता हूँ ताकि शेर की जान बच जाये।"

सो वह वहॉ से डंडा लाने चला गया और शेर को भूखा मरने के लिये वहीं छोड़ गया। अगर किसी ने उसे वहॉ से निकाला नहीं होगा तो शायद वह बेचारा अभी भी उसी चट्टान को थामे खड़ा होगा।

तुम देखना अगर वह तुम्हें कही दिखायी दे जाये तो उसकी सहायता कर देना। बेचारा शेर।

13 शेर जो स्त्री बन गया[25]

एक बार की बात है कि दक्षिण अफ्रीका में कुछ स्त्रियॉ कुछ पत्ते जड़ और कुछ और जंगली जड़ी बूटियॉ इकट्ठा करने गयीं।

पत्ते और जड़ें आदि इकट्ठी कर के जब वे घर लौट रही थीं तो वे रास्ते में बैठ गयीं और बोलीं "आओ देखते हैं कि जंगल का यह खाना कैसा है।"

उन्होंने एक स्त्री का लाया खाना चखा तो वह मीठा था फिर दूसरी स्त्री का लाया चखा तो वह कुछ कड़वा सा था। तो दूसरी स्त्री ने सबसे कहा "देखो इस स्त्री का लाया खाना मीठा है।" सो दूसरी स्त्रियों ने उससे कहा कि वह अपना खाना फेंक दे और कोई दूसरा खाना ढूँढे।

सो उसने अपना लाया खाना फेंक दिया और दूसरा खाना इकट्ठा करने चली गयी। जब उसने उसे काफी इकट्ठा कर लिया तब वह अपनी दूसरी साथिनों के पास लौटी पर वे तो उसको मिली ही नहीं।

[25] Lion Who Took a Woman's Shape – a folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft39.htm

वहाँ से वह एक नदी के किनारे चली गयी। वहाँ उसने देखा कि एक बड़ा खरगोश[26] पानी भर रहा था। उसने बड़े खरगोश से कहा — "बड़े खरगोश मुझे थोड़ा पानी दो न।"

खरगोश बोला — "इस प्याले से तो केवल मेरे चाचा शेर और मैं ही पानी पी सकते हैं और कोई नहीं।"

उसने बड़े खरगोश से फिर कहा — "बड़े खरगोश मुझे पीने के लिये थोड़ा पानी दो न। मुझे बहुत प्यास लगी है।"

लेकिन बड़े खरगोश ने उसको फिर वही जवाब दिया कि उस प्याले से केवल उसका चाचा शेर और वही पानी पी सकते हैं। स्त्री को बहुत प्यास लगी थी सो उसने बड़े खरगोश के हाथ से उसका प्याला छीन लिया और उसमें पानी भर कर पी लिया।

यह देख कर बड़ा खरगोश शेर से यह घटना बताने के लिये घर दौड़ गया। इस बीच स्त्री ने वह प्याला वहीं रख दिया और अपने घर चली गयी।

बड़े खरगोश से यह किस्सा सुन कर शेर तुरन्त ही नदी पर आया पर तब तक तो वह स्त्री पानी पी कर जा चुकी थी। पर फिर भी शेर को वह दूर जाती दिखायी दे गयी। वह उसके पीछे पीछे दौड़ा।

[26] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit-like animal – a little bigger than it. See its picture above.

कुछ आवाज सुन कर स्त्री ने पीछे मुड़ कर देखा तो उसने देखा कि शेर उसके पीछे आ रहा था। शेर को देख कर उसने गाया —

ओ मेरी मॉ वह मुझे पत्ते इकट्ठा नहीं करने दे रही खेतों के पत्ते खेतों का खाना, हू

दौड़ते दौड़ते शेर उस स्त्री के पास तक आ गया तो वे दोनों एक झाड़ी के चारों तरफ घूमते रहे। स्त्री ने बहुत सारे मोती[27] और कई कंगन पहन रखे थे।

शेर ने उनको देख कर कहा — "मुझे ये दो मैं इन्हें पहनूँगा।" उसने वे उसको दे दिये पर बाद में उसने उनको स्त्री को वापस कर दिये।

वे दोनों फिर एक झाड़ी के चारों तरफ एक दूसरे को पकड़ने और बचने के लिये चक्कर काटते रहे कि शेर गिर पड़ा और वह स्त्री उसके ऊपर कूद कर बैठ गयी और उसको अपने नीचे दबाये रखा तो शेर ने गाया —

ओ मेरी चाची अब सुबह हो रही है उठने का समय हो गया है
मैं विनती करता हूँ तुम मेरे लिये उठो

यह सुन कर वह स्त्री उस पर से उठ गयी और वे फिर से एक दूसरे के पीछे एक झाड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे। इस बार स्त्री गिर गयी तो शेर उसके ऊपर चढ़ कर बैठ गया तो स्त्री ने उससे कहा —

[27] Translated for the "Beads" – not for pearls.

ओ मेरे चाचा अब सुबह हो रही है उठने का समय हो गया है
मैं विनती करती हूॅ तुम मेरे लिये उठो

यह सुन कर शेर उठा पर उन्होंने फिर से उसी झाड़ी के चारों तरफ एक दूसरे के पीछे चक्कर काटना शुरू कर दिया। शेर दोबारा गिर गया तो वह स्त्री फिर से उसके ऊपर बैठ गयी। शेर ने दोबारा गाया —

ओ मेरी चाची अब सुबह हो रही है उठने का समय हो गया है
मैं विनती करता हूॅ तुम मेरे लिये उठो

स्त्री फिर से उसके ऊपर से उठ गयी और फिर से वे दोनों उसी झाड़ी के चारों तरफ एक दूसरे के पीछे चक्कर काटना शुरू किया तो स्त्री ने अपना पहला वाला गीत गाया तो शेर बोला —

ही खा, क्या सुबह हो गयी उठने का समय हो गया?

और फिर शेर ने उसे तो खा लिया पर उसने उसकी खाल वैसी की वैसी वहीं छोड़ दी। फिर उसने उसे उसकी पोशाक और गहनों के साथ पहन लिया। अब वह उस स्त्री जैसा ही लगने लगा। फिर वह वहॉ से उसके क्राल[28] उसके घर चला गया।

[28] Kraal is a small village of a few huts surrounded by a wall. See its picture above. It is indigenous to South Africa of Africa continent.

जब यह नकली स्त्री अपने घर पहुॅची उसकी छोटी बहिन रोते हुए बोली — "बहिन मुझे कुछ दूध दो।"

नकली स्त्री ने जवाब दिया — "मैं तेरे लिये कोई दूध नहीं डालूॅगी।"

तब वह बच्ची अपनी मॉ से बोली — "मॉ मुझे दूध दो।"

उससे उसने कहा — "जा अपनी बहिन के पास जा वह तुझे दूध दे देगी।"

छोटे से बच्ची ने फिर अपनी बहिन से कहा तो उसने फिर से उसको दूध देने से मना कर दिया "मैं नहीं दूॅगी।"

मॉ ने बच्ची से फिर कहा — "मैंने तेरी बहिन को मना किया था कि वह जंगल में पत्ते और जड़ ढूॅढने न जाये। मुझे मालूम नहीं कि उसके साथ वहॉ क्या हुआ है। तू बड़े खरगोश के पास जा और उससे जा कर अपने लिये दूध डालने के लिये कह।"

सो वह बच्ची बड़े खरगोश के पास गयी तो उसने उसको थोड़ा सा दूध दिया। पर उसकी बड़ी बहिन ने कहा — "थोड़ा सा दूध मुझे भी दे न।"

वह बच्ची अपना बॉस का प्याला ले कर फिर अपनी बहिन के पास गयी तब दोनों ने उस प्याले से दूध पिया। जब वे दोनों उस प्याले में से दूध पी रही थीं तो उसमें से थोड़ा सा दूध बच्ची के हाथ पर बिखर गया तो बड़ी बहिन ने उसे चाट लिया।

अब यह बहिन क्योंकि उसकी बहिन तो थी नहीं वह तो उसकी बहिन के रूप में शेर थी सो उसकी जीभ बहुत खुरदरी थी। जीभ खुरदरी होने की वजह से जब उसने अपनी छोटी बहिन के हाथ पर से दूध चाटा तो उसके खून निकल आया। वह खून भी उसने चाट लिया।

छोटी बच्ची ने इस बात की मॉ से शिकायत की — "मॉ देखो बहिन ने मेरे हाथ में छेद कर दिया और उसमें से खून चाट लिया।"

मॉ बोली — "पता नहीं किस शेर के स्वभाव से तेरी बहिन उस रास्ते से जंगल गयी थी जिसको मैंने उसे जाने के लिये मना किया था और वापस आयी है।"

अब गायों को दोहे जाने की जल्दी थी सो बड़ी बहिन ने बालटियॉ साफ कीं ताकि वह उनको दुह सके। सो जब वह एक रस्सी ले कर[29] गायों के पास उनको दुहने के लिये पहुॅची तो उन सबने उससे दुहे जाने के लिये मना कर दिया।

बड़ा खरगोश बोला — "तुम गाय के आगे खड़ी क्यों नहीं होतीं।"

वह बोली — "ओ बड़े खरगोश तुम अपने भाई को बुलाओ और फिर तुम दोनों गाय के सामने खड़े हो।"

[29] Rope was to tie the forelegs of a cow while she milked it.

बड़े खरगोश ने जब उसके पति से कहा तो पति बोला — "अरे आज इसको क्या हो गया जो गायें इससे दूध दुहवाना नहीं चाहतीं। ये तो वही गायें हैं जो रोज दूध देती हैं।"

माँ बोली — "आज शाम जाने इनको क्या हो गया। ये सब तो वही गायें हैं जिनको यह हमेशा बिना किसी की सहायता के दुहती है। किसने इसके ऊपर जादू डाल दिया है कि यह शेर के स्वभाव वाली स्त्री हो गयी है।"

बड़ी बहिन ने तब अपनी माँ से कहा "मैं दूध नहीं दुहूँगी।" यह कह कर वह नीचे बैठ गयी। आखिर माँ ने बड़े खरगोश से कहा — "ला मुझे बाँस ला कर दे मैं इनका दूध दुहती हूँ। पता नहीं इस लड़की को क्या हो गया है।"

सो माँ ने उन गायों का दूध दुहा और जब उसने दूध दुह लिया तो बड़ा खरगोश उस लड़की के घर बाँस ले कर आया जहाँ उसका पति भी था। उस लड़की ने अपने पति को कुछ भी खाने को नहीं दिया।

जब रात हो गयी तो वह सो गयी। जहाँ उसने स्त्री की खाल उतार कर रखी थी वहाँ उन्होंने शेर के कुछ बाल देखे।

तो उनको पता लग गया कि यह उनकी बेटी नहीं है यह तो कोई दूसरा ही आदमी है। इसी वजह से गायों ने अपने आपको दुहवाने से भी मना कर दिया। सो काल के लोगों ने उस झोंपड़ी को तोड़ना शुरू किया जिसमें शेर लेटा हुआ सो रहा था।

जब उन्होंने वहॉ से चटाइयॉ हटायीं तो उन्होंने उन चटाइयों से विनती की कि अगर वे उनकी तरफ हैं तो वे कोई आवाज न करें।

वे डंडे जिनके ऊपर वह झोंपड़ी खड़ी थी उन्होंने उनसे भी यही कहा कि अगर वे उनकी तरफ हैं तो वे कोई आवाज न करें ऐसा ही उन्होंने बिछाने वाली खालों से और बॉसों से भी कहा।

इस तरह से उन्होंने पूरी झोंपड़ी और उसका सारा सामान हटा लिया। फिर उन्होंने थोड़ी सी घास ली और उसको शेर के ऊपर डाल दी और उसमें आग लगा दी। उन्होंने उस आग से भी कहा "अगर तुम हमारी तरफ हो तो इससे पहले कि तुम उसके दिल तक आओ तुम जल्दी से जल जाओ।"

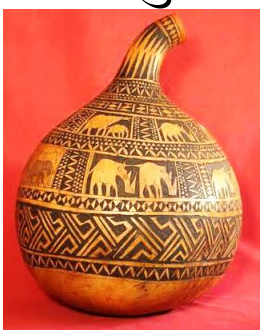

आग बहुत जल्दी ही जल उठी और जब तक वह स्त्री के दिल तक आयी तो स्त्री का दिल बाहर कूद गया। मॉ ने उसे तुरन्त ही उठा लिया और उसको एक कैलेबाश[30] में रख दिया।

शेर ने जहॉ वह आग की जगह लेटा हुआ था वहॉ से मॉ से कहा —"मैंने कितने अच्छे तरीके से तुम्हारी बेटी को खा लिया।"

मॉ बोली — "तुम भी अब आराम की जगह हो।"

[30] Calabash is an outer cover of any hardcover fruit like gourd or pumpkin. In Africa it is used to keep dry or wet things like a pitcher is used in India. Except that pitcher is susceptible to break easily. See its picture above.

उसके बाद उस स्त्री की जिन जिन गायों के बच्चा हुआ था उन उन गायों का उसने पहला पहला दूध लिया और उस कैलेबाश में भर दिया जिसमें उसकी बेटी का दिल रखा हुआ था।

धीरे धीरे जैसे जैसे लड़की बढ़ती गयी कैलेबाश का साइज़ भी बढ़ता गया।

एक दिन जब मॉ जंगल से लकड़ी लेने गयी तो उसने बड़े खरगोश से कहा — "जब तक मैं घर वापस लौट कर आती हूँ तुम सब कुछ साफ कर के रखना।"

पर जब मॉ जंगल गयी हुई थी तो लड़की कैलेबाश में से निकल आयी और उसने झोंपड़ी की वैसे ही सफाई कर दी जैसे वह पहले किया करती थी और बड़े खरगोश से बोली — "जब मेरी मॉ आये और तुमसे पूछे कि यह सब किसने किया है तो तुम उससे कहना कि "यह काम मैंने यानी बड़े खरगोश ने किया है।"

इस तरह से घर की सफाई कर के वह छिप गयी। जब मॉ घर आयी तो उसने बड़े खरगोश से पूछा कि "यह सब किसने किया है। ये तो बिल्कुल ऐसी ही दिखायी देती हैं जैसे मेरी बेटी किया करती थी।"

बड़ा खरगोश बोला "यह मैंने किया है।" पर मॉ को उसकी बात का विश्वास ही नहीं हुआ सो वह कैलेबाश देखने चली गयी। उसने देखा कि कैलेबाश तो खाली पड़ा है। उसने जब उसे और जगह ढूँढा तो उसको अपनी बेटी मिल गयी।

मॉ ने उसे अपने गले से लगा लिया और बहुत प्यार किया। उस दिन के बाद से वह अपने घर में अपनी मॉ के पास ही रही। फिर उसने शादी भी नहीं की।

14 एक शेर, एक गीदड़ और एक आदमी[31]

एक बार ऐसा हुआ कि एक शेर और एक गीदड़ कुछ जमीन और राज्य के मामले पर सोच विचार के लिये इकट्ठा हुए। गीदड़ जंगल के राजा शेर का इन मामलों पर एक बहुत ही खास सलाहकार था।

काफी देर तक इस बारे में बात करने बाद उनकी बातचीत उनके अपने बारे में बात की तरफ मुड़ गयी।

शेर ने अपनी ताकत की बड़ाई करनी शुरू कर दी। गीदड़ एक बहुत बड़ा दूसरे की बड़ाई करने वाला था सो वह भी उसकी हॉ में हॉ मिलाता रहा।

गीदड़ की बात सुन कर शेर भी अब अपने को सचमुच में बहुत ताकतवर समझ रहा था तो गीदड़ ने कहा — "शेर जी, अब मैं आपको एक ऐसा जानवर दिखाऊँगा जो आपसे भी ताकतवर है।"

थोड़ी दूर तक वे लोग साथ साथ चलते रहे, गीदड़ आगे आगे और शेर उसके पीछे पीछे। कुछ देर में ही उनको एक छोटा लड़का मिला।

शेर ने पूछा — "क्या यह है वह ताकतवर आदमी?"

"नहीं राजा जी। इसको तो अभी आदमी बनना है। यह तो अभी केवल बच्चा है।" गीदड़ ने जवाब दिया।

---

[31] The Lion, the Jackal and the Man – a folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft09.htm

कुछ दूर जाने पर उनको एक बूढ़ा आदमी मिला जिसकी कमर झुकी हुई थी और वह एक डंडे के सहारे चल रहा था।

शेर ने पूछा — "क्या यही है वह ताकतवर आदमी?"

गीदड़ बोला — "नहीं राजा जी, यह भी वह नहीं है। यह पहले आदमी रह चुका है।"

"तो फिर कहॉ है वह ताकतवर आदमी?"

"आप चलते रहिये मैं उसे जल्दी ही दिखाता हूँ आपको।"

वह फिर आगे चलने लगे। कुछ दूर आगे जा कर उनको एक जवान शिकारी मिला। उसके साथ उसके कुछ शिकारी कुत्ते भी थे।

गीदड़ बोला — "यह है वह आदमी राजा जी। इसकी ताकत के सामने आपकी ताकत कुछ भी नहीं। अगर आप इस आदमी से जीत गये तभी यह समझा जायेगा कि आप सचमुच में ताकतवर हैं।"

यह कह कर गीदड़ एक तरफ को हट गया और एक पेड़ के पीछे छिप गया ताकि वह शेर और उस आदमी की मुलाकात को साफ साफ देख सके।

शेर दहाड़ते हुए उस शिकारी की तरफ बढ़ा पर जब वह उस के पास तक आया तो उस शिकारी के कुत्तों ने उसको पीछे हटा दिया।

शेर ने भी कुत्तों की तरफ ध्यान न देते हुए और अपने अगले पंजों को झटकते हुए उन कुत्तों को अलग अलग कर दिया। वे कुत्ते भी भौंकते हुए अपने मालिक की तरफ चले गये।

उसके बाद आदमी ने अपनी बन्दूक से एक गोली चलायी जो शेर के कन्धे को छूती हुई निकल गयी पर उसको भी शेर ने अनदेखा कर दिया।

इस पर शिकारी ने अपना लोहे का चाकू निकाल लिया और शेर को उससे कई बार मारा। चाकू की मार खा कर शेर पीछे हट गया और भाग गया पर तुरन्त ही शिकारी ने उसको एक गोली और मारी।

शेर गीदड़ के पास आया तो गीदड़ ने पूछा — "क्या तुम अभी भी अपने आपको सबसे ज़्यादा ताकतवर समझते हो?"

शेर बोला — "नहीं गीदड़ भाई। उस आदमी को वहीं रहने दो। मैंने उसके जैसा ताकतवर और कोई नहीं देखा। पहले तो उसके दस रक्षा करने वालों ने मेरे ऊपर हमला कर दिया।

मैंने उनकी तो कोई खास चिन्ता नहीं की पर जब मैं उसके टुकड़े टुकड़े करने के लिये आगे बढ़ा तो उसने मेरे ऊपर गोलियाँ बरसायीं, और वे भी मेरे चेहरे के ऊपर। उन्होंने मेरे चेहरे को जला दिया पर मैंने उनकी भी ज़्यादा चिन्ता नहीं की।

पर जब मैंने दोबारा उसको गिराने की कोशिश की तो उसने अपने शरीर की पसलियों में से एक हड्डी निकाली और उससे मुझे

मारा। उसने मुझे बहुत ही बुरे घाव दिये। इतने बुरे कि मेरे लिये वहॉ से भाग निकलने के अलावा और कोई चारा न रहा।

जब मैं वहॉ से भाग रहा था तो विदाई के समय की भेंट के रूप में उसने कुछ और गोलियॉ मुझे मारीं। नहीं गीदड़ भाई नहीं, मैं मान गया उसको। वह सचमुच में मुझसे ज़्यादा ताकतवर है।"

15 सीधा कुत्ता और चालाक लोमड़ा[32]

शेर की बेवकूफी की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के इथियोपिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक कुत्ता और एक लोमड़ा शिकार करने के लिये निकले। कुत्ता तो सीधा था पर लोमड़ा बहुत चालाक था। रास्ते में बारिश शुरू हो गयी तो दोनों भीगने से बचने के लिये एक गुफा में घुस गये।

वह गुफा इत्तफाक से एक शेर की थी सो इन दोनों के पीछे पीछे वह शेर भी बारिश से बचने के लिये अपनी गुफा में आ पहुॅचा।

शेर को देख कर कुत्ते की तो सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। वह डर के मारे कॉपने लगा और उसके मुॅह से घुटी घुटी सी आवाजें निकलने लगीं।

पर लोमड़ा बहुत चालाक था। उसने तुरन्त ही कुछ सोचा और कुत्ते को ज़ोर से पुकारा और बोला — "ए कुत्ते, यह अपना भौंकना बन्द करो और जा कर बाहर से उस बकरे के मॉस का एक टुकड़ा ले कर आओ जो हमने पास में ही छोड़ा था।"

[32] An Innocent Dog and the Cunning Fox – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, East Africa.

कुत्ता सीधा तो जरूर था पर थोड़ा समझदार भी था। वह तुरन्त समझ गया कि उसे क्या करना है। उसने तुरन्त ही लोमड़े की बात मानी और गुफा के बाहर की तरफ भाग लिया।

इधर शेर कुछ सन्तुष्ट सा दिखायी दे रहा था क्योंकि उसे इस बारिश में भी घर बैठे खाना मिल रहा था। जब कुछ देर के बाद भी कुत्ता वापस नहीं आया तो लोमड़ा कुछ परेशान सा दिखायी।

शेर ने पूछा — "लोमड़े भाई, क्या बात है, परेशान क्यों हो?"

लोमड़ा बोला — "यह हमारा कुत्ता जो है न, बस बहुत ही डरपोक और आलसी किस्म का है। मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है और एक यह कुत्ता है जो अभी तक उस बकरे का मॉस ले कर ही नहीं आया। मैं सोचता हूँ कि मैं खुद ही जा कर वह मॉस ले कर आता हूँ ताकि हम दोनों पेट भर कर खाना तो खा सकें।"

शेर बोला — "हॉ भाई, भूख तो मुझे भी लगी है। अगर तुम्हारा कुत्ता ऐसा है तो ठीक है लोमड़े भाई तुम्हीं जाओ और जल्दी से मॉस ले कर लौटो। मैं तब तक तुम्हारा यहीं इन्तजार करता हूँ।"

"जो हुक्म" कह कर लोमड़ा भी गुफा से जल्दी जल्दी भाग गया और वह तो फिर यह जा और वह जा।

इस तरह लोमड़े ने शेर से अपनी और कुत्ते दोनों की जान बचायी। उधर शेर अभी भी अपनी गुफा में लोमड़े और कुत्ते दोनों का मॉस लाने का इन्तजार कर रहा है।

16 अक्लमन्द भेड़िया[33]

एक समय की बात है कि इथियोपिया के एक जंगल में एक शेर रहता था। समय गुजरता गया तो वह शेर बूढ़ा होता गया और साथ में कमजोर भी होता गया।

अब उसको शिकार करने में कठिनाई होने लगी। धीरे धीरे उसकी यह कठिनाई इतनी बढ़ी कि अब उसको खाना खाये बिना कई कई दिन गुजर जाते।

इस भूख से बचने के लिये एक दिन उसके दिमाग में एक तरकीब आयी जिससे उसको घर बैठे खाना मिल सकता था। उसने चारों तरफ यह अफवाह उड़ा दी कि शेर बहुत बीमार है और वह अपने बिस्तर से उठ भी नहीं सकता।

यह खबर तो बहुत बड़ी खबर थी। अब क्या था जंगल के सभी जानवर निडर हो कर शेर को देखने के लिये आने लगे। इधर जो कोई भी जानवर शेर को देखने जाता, शेर मौका देख कर उसको मार कर खा जाता।

एक सुबह एक भेड़िया भी बीमार शेर को देखने के लिए गया। पर वह गुफा के अन्दर नहीं गया। उसने शेर जी को भी बाहर से ही सलाम करके उनकी कुशल पूछी।

[33] Wise Wolf – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, East Africa.

शेर बीमार की सी आवाज में बोला "अरे कौन है भाई? क्या तुम भेड़िये हो? आओ भाई अन्दर आ जाओ। मेरी तबियत तो बहुत दिनों से खराब चल रही है।"

भेड़िये ने कहा — "नहीं शेर जी, मैं अन्दर नहीं आ पाऊँगा। आप मुझे वहीं से अपना हाल बता दें।"

शेर ने कई बार उससे पूछा भी कि वह अन्दर क्यों नहीं आ पायेगा और कई बार उसे प्रेम से अन्दर बुलाने की कोशिश भी की परन्तु भेड़िया अन्दर नहीं गया।

उसको शेर की नीयत पर शक हो चुका था इसलिए वह शेर के कई बार बुलाने पर भी गुफा के अन्दर नहीं गया और इस तरह उसने अपनी जान बचायी।

क्या तुमको मालूम है कि भेड़िये ने अपनी जान कैसे बचायी?

भेड़िये ने देखा कि शेर की गुफा में जानवरों के जाते हुए पैरों के निशान तो थे पर बाहर आते पैरों के किसी के निशान नहीं थे। बस वह समझ गया कि जो भी जानवर अन्दर गया वह बाहर नहीं आया।

इसलिये अगर वह भी गुफा के अन्दर गया तो वह भी बाहर नहीं आ पायेगा। इसलिए वह अन्दर गया ही नहीं और इस तरह उसने अपनी जान बचायी।

17 कुत्ता और शेर[34]

एक बार की बात है कि एक दिन एक कुत्ता खाने की खोज में जंगल तक पहुँच गया। सामने बड़ा सा जंगल देख कर वह घबरा गया पर क्योंकि वह भूखा था इसलिये वह जल्दी जल्दी खाना खोजने लगा।

कुछ ही देर में उसको एक शेर की दहाड़ सुनायी दी। वह डर गया। कुत्ते की सॉस रुक गयी उसने सोचा आज तो मैं गया। अभी वह यह सोच ही रहा था कि वह क्या करे कि इतने में उसको सामने पड़ीं कुछ सूखी हड्डियॉ दिखायी दीं।

उनको देख कर उसके दिमाग में कुछ आया और उसने उसमें से एक हड्डी उठायी और शेर की ओर पीठ कर के बैठ कर उसे चबाने लगा।

जब शेर काफी पास आ गया तो वह ज़ोर ज़ोर से बोला — "वाह शेर का मॉस खाने का तो मजा ही कुछ और है। एक शेर और मिल जाये तो बस पूरी दावत ही हो जाये।"

यह सुन कर शेर तो सकते में आ गया। उसने सोचा "अरे यह कुत्ता तो शेर का शिकार करता है जान बचा कर भाग लो वरना यह तो मुझे भी खा जायेगा।" और शेर वहॉ से उलटे पैरों चम्पत हो लिया।

[34] Dog and Lion – a folktale from Nigeria, Western Africa

पेड़ पर बैठा एक बन्दर यह सब तमाशा देख रहा था। उसने सोचा यह मौका तो बहुत अच्छा है। मैं शेर को जा कर इस कुत्ते की सारी कहानी बता देता हूँ। इससे शेर से मेरी दोस्ती हो जायेगी और फिर मेरा सारी ज़िन्दगी का खतरा दूर हो जायेगा।

वह फटाफट शेर के पीछे भागा। कुत्ते ने बन्दर को शेर के पीछे भागते हुए देखा तो तुरन्त समझ गया कि जरूर कहीं कोई गड़बड़ है। उधर बन्दर ने शेर को सब बता दिया कि उस कुत्ते ने उसे कैसे बेवकूफ़ बनाया है।

यह सुन कर शेर ज़ोर से दहाड़ा और बोला — "चल मेरे साथ मैं अभी उसकी लीला खत्म करता हूँ।" यह कह कर उसने बन्दर को अपनी पीठ पर बैठाया और कुत्ते की ओर लपका।

बच्चो, ज़रा सोचो तो कुत्ते ने फिर क्या किया होगा?

कुत्ते ने शेर को आते देखा तो एक बार फिर उसकी तरफ पीठ कर के बैठ गया और ज़ोर ज़ोर से बोलने लगा — "उफ़, यह बन्दर भी बहुत ही आलसी है। इस बन्दर को भेजे हुए मुझे एक घन्टा हो गया अभी तक उससे एक शेर नहीं फॉसा जा सका। ऐसा कैसे चलेगा।"

यह सुनते ही शेर ने बन्दर को अपनी पीठ पर से उतार कर फेंक दिया और वह तो यह जा और वह जा। इस तरह कुत्ते ने दो बार शेर से अपनी जान बचायी।

18 अक्लमन्द कुत्ता[35]

एक बार जानवरों के देश में बहुत सारी लड़ाइयॉ हुईं। लगता था उस देश में जैसे किसी का शाप काम कर रहा हो। सो जानवरों के राजा ने सलाह के लिये एक मीटिंग बुलायी।

सभी के ख्याल में कहीं कोई गड़बड़ थी जिसको ठीक करना जरूरी था ताकि वहॉ इतनी लड़ाइयॉ न हों। पर वह गड़बड़ कहॉ थी और उसको कैसे ठीक किया जाये इस बारे में काफी देर तक बातें करने के बावजूद वे किसी नतीजे पर नहीं पहुॅच पा रहे थे।

तभी किसी ने कहा कि ये सब परेशानियॉ उनके बचपन से शुरू हुईं थीं इसलिये हो सकता है कि इस सबके लिये उनकी मॉऐं जिम्मेदार हों। क्योंकि जब वे उनके लिये और उनके और कामों के लिये जिम्मेदार थीं तो वे इस काम के लिये भी जिम्मेदार थीं।

यह बात सूखे के मौसम में जंगली आग की तरह फैल गयी। वे सभी कहने लगे कि क्योंकि यह सब हमारी मॉओं का काम है इसलिये हमको उन्हें मार देना चाहिये। हर जानवर अपनी अपनी मॉ को मारेगा तभी कुछ हो सकता है।

---

[35] The Wise Dog – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa
[My Note: This story is given here as it was given in the book by Fuja Abayomi in his book "Fourteen Hundred Cowries but I found it with a varied title and different versions on Internet too. At one of the Web Sites its title is "A Dog Who Sent His Mother to Heaven".]

उन सबमें एक जानवर ऐसा भी था जिसको यह बात कुछ जॅची नहीं। और वह था कुत्ता। यह कुत्ता अपनी मॉ को बहुत प्यार करता था और उसकी बहुत इज़्ज़त करता था। वह अक्लमन्द भी बहुत था और ऐसी बेवकूफी वाली बातों से भटकता नहीं था।

पर इस समय उसको यह भी पता था कि इस समय जानवरों के खिलाफ जाने से कोई फायदा नहीं है क्योंकि इस समय उसकी कोई सुनने वाला नहीं है इसलिये उसने चुपचाप इस बात को मान लिया।

इस चक्कर में बहुत सारी माऐं मारी गयीं। कुत्ते ने इस डर से कि अगर उसने अपनी मॉ को कहीं छिपा दिया तो जानवर उसे ढूँढ निकालेंगे और फिर उन दोनों को मार देंगे उसने अपनी मॉ को स्वर्ग भेज दिया।

कुत्ते की मॉ अपने बेटे के प्यार की कर्जदार थी सो उसने स्वर्ग जाते समय अपने बेटे से कहा— "बेटे तुम किसी भी मुश्किल में हो तो मुझे बुला लेना मैं आ जाऊॅगी।" फिर उसने उसको एक छोटा सा गीत सिखाया जो उसको बुलाने के लिये उसे गाना था।

कुछ समय बाद ही जानवरों को पता चल गया कि उनका अपनी मॉओं को मारना कुछ भी नहीं कर सका क्योंकि उसके तुरन्त बाद ही और बड़ा भारी अकाल पड़ गया। कुॅए सूख गये, मॉस भी नहीं मिलता था, फसल भी नहीं हुई और इस वजह से और बहुत सारे जानवर मर गये।

कुत्ता यह सब देख कर बहुत दुखी हुआ। एक दिन उसको अपनी माँ की याद आयी और याद आया उसको बुलाने वाला गीत।

वह एक अकेली सी जगह पहुँचा और उसने वह गीत गाया —

माँ माँ अपनी रस्सी नीचे डालो अपने बेटे को बुलाओ और उसे खाना खिलाओ
आज उसे तुम्हारी सहायता की जरूरत है, माँ ओ माँ

तुरन्त ही एक लम्बी सी रस्सी स्वर्ग से नीचे जमीन पर गिर पड़ी। उसके एक सिरे पर एक छोटी सी कुर्सी थी। कुत्ता उस कुर्सी पर बैठ गया और रस्सी ऊपर जाने लगी।

जब वह ऊपर पहुँच गया तो उसकी माँ ने उसे पेट भर बढ़िया बढ़िया खाना खिलाया। खाना खा कर शाम को वह उसी रस्सी के सहारे नीचे उतर आया।

जब तक उस देश में अकाल रहा कुत्ता अपनी माँ के पास जाता रहा और खाना खा कर वापस आता रहा।

एक दिन रास्ते में उसको उसका दोस्त कछुआ मिल गया तो कछुआ तो उसको खुश और तन्दुरुस्त देख कर हैरान रह गया।

उसने उससे पूछ ही लिया — "कुत्ते भाई, इन मुश्किलों के दिनों में भी तुम क्या खाते हो जो इतने खुश और तन्दुरुस्त हो? यह अकाल तो हम लोगों की ज़िन्दगी का बड़ा भारी अकाल है।

हम सभी लोग तो खाने की कमी की वजह से दुबले हो रहे हैं और तुम हो कि मोटे हुए जा रहे हो। दोस्त मुझे भी अपनी इस तन्दुरुस्ती का राज़ बताओ न।"

कुत्ता यह सुन कर डरा कि कहीं ऐसा न हो कि वह दूसरे जानवरों के सामने उससे ऐसी बात फिर कहे सो उसने सोचा कि वह उसको अपना भेद बता देता है।

वह बोला — "कछुए भाई, अगर तुम मुझसे यह वायदा करो कि तुम मेरी यह बात किसी दूसरे से नहीं कहोगे तो मैं तुमको अपना यह भेद बता देता हूँ।"

ऐसे मौके पर जैसे सब कहते हैं ऐसे ही कछुए ने भी कुत्ते से वायदा किया कि वह कुत्ते की बात बाहर बिल्कुल भी नहीं फैलायेगा। कुत्ते ने कहा — "अच्छा तुम सुबह आना तब तुम देखना।"

सुबह तड़के ही कछुआ उस जगह पर पहुँच गया जहॉ कुत्ते ने उसको बुलाया था। कुत्ता थोड़ी देर से आया। आ कर कुत्ते ने अपनी मॉ का बताया गीत गाया।

तुरन्त ही आसमान से एक रस्सी में बॅधी हुई कुर्सी नीचे जमीन पर गिर पड़ी और कुत्ता और कछुआ दोनों उस कुर्सी पर बैठ कर स्वर्ग चल दिये। शाम को खा पी कर वे खुशी खुशी वापस लौट आये।

इस बीच सारे समय कछुआ स्वर्ग की कसम खाता रहा कि वह यह भेद किसी और को नहीं बतायेगा।

कुछ दिनों बाद कछुआ जानवरों के राजा से मिलने गया और बोला — "हे राजा शेर, क्या मैं आपसे अकेले में कुछ बात कर सकता हूँ?"

शेर ने तुरन्त ही अपनी पूँछ हिला कर सब जानवरों को वहाँ से बाहर जाने का इशारा किया।

जब शेर वहाँ अकेला रह गया तो कछुआ सिर झुका कर बोला — "राजा साहब, मैं अभी अभी एक ऐसी जगह से आ रहा हूँ जहाँ अकाल का नाम भी नहीं है और हर कोई पेट भर खाना खा सकता है।"

शेर बोला — "कहाँ है वह जगह कछुए भाई? मैंने बहुत दिनों से पेट भर खाना नहीं खाया है और इसी वजह से मुझे इस शापित देश से कुछ नफरत सी होने लगी है।"

कछुआ बोला — "अगर आप अपने राज्य में मुझे कोई ऊँचा ओहदा दें और मेरी सुरक्षा का वायदा करें तो मैं आपको वहाँ जाने का रास्ता बता सकता हूँ।"

शेर बोला — "इसमें तो कोई बात ही नहीं है कछुए भाई। पर तुमको अपना वायदा पूरा करना पड़ेगा। तुम तुरन्त ही हम लोगों के वहाँ जाने का इन्तजाम करो और देखो यह बात किसी और को नहीं बताना।"

कछुए ने शेर को सुबह एक जगह आने को कहा और वहॉ से चला गया।

कुत्ते को तो इन सब बातों का पता ही नहीं था। अगली सुबह कछुए को शेर का ज़्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ा। उसने जल्दी ही उसको आते देखा।

परन्तु उसको देखते ही उसका पारा आसमान पर चढ़ गया क्योंकि शेर वहॉ अकेला नहीं आया था। वह साथ में अपनी पत्नी बच्चों और अपने बहुत सारे दोस्तों को भी लाया था। बड़ी भीड़ थी उसके साथ।

कछुआ मन ही मन बोला — "बस यही तो मैं नहीं चाहता था। पर अब तो कुछ हो नहीं सकता। अब अगर मैं केवल राजा को ऊपर ले जाता हूँ तो भी और जानवर तो उसके गवाह रहेंगे ही।"

जब राजा कछुए के पास आ गया तो कछुए ने राजा का और उसके साथ आये सब जानवरों का स्वागत किया और फिर उसने कुत्ते वाला गीत गाया और रस्सी और कुर्सी आसमान से नीचे आ गिरी।

राजा शेर ने पूछा — "इस एक कुर्सी पर हम सब कैसे बैठेंगे?"

कछुआ जल्दी से बोला — "जी शेर जी यह तो आप ठीक कह रहे हैं। हम सब इस एक कुर्सी पर नहीं बैठ सकते। इस पर तो केवल हम दोनों के लिये ही जगह है। मुझे दुख है कि बाकी सबको यहीं नीचे रहना पड़ेगा।"

शेर बोला — "ठीक है।"

और उछल कर वह उस कुर्सी पर बैठ गया। शेर के बैठने के बाद कछुआ बड़ी मुश्किल से उस कुर्सी पर बैठ सका। पर शेर की पत्नी बच्चे और दोस्त तो कुछ और ही सोच रहे थे।

जब शेर और कछुआ ऊपर जाने लगे तो कई जानवरों ने उस रस्सी पर लटकने की कोशिश की। और बहुत सारे तो लटक भी गये। पर इसके बाद वहॉ क्या हुआ इसको तो केवल सोचा ही जा सकता है।

राजा शेर सबको डॉट रहा था पर कोई उसकी सुन ही नहीं रहा था। किसी ने रस्सी पकड़ रखी थी, तो कोई कछुए के ऊपर बैठा था, किसी ने शेर की पूँछ पकड़ रखी थी और कुछ तो ऊपर वाले जानवरों के हाथ पैर या पूँछ पकड़े लटक रहे थे।

सो गुस्से में भरे चीखते चिल्लाते जानवरों की एक छोटी सी भीड़ ऊपर आसमान की तरफ चली।

कुत्ते की मॉ ने जब शोर सुना तो उसको लगा कुछ गड़बड़ है। उसने नीचे झॉक कर देखा तो उसने देखा कि अरे ये तो बहुत सारे जानवर रस्सी से लटके ऊपर चले आ रहे हैं।

उसको लगा वे सब उसको मारने के लिये आ रहे हैं।

बस तुरन्त ही उसने एक चाकू लिया और जब वे सब आधे रास्ते में पहुँचे तो उसने रस्सी काट दी। बड़े ज़ोर की एक आवाज

हुई और सारे के सारे जानवर धम्म से नीचे आ गिरे। कछुआ तो अपने खोल की वजह से बच गया पर बाकी सारे जानवर मर गये।

पास के गॉव के जानवरों ने इतनी ज़ोर की धम्म की आवाज सुनी तो वे देखने आये कि मामला क्या है। उनको जल्दी ही पता चल गया कि कछुए के अलावा सभी जानवर मर चुके थे। उन्होंने राजा शेर के शरीर को भी पहचान लिया।

कछुए को राजा के मारने का जवाब देने के लिये अदालत में जाना पड़ा।

अदालत में उसने कुत्ते की मॉ और उसकी रस्सी की पूरी कहानी सुना दी। अब कोई जानवर उसकी बात का विश्वास ही नहीं कर रहा था सो उसको फिर उसी जगह पर लाया गया जहॉ शेर मरा था और इतने सारे जानवरों को मारने के जुर्म में उसका सिर काट दिया गया।

उधर कुत्ता जब उस जगह पर पहुॅचा और उसने ऊपर जाने के लिये गीत गाया तो कोई रस्सी नीचे नहीं गिरी क्योंकि वह रस्सी तो उसकी मॉ ने चाकू से काट दी थी और वह बची हुई आधी रस्सी तो केवल आधे रास्ते तक ही आती थी सो कुत्ता फिर कभी स्वर्ग नहीं जा सका।

अकाल चलता रहा तो कुत्ता आदमियों के देश में चला गया और वहीं उनके दिये गये खाने पर गुजारा करने लगा। तबसे कुत्ता अपना गुजारा आदमी के दिये खाने पर ही करता है।

बहुत सारे आदमियों और जानवरों ने इस बात को जानने में अपनी पूरी ज़िन्दगी खर्च कर दी कि कुत्ते ने अपनी मॉ को स्वर्ग कैसे भेजा था और अकाल खत्म होने के बाद फिर वह नीचे कैसे आयी पर कोई भी इस बात का ठीक से पता नहीं लगा सका।

कुछ का कहना है कि और दूसरे जानवरों की तरह उसने भी अपनी मॉ को मारा था। कुछ का कहना है कि उसकी प्रार्थना पर किसी ने स्वर्ग से रस्सी लटकायी थी और उसी से वह ऊपर गयी थी। पर यह भेद अभी तक भेद ही है।

तुमको अगर यह भेद पता चल जाये तो हमें जरूर लिखना।

19 मगर की बदमाशी[36]

यह तब की बात है जब जानवर भी बात किया करते थे। मगर[37] पानी वाले सब जानवरों का जाना माना राजा था और अगर कोई शक्ल से जॉचे तो वह अभी भी है।

पर उन दिनों उसका एक खास काम हुआ करता था और वह था पानी के जानवरों की देखभाल करना। और जब एक साल बहुत सूखा पड़ा और उस नदी का पानी सूख गया जिसमें वे रहते थे और पानी का मिलना व्हुत मुश्किल हो गया तो उन लोगों को यह सोचना पड़ा कि वे एक दूसरी नदी जो उस नदी के पास ही थी उसमें चले जायें।

सो सबसे पहले उसने औटर को देखने के लिये भेजा। वह दो दिन के लिये बाहर रहा और यह खबर ले कर आया कि उस नदी में अभी भी बहुत पानी है और कई सालों तक उसके सूखने की कोई उम्मीद नहीं है।

जब उसने यह पक्की खबर दे दी तो मगर ने एक ऐलीगेटर[38] और एक कछुए को बुलाया और उनसे कहा — "मैं यह चाहता हूॅ

---

[36] Crocodile's Treason – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft18.htm

[37] Translated for the word "Crocodile"

[38] Alligator is a crocodile-like animal. In Hindi both are called Magar, so to differentiate them we will use the word Alligator throughout the story.

कि आज की रात तुम दोनों मेरा एक सन्देश ले कर शेर के पास जाओ।

सो तुम लोग तैयार हो जाओ। क्योंकि मैदान सब सूखे पड़े हैं इसलिये तुमको बिना पानी के जाने में शायद कई दिन लग जायें पर यह काम जरूरी है। हमको शेर और उसकी जनता से दोस्ती कर के रखनी चाहिये नहीं तो इस साल हम बहुत सारे लोग मारे जायेंगे।

मैदान के किसी भी जानवर से परशान हुए बिना हमें खास कर के बोअर का खेत[39] जो रास्ते में पड़ता है और मैदान को पार करने के लिये दूसरी नदी तक जाने के लिये उसकी सहायता की सख्त जरूरत है। जैसा कि तुम सभी लोग जानते ही हो एक मछली जमीन पर कभी कभी कितनी बेसहारा हो जाती है।"

हालॉकि इस सूखे के मौसम में उन दोनों को शेर तक पहुॅचने में बहुत मुश्किल हुई पर वे किसी तरह से उसके पास पहुॅच गये और जा कर उसको मगर का सन्देश दे दिया।

जब शेर ने मगर का सन्देश पढ़ा तो उसने अपने मन में सोचा "यह सब क्या हो रहा है। पहले मुझे गीदड़ से सलाह लेनी चाहिये।"

पर मगर के जो दूत उसके पास आये थे उनसे उसने कहा "कल शाम को मैं तुम्हारी बतायी जगह पर यानी बड़े विलो के पेड़ के नीचे और पानी के

[39] Boer's Farm

बड़े कुँए के पास अपने सलाहकारों के साथ पहुँच जाऊँगा।" यहॉ मगर का अपना दफ्तर था।

जब कछुआ और ऐलीगेटर शेर के पास से वापस आये तो जिस तरीके से यह मामला सिलट रहा था उससे मगर अपने आपसे बहुत खुश था।

उसने औटर और कुछ और जानवरों से वहॉ मौजूद रहने के लिये कहा और उन्हें हुक्म दिया कि वे उस विलो के पेड़ के नीचे मेहमानों के लिये काफी मछलियॉ और दूसरा खाना ले कर तैयार रहें।

उस शाम जब शाम ढलने लगी शेर अपने साथ भेड़िया गीदड़ बबून और कुछ और खास जानवरों को साथ ले कर वहॉ आया। वहॉ मगर और दूसरे जानवरों ने उन सबका खुले दिल से स्वागत किया। मगर जानवरों की उस मीटिंग में बहुत खुश दिखायी दे रहा था। इतना खुश कि उसकी ऑखों में खुशी का एक ऑसू[40] आ गया जिसे उसने रेत में गिरा दिया जहॉ जा कर वह सूख गया।

जब दूसरे जानवरों ने मछली अच्छी तरह से खा ली तब मगर ने उनको अपने हालात खोल कर बताये और फिर अपना प्लान खोल कर बताया। वह तो सब जानवरों में मेल और दोस्ती चाहता था

[40] "Crocodile Tears" is a famous idiom in the sense "an insincere show of sympathy and sadness". Crocodiles were once thought to weep large tears before they ate their victims.

क्योंकि इससे न केवल वे ही एक दूसरे को नष्ट करते थे बल्कि बोअर भी उनको मारता था।

बोअर जहॉ से नदी निकलती थी वहीं रहता था और उसके पास भाप के तीन पम्प थे जिनसे वह अपनी जमीन को पानी देता था। पानी रोज ब रोज कम होता जा रहा था। इससे ज़्यादा यह भी था कि वह उनके इस बुरे हालात का फायदा उठा रहा था। क्योंकि इन हालात में वे सब उथले पानी में रहते थे और एक के बाद एक मरते जाते थे।

शेर भी इस मामले में शान्ति लाने के लिये राजी था तो इस मौके का फायदा उठाने में उसकी भी शान बढ़ती थी सो उसने भी इन शान्ति चाहने वालों का साथ देना स्वीकार किया और जो कुछ उसके हिस्से का काम था वह करने को तैयार हो गया।

उसका काम था कि इन पानी वाले जानवरों को सूखी जमीन से बोअर के खेत से हो कर बड़े बड़े तालाबों के पास तक सुरक्षित रूप से ले आये।

गीदड़ बोला — "और हमारा इसमे क्या फायदा होगा?"

मगर बोला — "हम जो शान्ति बना कर रखेंगे वही हम दोनों का सबसे बड़ा फायदा है। हम लोग एक दूसरे को मारेंगे नहीं। जब भी तुम्हारी पानी पीने की इच्छा होगी और तुम लोग यहॉ पानी पीने आओगे तो तुम शान्ति से पानी पी सकोगे। उसमें तुम्हें कभी डर

नहीं लगेगा कि हममें से तुम्हें कोई तुम्हें तुम्हारी नाक से पकड़ लेगा। और ऐसा ही दूसरे जानवरों के साथ भी होगा।

और तुम्हारी तरफ से हम हाथी से निडर रहेंगे जिसकी कि यह आदत कि जब भी कभी उसे मौका मिलता है तो वह हम लोगों को अपनी सूँड़ से पकड़ कर किसी भी पेड़ की शाख पर उछाल देता है और हमको वहॉ लटका छोड़ देता है।"

यह सुन कर शेर और गीदड़ आपस में एक दूसरे से सलाह करने के लिये एक तरफ को चले गये। वापस आ कर शेर यह जानना चाहता था कि उसको मगर की तरफ से किस तरह की सुरक्षा मिलेगी।

मगर तुरन्त बोला — "मैं अपनी बात का पक्का हूँ।" और उसने अपनी ईमानदारी में कुछ और बड़े बड़े ऑसू बहा कर रेत में मिला दिये।

बबून बोला — "जहॉ तक मैं समझता हूँ यह सब ठीक है और ईमानदारी का मामला है। मेरा कहना यह है कि एक दूसरे के लिये गड्ढे खोदना कोई अच्छी बात नहीं है। यह मेरा अपना अनुभव है कि इस तरह के दोस्ती और शान्ति के समझौते[41] से उसकी अपनी जाति को जरूर फायदा होगा।

और इससे भी ज़्यादा बड़ी बात तो यह है कि उन्हें यह भी सोचना चाहिये कि खत्म होते हुए पानी का इस्तेमाल भी ठीक से

[41] Translated for the word "Contract"

करें। क्योंकि अच्छे समय में भी यह कोई खुशी की बात नहीं है कि आप अपना पानी साथ साथ लिये घूमें।

इसलिये मैं राजा शेर को यह सलाह देना चाहूँगा कि यह ज़्यादा अच्छा रहेगा अगर सब कुछ लिख लिया जाये ताकि अगर कभी इसकी जरूरत पड़े तो पछतावा न हो।"

गीदड़ इस समझौते को बिल्कुल सुनना नहीं चाहता था। उसको यह बिल्कुल भी विश्वास नहीं था कि यह समझौता मैदान के जानवरों के भले में होगा पर भेड़िया जिसने मछलियॉ पेट भर कर खायी थीं कुछ ज़रा ज़्यादा ही शान्तिप्रिय नजर आ रहा था। उसने शेर को फिर से यह समझौता बन्द करने[42] की सलाह दी।

जब शेर ने अपने सब सलाहकारों की सलाह ले ली और मगर की तरफ के जानवरों की प्रार्थना सुन ली तब उसने एक भाषण दिया जिसमें उसने कहा कि यह देखते हुए कि मगर और उसकी जनता इस समय बड़ी परेशानी में है वह मगर का समझौता मानने के लिये तैयार है।

उसी समय एक समझौता लिखा गया और यह तय पाया गया कि आधी रात से पहले मगर के लोग अपनी यात्रा शुरू करेंगे। मगर के दूत पानी सब जगह तैर गये और उन्होंने अपने लोगों को इस बात की सूचना दे दी कि उनकी यात्रा आधी रात से पहले ही शुरू हो जायेगी।

[42] Means "to close the contract" or to finalize the contract.

मेंढकों ने टर्राना शुरू कर दिया मकड़ियों ने पानी की लम्बी घास में चिल्लाना शुरू कर दिया। जल्दी ही सारे जानवर विलो के पेड़ के नीचे आ कर इकट्ठे होने लगे।

इस बीच शेर ने भी अपने कुछ सवारों को इधर उधर भेज दिया ताकि वे कुछ जानवरों को पानी के जानवरों के साथ जाने के लिये इकट्ठा कर सकें। आधी रात तक सब उस विलो के पेड़ के नीचे चॉदनी में आ कर इकट्ठे हो गये।

यह यात्रा शेर और गीदड़ की देखभाल में हो रही थी। गीदड़ इधर उधर देखता हुआ आगे आगे जाने वाला था।

जब गीदड़ को मौका मिला तो उसने शेर को एक तरफ ले जा कर उससे कहा — "देखिये शेर जी। मैं इस समझौते पर ज़रा सा भी विश्वास नहीं करता। मैं आपसे सीधी बात कहना चाहता हूॅ कि यह ठीक है कि मैं यह रास्ता बनाता हुआ जाऊॅगा।

और यह भी ठीक है कि मैं आपके लिये देखभाल करता हुआ भी जाऊॅगा जब तक कि आप तालाब तक न पहुॅच जायें पर मैं वहॉ पहुॅच कर आपका इन्तजार नहीं करूॅगा।"

हाथी को रक्षा के लिये आगे आगे चलना था क्योंकि वह इतनी बेआवाज चलता था और इतना अच्छा सूॅघता और सुनता था। उसके बाद शेर को कुछ जानवरों के साथ चलना था। उसके पीछे मगर को अपने लोगों को ले कर चलना था जो दोनों तरफ से मैदान

के जानवरों से सुरक्षित होते। और भेड़िये को हुक्म था कि वह पीछे से रक्षा करता चले।

जब इस सबका इन्तजाम हो रहा था तो मगर अपनी बदमाशी की तैयारी कर रहा था। उसने पीले सॉप को एक तरफ बुलाया और उससे कहा — "इन जानवरों का हमारे साथ रहना हमारे लिये बहुत फायदेमन्द है जो हमारे साथ रोज घूमते फिरते रहते हैं और आगे भी इसी तरह से घूमते फिरते रहेंगे अगर ये किसी तरह से बोअर के हाथ लग जायें तो... ।

अब तुम मेरी बात सुनो तुम हमारे पीछे पीछे ऐसे चलो कि किसी को इस बात का पता न चले और जब तुम मेरे चिल्लाने की आवाज सुनो तब तुम जानना कि हम लोग सुरक्षित रूप से तालाब पर पहुँच गये हैं।

उस समय तुम बोअर के कुत्तों को जितना ज़्यादा से ज़्यादा तंग करना फिर बाकी हम देख लेंगे।"

इस तरह से यात्रा शुरू हुई। ऐसे समय में धीरे चलना बहुत जरूरी था क्योंकि बहुत सारे पानी के जानवर धरती पर चलने के आदी नहीं थे। पर उन्होंने बोअर का खेत सुरक्षित रूप से पार कर लिया। सुबह दिन निकलने पर वे सब सुरक्षित रूप से तालाब पर पहुँच गये थे।

वहॉ पहुँच कर अधिकतर जानवर अचानक ही गहरे पानी में जा कर गायब हो गये। मगर भी इसी तरह से पानी में जाने की तैयारी

में था। उसने ऑखों में ऑसू भर कर शेर से कहा कि वह उसकी इस सहायता के लिये बहुत बहुत ऋणी है और बहुत बहुत धन्यवाद देता है।

इस खुशी को दिखाने के लिये उसने कई बार चिल्लाने की आवाज भी निकाली। फिर वह इतनी ज़ोर से भी चिल्लाया कि पहाड़ों से आवाज गूॅज कर वापस आ गयी।

फिर उसने अपने लोगों की तरफ से उसे धन्यवाद दिया और यह बताते हुए कि इस शान्ति के समझौते से दोनों तरफ के जानवरों को कितना फायदा होगा जानबूझ कर अपने भाषण को लम्बा बना दिया।

शेर भी उससे बस गुड डे ही कह कर वहॉ से जाने वाला हो रहा था कि पहली गोली की आवाज सुनायी पड़ी और पहले हाथी और फिर कई और जानवर गिरते नजर आये।

तालाब के दूसरी तरफ से गीदड़ चिल्लाया — "मैंने तो तुम लोगों से पहले ही कहा था कि मुझे इस समझौते पर कतई विश्वास नहीं है। तुम लोग इस मगर के ऑसुओं पर क्यों पिघल गये।"

इस बीच मगर तो कब का पानी में गायब हो चुका था। उसके पानी में अन्दर जाने के तो बस अब बुलबुले ही दिखायी दे रहे थे।

पर किनारे पर तो जानवरों में आपस में ही बहुत झगड़ा हो रहा था। वह तो जिस तरीके से बोअर के लोगों ने उनको मारा उस

तरीके ने उनको और उकसा दिया। पर फिर भी बहुत सारे जानवर बच गये।

कुछ देर बाद ही ऐसा कहते हैं कि मगर को उसकी इस बात का इनाम मिल गया जब उसको डाइनामइट ले जाता हुआ एक आदमी मिला। आज भी हाथी को जब भी मौका मिलता है तो वह किसी को भी उठा कर पेड़ की ऊॅची ऊॅची शाखों पर बिठा देता है।

20 शेर और बीटिल[43]

शेर और बीटिल की यह लोक कथा अफ्रीका के दक्षिण अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

शेर को अपने ऊपर बहुत घमंड था। वह अपने आपको सारे जानवरों का राजा कहता था। वह जंगल के सैवैना में इधर उधर घूमना बहुत पसन्द करता था।

जब कभी वह कोई जिराफ देखता या फिर कोई हयीना देखता या फिर कोई हाथी या हिरन या बन्दर देखता तो उनको यह दिखाने के लिये कि वह जंगल का एक बहुत ही खास जानवर है कभी वह गरजता तो कभी वह गुर्राता।

जब वह गरज कर बोलता — "मैं तुम्हारा राजा हूॅ।" तो दूसरे जानवर उसको सिर झुकाते।

एक दिन एक बार शेर ने झील के पानी में अपनी परछाईं देखी तो उसके मुॅह से निकला — "अरे वाह मैं तो कितना सुन्दर और कितना भला प्राणी हूॅ।"

कह कर शेर झील के सामने बहुत देर तक पोज़ बना कर खड़ा रहा और अपनी बड़ाई करता रहा। पर वह अपने आपको दूसरे

[43] The Lion and the Beetle – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/384/preview

जानवरों को यह साबित करने के लिये कि वह उनका राजा है और भी बहुत कुछ करना चाह रहा था।

सो शेर ने अपने बहुत बढ़िया वाले कपड़े पहने अपना रत्नों जड़ा ताज पहना अपने सारे सोने और चॉदी के मेडल लगाये। उसके बढ़िया वाले कपड़े बहुत भारी थे पर वे उसको शानदार और ताकतवर दिखा रहे थे।

यह सब पहन कर वह खुशी से चिल्लाया — "मैं तुम्हारा राजा हूॅ। मैं तुम्हारा राजा हूॅ।"

इस तरह शेर ने जंगल के सारे जानवरों यानी अपनी सारी प्रजा को यह सन्देश भेज दिया – जिराफ को हयीना को हाथी को हिरन को बन्दर को।

उसने उन जानवरों को भी यह सन्देश भेज दिया जो जंगल में या जंगल के सैवैना में रहते थे कि वे सब उसके महल के सामने एक मीटिंग के लिये हाजिर हों जहॉ वे सब उसकी उन बढ़िया कपड़ों और गहनों में बड़ाई कर सकें।

सो शेर को देखने के लिये जिराफ आया हयीना आया हाथी आया हिरन आया बन्दर आया।

और भी बहुत सारे जानवर उसको देखने आये – काला सफेद कोट पहनने वाले ज़ीब्रा से ले कर छोटी सी बीटिल[44] भी आयी जो इतनी छोटी थी कि उसको सड़क

[44] Beetles are of many kinds. Here the picture of a very common type of beetle is given.

के किनारे चलना पड़ रहा था ताकि बड़े जानवर उस पर अपना पैर न रख सकें।

"मैं तो बहुत छोटी हूँ बहुत ही छोटी। लोग मुझे देखने के लिये नीचे देखते तो हैं पर फिर भी मुझे देख नहीं पाते।" वह सड़क के किनारे लम्बी घास में हो कर चलती जा रही थी और यह गाती जा रही थी। "मैं तो बहुत छोटी हूँ बहुत ही छोटी। पर अन्दर में इतनी बड़ी हूँ जितना बड़ा कि एक पेड़।"

जब जानवर शेर के महल के सामने इकट्ठा हो गये तो हाथी ने बहुत ज़ोर से बिगुल बजाया और शेर अपनी पूरी शानोशौकत से अपने महल से बाहर निकला। सारे जानवरों ने उसको सिर झुकाया।

वह गरजा — "मैं तुम्हारा राजा हूँ। मैं तुम्हारा राजा हूँ।"

और जानवरों के साथ साथ शेर ने उस छोटी सी बीटिल को भी देखा जो सड़क के किनारे अकेली खड़ी थी। वह अभी भी गा रही थी – "मैं तो बहुत छोटी हूँ बहुत ही छोटी। लोग नीचे की तरफ देखते हैं पर मुझे देख नहीं सकते। पर अन्दर में इतनी बड़ी हूँ जितना बड़ा कि एक पेड़।"

शेर बोला — "ओ बीटिल मेरे सामने झुक।"

बीटिल बोली — "योर मैजेस्टी मुझे मालूम है कि मैं बहुत छोटी हूँ पर अगर आप मुझे बहुत पास से देखें तो आप देखेंगे कि मैं तो पहले से ही झुकी हुई हूँ।"

शेर उसके ऊपर झुका और उस छोटी सी बीटिल को देखा। उसके शानदार कपड़े उसका रत्न जड़ा ताज और उसके बहुत सारे सोने चॉदी के मेडल ने उसको ऊपर से ले कर नीचे तक इतना भारी बना दिया था कि जब वह उस छोटी सी बीटिल के ऊपर झुका तो वह एक गोला सा बन गया।

इससे शेर अपना सन्तुलन खो बैठा और गिर गया। उसका रत्न जड़ा ताज उसके सिर से निकल कर दूर जा पड़ा और शेर वहीं पास के एक कीचड़ के गड्ढे मे गिर गया।

जब जानवरों ने शेर को उस कीचड़ के गड्ढे में डूबे देखा तो सारे जानवर हॅस पड़े। शेर बेचारा उस गड्ढे में से निकलने की कोशिश कर रहा था पर निकल ही नहीं पा रहा था। सो शेर तो सबसे ताकतवर जानवर नहीं था न।

21 शेर जो अपने आपको अपनी मॉ से ज़्यादा अक्लमन्द समझता था[45]

ऐसा कहा जाता है कि एक दिन जब शेर, गुरीखोसिप जो एक अकेला ही आदमी था, बबून, भैंस और दूसरे दोस्तों के साथ कोई खेल खेल रहे थे तो वहॉ बड़े ज़ोर का तूफान और बारिश आ गयी। शेर और गुरीखोसिप ने लड़ना शुरू कर दिया।

शेर बोला — "मैं बारिश के मैदान में भागूँगा।"

गुरीखोसिप बोला — "मैं बारिश के मैदान में भागूँगा।"

अब क्योंकि दोनों में से कोई भी एक दूसरे से हारना नहीं चाहता था गुस्से में आ कर वे दोनों अलग अलग हो गये। जब वे दोनों अलग हो गये तो शेर अपनी मॉ से वे सब बातें कहने गया जो उन दोनों में हुई थीं।

शेर की मॉ ने कहा — "बेटा आदमी जिसका दिमाग उसकी छाती और कन्धों की लाइन में रखा रहता है, जिसके पास छेदने वाले हथियार हैं, जिसके पास सफेद कुत्ते हैं, जो चीते की पूँछ के बाल पहने घूमता है उससे बच कर रहना।"

शेर बोला — "मुझे उनसे भी बचने की क्या जरूरत है जिनको हम जानते हैं।"

---

[45] Lion Who Thought Himself Wiser Than His Mother – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft38.htm

शेरनी बोली — "पर मेरे बेटे तुम्हें उससे सावधान रहना है जिसके पास छेदने वाले हथियार हैं।"

पर शेर ने अपनी माँ की सलाह पर ध्यान नहीं दिया और उसी सुबह जब अभी भी गहरा अँधेरा था वह उस जगह गया जहाँ आदमी रह रहा था और वहाँ जा कर एक झाड़ी में छिप गया।

गुरीखोसिप भी इत्तफाक से उसी समय उसी जगह पहुँच गया। वहाँ पहुँच कर उसने अपने कुत्तों को पानी पीने और नहाने के लिये छोड़ दिया। जब उन्होंने अपना काम खत्म कर लिया तो वे भौंके।

आदमी ने भी पानी पिया। जब उसने पानी पी लिया तो शेर झाड़ी में से बाहर निकला तो आदमी के कुत्तों ने उसे घेर लिये जैसा कि शेरनी ने उसे बताया था।

गुरीखोसिप ने उसे अपने भाले से मारना शुरू किया। जैसे ही उसे महसूस हुआ कि उसको भाले से मारा जा रहा है कुत्तों ने उसको फिर से नीचे गिरा दिया। इस तरह से वह बेहोश हो गया।

जब शेर इस हालत में पड़ा था तो गुरीखोसिप ने अपने कुत्तों से कहा — "अब तुम इसको छोड़ दो ताकि यह अपने घर जा सके और अपनी माँ से कुछ सीख सके।" सो कुत्तों ने उसे छोड़ दिया।

वे सब लोग तो घर चले गये पर शेर वहीं पड़ा रहा। रात तक वह वहीं पड़ा रहा। रात को ही वह अपने घर लौट सका। पर जब वह अपने घर जा रहा था तो उसको बहुत कमजोरी महसूस होने लगी। इससे वह बहुत दुखी हो गया।

वह रोते हुए बोला — "मॉ मुझे उठाओ। नानी मुझे उठाओ। ओह। उफ़। मुझे बहुत दुख है।"

सुबह को उसकी मॉ ने उसके रोने की आवाज सुनी तो वह वहॉ आयी और बोली — "बेटे मैंने तुझसे इसी बारे में तो कहा था कि

उससे बचो जिसके पास छेदने वाले हथियार हैं
जो चीते की पूँछ के बाल पहनता है उससे जिसके पास सफेद कुत्ते हैं
अफसोस ओ कम सुनने वाले के बेटे कच्चा मॉस खाने वाले के बेटे
खुद कच्चा मॉस खाने वाले
शिकार करने की वजह से लाल नाक हुई वाले के बेटे
ओ खून से सनी नाक वाले गड्ढे में से पानी पीने वाली के बेटे
ओ पानी पीने वाले

22 खरगोश और शेर[46]

एक दिन सूँगूरा[47] बड़ा खरगोश खाने की खोज में जंगल में इधर उधर घूम रहा था कि उसने कैलेबाश[48] के एक पेड़ की बड़ी बड़ी डालियों के बीच में से पेड़ के तने के ऊपरी हिस्से में एक बहुत बड़ा छेद देखा। उस छेद में मधुमक्खियॉ रह रही थीं।

यह देख कर वह तुरन्त ही शहर भागा गया ताकि वह किसी को वहॉ से ला सके जो उसकी उन मधुमक्खियों के शहद के छत्ते से शहद निकालने में सहायता कर सके।

जब वह बूकू[49] चूहे के पास से गुजरा तो बूकू चूहे ने उसे अपने घर बुलाया। सूँगूरा बड़ा खरगोश उसके घर चला गया और बैठ गया।

बातों बातों में उसने बूकू चूहे को बताया कि मेरे पिता चल बसे हैं और मेरे लिये एक छत्ते में शहद छोड़ गये हैं। मैं यह चाहता हूँ कि तुम उसको खाने में मेरी सहायता करो।"

---

[46] The Hare and the Lion – a folktale from Zanzibar, Eastern Africa

[47] Soongoora Hare – in Eastern and Southern African countries Hare's name is Soongooraa. Hare is a rabbit like animal but is bigger than it.

[48] Calabash is a dried outer cover of a pumpkin like fruit which can be used to keep dry or wet thongs. See the picture of such a tree above.

[49] Bookoo Rat

बूकू चूहा तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया और तुरन्त ही वह बड़े खरगोश के साथ शहद खाने के लिये चलने के लिये तैयार हो गया सो दोनों शहद खाने चल दिये।

वे लोग जब उस बड़े कैलेबाश के पेड़ के पास पहुॅचे तो सूॅगूरा बड़े खरगोश ने बूकू चूहे को मधुमक्खी के छत्ते को दिखा कर उसकी तरफ इशारा किया और उससे कहा "देखो वह रहा शहद। चलो पेड़ पर चढ़ते हैं।"

दोनों ने कुछ भूसा लिया और उस छत्ते की तरफ चढ़ने लगे। छत्ते के पास पहुॅच कर उन्होंने वह भूसा जलाया। उसके धुॅए से वे मधुमक्खियॉ भाग गयीं। उन्होंने फिर आग बुझा दी और शहद खाने बैठे।

जब वे शहद खा रहे थे तो ज़रा सोचो कौन आ गया? सिम्बा शेर[50]। और भला कौन आ सकता था? क्योंकि वह पेड़ और उसमें लगा शहद तो सिम्बा शेर का ही था न। सिम्बा शेर ने ऊपर देखा और उनको कुछ खाते देखा तो पूछा — "तुम लोग कौन हो?"

सूॅगूरा बड़ा खरगोश बूकू चूहे के कान में फुसफुसाया — "चुप रहना। यह बूढ़ा बहुत ही खब्ती है।"

सिम्बा शेर को जब कुछ देर तक कोई जवाब नहीं मिला तो वह फिर चिल्लाया — "तुम कौन हो भाई बोलते क्यों नहीं? मैं कहता हूॅ बोलते क्यों नहीं कि तुम कौन हो?"

[50] Simba Lion – in Eastern and Southern African countries lion's name is Simba

यह सब सुन कर बूकू चूहा तो बहुत डर गया सो वह बोल पड़ा — "यहाँ केवल हम हैं।"

सूँगूरा बड़ा खरगोश बूकू चूहे से बोला — "अब जब तुम बोल ही पड़े हो तो पहले तुम मुझे यहाँ इस भूसे में छिपा दो और फिर शेर को बोलो कि मैं भूसा नीचे फेंक रहा हूँ वह यहाँ से हट जाये। फिर तुम मुझे नीचे फेंक देना तब देखना कि क्या होता है।"

सो बूकू चूहे ने सूँगूरा बड़े खरगोश को तो भूसे में छिपा दिया और फिर सिम्बा शेर से बोला — "यहाँ से हट जाओ मैं यह भूसा नीचे फेंक रहा हूँ। और फिर मैं खुद भी नीचे आता हूँ।"

सो सिम्बा शेर एक तरफ को हट गया और बूकू चूहे ने वह भूसा नीचे फेंक दिया। इस बीच सिम्बा शेर ऊपर ही देखता रहा और खरगोश भूसे के ढेर में से निकल कर भाग गया।

एक दो मिनट तक तो सिम्बा ने इन्तजार किया पर जब बूकू चूहा पेड़ पर से नहीं उतरा तो वह फिर चिल्लाया — "अच्छा अब तुम नीचे आओ।"

चूहे के पास अब कोई ऐसा आदमी नहीं था जिससे वह कुछ सहायता ले सकता सो वह नीचे उतर आया।

जैसे ही चूहा शेर की पहुँच में आया तो शेर ने उसको पकड़ लिया और पूछा — "तुम्हारे साथ ऊपर कौन था?"

बूकू चूहा कॉपते हुए बोला — "क्या बात है? मेरे साथ सूँगूरा बड़ा खरगोश था। जब मैंने उसको नीचे फेंका था तब तुमने उसको नहीं देखा था क्या?"

सिम्बा शेर बोला — "नहीं तो।" और फिर वह तुरन्त ही उस चूहे को खा गया।

चूहे को खा कर सिम्बा शेर ने सूँगूरा बड़े खरगोश को इधर उधर ढूँढने की बहुत कोशिश की पर वह तो उसको कहीं दिखायी ही नहीं दिया सो वह वहॉ से चला गया।

तीन दिन बाद सूँगूरा बड़ा खरगोश कोबे[51] कछुए के पास गया और उससे बोला — "चलो थोड़ा शहद खा कर आते हैं।"

कोबे कछुए ने पूछा किसका शहद है?

सूँगूरा बड़ा खरगोश बोला मेरे पिता का है।

कोबे कछुआ बोला तब तो ठीक है मैं जरूर खाऊँगा और दोनों शहद खाने चल दिये।

जब वे उस कैलेबाश के पेड़ के पास पहुँचे तो अपना अपना भूसा ले कर वे ऊपर चढ़े। भूसे में आग लगायी और उसके धुँए से जब मक्खियॉ भाग गयीं तो वे दोनों शहद खाने बैठे।

तभी सिम्बा शेर वहॉ आ गया और नीचे से चिल्लाया — "ऊपर कौन है?"

[51] Kobay Tortoise

सूँगूरा बड़े खरगोश ने कोबे कछुए से कहा — "चुपचाप बैठे रहना बोलना नहीं।"

पर जब सिम्बा शेर दोबारा चिल्लाया तो कोबे कछुए को कुछ शक हुआ वह बोला — "मैं तो बोलूँगा। तुमने कहा था कि शहद तुम्हारा है पर मेरा शक सही निकला कि यह शहद तुम्हारा नहीं है यह शहद तो सिम्बा शेर का लगता है।"

सो जब सिम्बा शेर ने दोबारा पूछा कि तुम कौन हो तो कोबे कछुए ने जवाब दिया — "यहॉ तो केवल हम हैं।"

शेर बोला — "तो नीचे आओ।"

कोबे कछुआ बोला — "आते हैं।"

जिस दिन से सिम्बा शेर ने बूकू चूहे को पकड़ा था और उसके हाथ से सूँगूरा बड़ा खरगोश निकल कर भाग गया था उस दिन से वह उसी की तलाश में था। उसको आज भी यही शक था कि कोबे कछुए के साथ वह खरगोश भी होगा सो उसने अपने आपसे कहा "आहा, आज मैंने उसे पकड़ लिया।"

अपने आपको पकड़ा जाता देख कर सूँगूरा बड़े खरगोश ने कोबे कछुए से कहा — "तुम मुझे भूसे में लपेट दो और शेर को रास्ते में से हट जाने को बोलो। जब वह रास्ते में से हट जाये तो तुम मुझे नीचे फेंक देना। मैं नीचे तुम्हारा इन्तजार करूँगा। वह तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता यह तुम जानते हो।"

कोबे कछुआ बोला ठीक है। पर जब वह खरगोश को भूसे में लपेट रहा था तो उसने सोचा कि लगता है इस तरीके से यह भाग जाना चाहता है और मुझे शेर का गुस्सा सहन करने के लिये यहाँ छोड़ जाना चाहता है। मैं कुछ ऐसा करता हूँ कि पहले यह पकड़ा जाये।"

कोबे कछुए ने सूँगूरा बड़े खरगोश की एक गठरी बनायी और वह उसे नीचे फेंकते फेंकते बोला — "ओ सिम्बा शेर, लो यह सूँगूरा बड़ा खरगोश आ रहा है।" और यह कहते हुए वह गठरी उसने नीचे फेंक दी।

सिम्बा शेर तो पहले से ही सूँगूरा बड़े खरगोश की तलाश में था सो जैसे ही सूँगूरा बड़ा खरगोश नीचे गिरा सिम्बा शेर ने उसको अपने पंजे में पकड़ लिया और बोला — "अब बताओ मैं तुम्हारा क्या करूँ?"

सूँगूरा बड़ा खरगोश बोला — "देखो सिम्बा शेर, तुम मुझे ऐसे ही खाने की कोशिश मत करना क्योंकि मैं बहुत सख्त हूँ।"

सिम्बा शेर बोला — "तब बताओ मैं तुम्हारा क्या करूँ?"

सूँगूरा बड़ा खरगोश बोला — "मेरे ख्याल में तुमको पहले मुझे मेरी पूँछ से पकड़ कर पहले घुमाना चाहिये और फिर जमीन पर पटकना चाहिये तभी तुम मुझे खा सकोगे।"

शेर उसकी बातों में आ गया। उसने सूँगूरा बड़े खरगोश को उसकी पूँछ से पकड़ा, हवा में घुमाया और उसको जमीन पर मारने ही वाला था कि खरगोश उसके हाथ से फिसल गया और भाग गया। और इस तरह बेचारे सिम्बा शेर ने उसे फिर से खो दिया।

गुस्से और नाउम्मीदी से वह फिर पेड़ की तरफ आया और कोबे कछुए से बोला — "अब तुम नीचे आ जाओ।"

कोबे कछुआ बेचारा नीचे उतर आया। शेर ने जब कोबे कछुए को देखा तो बोला — "तुम तो बहुत ही सख्त हो। मैं तुमको खाने के लायक बनाने के लिये क्या करूँ।"

कोबे कछुआ हँसा और बोला — "यह तो बहुत आसान है। तुम मुझे कीचड़ में रख दो और अपने पंजे से मेरी पीठ रगड़ते रहो जब तक कि मेरा यह सख्त खोल निकल न जाये। बस फिर मेरा मुलायम हिस्सा रह जायेगा तब तुम उसको आसानी से खा सकते हो।"

यह सुनते ही सिम्बा शेर कोबे कछुए को पानी के पास ले गया और उसको कीचड़ में रख दिया। जैसा कि उसको कहा गया था उसने अपने पंजे से कोबे की पीठ सहलानी शुरू की।

पर कुछ ही देर में कोबे कछुआ तो पानी में खिसक गया और सिम्बा शेर अपने पंजों से एक पत्थर के टुकड़े को ही सहलाता रह गया जब तक कि उसके पंजे सपाट नहीं हो गये।

कुछ ही देर में उसने देखा कि उसके पंजों से तो खून निकल रहा था। सो इस बार सिम्बा शेर कछुए से भी मात खा गया।

उसने सोचा कि जो कुछ भी सूँगूरा बड़े खरगोश ने आज उसके साथ किया है वह उसका उसको मजा चखा कर ही रहेगा चाहे कुछ हो जाये। फिर वह अपने शिकार के लिये निकल पड़ा।

सिम्बा शेर तुरन्त ही सूँगूरा बड़े खरगोश की तलाश में निकल पड़ा। जैसे जैसे वह आगे बढ़ता जाता वह हर एक से सूँगूरा बड़े खरगोश के बारे में पूछता जाता था — "सूँगूरा बड़े खरगोश का घर कहॉ है? सूँगूरा बड़े खरगोश का घर कहॉ है?"

पर जिससे भी उसने पूछा उसी ने उसको यह जवाब दिया कि उसको नहीं पता कि सूँगूरा बड़े खरगोश का घर कहॉ है।

ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि सूँगूरा बड़े खरगोश ने अपनी पत्नी समेत वह घर छोड़ दिया था जिसमें वह पहले रहता था और अब वह कहीं और चला गया था और उसका नया घर किसी को पता नहीं था। सो कोई नहीं जानता था कि सूँगूरा खरगोश वहॉ से कहॉ चला गया।

पर आज सिम्बा शेर भी उसको छोड़ने वाला नहीं था सो उसने भी हार नहीं मानी। वह तब तक लोगों से पूछता गया पूछता गया जब तक एक आदमी ने यह नहीं कहा — "वह रहा सूँगूरा बड़े खरगोश का घर, उस पहाड़ी के ऊपर।"

बस फिर क्या था सिम्बा शेर चढ़ गया पहाड़ी के ऊपर। तो वहॉ एक मकान तो था पर उस मकान के अन्दर कोई नहीं था। पर इससे भी उसको कोई परेशानी नहीं हुई।

उसने सोचा "मैं यहीं इस मकान के अन्दर छिपता हूॅ और सूॅगूरा बड़े खरगोश और उसकी पत्नी का इन्तजार करता हूॅ। वे जब यहॉ आयेंगे तब मैं उन दोनों को खा लूॅगा।" और यह सोच कर वह वहीं उसके घर में छिप कर बैठ गया और उनका इन्तजार करने लगा।

जल्दी ही सूॅगूरा खरगोश और उसकी पत्नी अपने घर वापस लौटे। उन्होंने सोचा ही नहीं था कि वहॉ कोई खतरा हो सकता है मगर खरगोश तो बहुत चालाक होता है। उसने अपने घर के आस पास शेर के पंजों के निशान देख लिये।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "प्रिये, तुम यहॉ से वापस चली जाओ। मैंने अपने घर के आस पास शेर के पंजों के निशान देखे हैं। ऐसा लगता है कि वह मुझे ढूॅढ रहा है।"

पर खरगोश की पत्नी बोली — 'प्रिय, मैं तुमको इस कठिनाई के समय में अकेला छोड़ कर नहीं जा सकती। मैं तुम्हारे साथ ही रहूॅगी।"

हालॉकि अपनी पत्नी के ये प्यार भरे शब्द सुन कर सूॅगूरा बड़ा खरगोश बहुत ही खुश हुआ लेकिन फिर भी वह उससे बोला — "नहीं प्रिये, तुम जाओ। तुम्हारे दोस्त हैं तुम उनके पास चली

जाओ। मैं उस शेर के बच्चे को धोखा दे कर अभी आता हूँ।" सो उसने पीछे पड़ कर अपनी पत्नी को वहाँ से वापस भेज दिया।

उसके जाने के बाद सूँगूरा बड़ा खरगोश सिम्बा शेर के पंजों के निशानों को देखता आगे चला तो उसको पता चला कि वे निशान तो उसके मकान तक जा रहे हैं। उसने सोचा तो शेर जी मेरे मकान में छिपे बैठे हैं।

उसने एक तरकीब लगायी। वह कुछ दूर पीछे हटा और ज़ोर से चिल्लाया — "ओ मेरे घर, तुम कैसे हो?"

सिम्बा शेर ने सोचा कि अरे घर भी कहीं बोलता है क्या, लगता है कि यह बड़ा खरगोश तो पागल हो गया है। सो वह चुपचाप बैठा रहा।

जब सूगूँरा बड़ा खरगोश का घर कुछ देर तक नहीं बोला तो वह फिर ज़ोर से चिल्लाया — "यह बड़ी अजीब बात हे कि रोज मैं तुमसे अन्दर आने से पहले पूछता हूँ कि ओ मेरे घर तुम कैसे हो और तुम जवाब देते हो कि तुम कैसे हो पर आज तुम नहीं बोले। ऐसा क्यों? ऐसा लगता है कि अन्दर कोई है।"

जब सिम्बा शेर ने यह सब सुना तो सोचा कि शायद इसका घर बोलता होगा सो अबकी बार वह बोला — "तुम कैसे हो?"

यह सुन कर तो सूँगूरा खरगोश बहुत ज़ोर से हँस पड़ा और बोला — "ओह तो सिम्बा शेर तुम हो मेरे घर में? और मैं यह

यकीन के साथ कह सकता हूँ कि यहाँ तुम मुझे खाने आये हो पर पहले तुम मुझे यह तो बताओ कि तुमने कहीं किसी घर को बोलते सुना है?"

सिम्बा शेर ने देखा कि वह तो सूगूँरा बड़े खरगोश के हाथों एक बार फिर बेवकूफ बन चुका है। पर फिर भी वह गुस्से में भर कर बोला — "तुम बस तब तक अपनी खैर मनाओ जब तक मैं तुमको पकड़ नहीं लेता।"

सूगूँरा खरगोश बोला — "मुझे लगता है कि यह इन्तजार तो तुमको बहुत दिनों तक करना ही पड़ेगा।" और यह कह कर वह वहाँ से भाग लिया। शेर उसके पीछे पीछे भागा।

पर इससे कोई फायदा नहीं था क्योंकि सिम्बा शेर सूँगूरा खरगोश से थक चुका था। वह उसके पीछे बहुत देर तक नहीं भाग सका। सो वह अपने घर अपने कैलेबाश के पेड़[52] के नीचे आ गया और आ कर लेट गया। वह बहुत थक गया था सो लेटते ही सो गया।

[52] Calabash is the fruit of a kind of tree whose cover when dried can be used to keep or dry things.

23 खरगोश, हयीना और शेर[53]

एक बार की बात है कि सिम्बा शेर, फीसी हयीना और कीटीटी खरगोश[54] ने मिल कर यह फैसला किया कि वे सब मिल कर खेती करेंगे।

सो वे तीनों एक खुले मैदान में चले गये और वहॉ जा कर एक बागीचा बनाया और उसमें उन्होंने कई किस्म के बीज लगाये। बीज बो कर वे सब घर वापस आ गये और फिर कुछ दिन तक इन्तजार किया।

कुछ दिनों के बाद जब उनकी फसल तैयार हो गयी और उसको काटने का समय आया तो तीनों ने अपने खेत पर जाने का विचार किया। सो एक सुबह वे सब जल्दी उठे और अपने बागीचे की तरफ चल दिये। बागीचा थोड़ी दूरी पर था।

कीटीटी खरगोश बोला — "जब हम लोग अपने बगीचे की तरफ जा रहे होंगे तो हम सड़क पर बिल्कुल नहीं रुकेंगे। अगर कोई रुकता है तो कोई भी उसको खा सकता है। ठीक?"

---

[53] The Lion, and Hyena and the Rabbit – a folktale from Zanzibar, East Africa

[54] Simba Lion, Fissi Hyena, and Kititi Rabbit. Hyena is a tiger like animal. See its picture above the picture of rabbit.

अब कीटीटी खरगोश के साथी तो इतने चालाक नहीं थे जितना कि वह खुद, और उनको यह भी यकीन था कि वे उससे ज़्यादा चल सकते थे सो वे सब उसकी बात मान गये।

तीनों चल दिये। पर वे अभी कुछ ही दूर गये थे कि कीटीटी खरगोश रुक गया। फीसी हयीना बोला — "देखो यह खरगोश रुक गया। अब हम इसको खा लेते हैं।"

सिम्बा शेर बोला — "हॉ यही तो तय हुआ था।

कीटीटी खरगोश बोला — "मैं सोच रहा था।"

सिम्बा शेर और फीसी हयीना एक साथ बोले — "तुम क्या सोच रहे थे खरगोश भाई?"

कीटीटी खरगोश दो पत्थरों की तरफ इशारा कर के बोला — "मैं उन दो पत्थरों के बारे में सोच रहा था जो वहॉ पड़े हैं। छोटा वाला पत्थर ऊपर नहीं जा सकता और बड़ा वाला पत्थर नीचे नहीं आ सकता।"

सिम्बा शेर और फीसी हयीना भी उन पत्थरों को देखने के लिये रुक गये और बस इतना ही कह सके "हॉ यह तो तुम ठीक कह रहे हो।" इतनी देर में कीटीटी खरगोश सुस्ता चुका था सो वे सब फिर आगे बढ़े।

वे लोग थोड़ी दूर ही और चले थे कि कीटीटी खरगोश फिर रुक गया। फीसी हयीना फिर बोला — "यह कीटीटी खरगोश तो फिर रुक गया। अबकी बार हमें इसको जरूर खा लेना चाहिये।"

सिम्बा शेर बोला — "यह तो तुम ठीक कह रहे हो।"

कीटीटी खरगोश फिर बोला — "मैं फिर कुछ सोच रहा था।"

उसके साथी एक बार फिर उत्सुकता से बोले — "अबकी बार तुम क्या सोच रहे थे खरगोश भाई?"

कीटीटी खरगोश बोला — "मैं सोच रहा था कि हम जैसे लोग जब अपना कोट बदलते हैं तो हमारा वह पुराना वाला कोट कहाँ जाता है।"

सिम्बा शेर और फीसी हयीना ने तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था। पर बाद में वे यह भी सोचने लगे कि हालाँकि खरगोश रास्ते में रुक गया था फिर भी दोनों में से कोई भी कीटीटी खरगोश को नहीं खा सका।

इतनी देर में कीटीटी खरगोश फिर थोड़ा सुस्ता लिया था सो फिर तीनों आगे बढ़े।

थोड़ी देर बाद फीसी हयीना ने भी अपने कुछ विचार रखने चाहे सो वह भी रुक गया। उसको रुकता देख कर सिम्बा शेर चिल्लाया — "यह नहीं हो सकता। फीसी हयीना इस बार हमें तुमको खाना ही होगा।"

फीसी हयीना बोला — "नहीं नहीं, मैं सोच रहा था।"

"क्या सोच रहे थे तुम?"

फीसी हयीना अपने आपको चतुर दिखाते हुए बोला — "अरे मैं तो कुछ भी नहीं सोच रहा था।"

कीटीटी खरगोश बोला — "तुम इस तरीके से हमें बेवकूफ नहीं बना सकते।"

और सिम्बा शेर फीसी हयीना के ऊपर कूद पड़ा और उसे मार डाला। कीटीटी खरगोश और सिम्बा शेर दोनों ने मिल कर फीसी हयीना को खा लिया। इसके बाद कीटीटी खरगोश और सिम्बा शेर फिर आगे बढ़े।

चलते चलते वे एक गुफा के पास आये। वहॉ आ कर कीटीटी खरगोश फिर रुक गया। इस बार सिम्बा शेर बोला — "हालॉकि मुझे अब भूख नहीं है पर तुमको खाने के लिये मुझे अपने पेट में कुछ जगह तो बनानी ही पड़ेगी, ओ छोटे कीटीटी।"

कीटीटी खरगोश बोला — "मेरा ख्याल है कि नहीं, इसकी जरूरत नहीं है क्योंकि मैं फिर कुछ सोच रहा हूॅ।"

सिम्बा शेर बोला — "इस बार तुम क्या सोच रहे हो?"

कीटीटी खरगोश सामने की गुफा की तरफ इशारा करते हुए बोला — "इस बार मैं इस गुफा के बारे में सोच रहा हूॅ। पुराने जमाने में हमारे बड़े लोग इधर से जाया करते थे और उधर को निकल जाया करते थे। मैं सोच रहा हूॅ कि मैं भी कुछ ऐसा ही करूॅ।"

सो वह उस गुफा के अन्दर एक तरफ से गया और दूसरी तरफ से निकल आया। ऐसा उसने कई बार किया।

फिर उसने सिम्बा शेर से कहा— "देखते हैं कि तुम ऐसा कर सकते हो या नहीं।"

अब शेर को तो इतनी अक्ल नहीं थी कि खरगोश तो छोटा था इसलिये उसमें से निकल गया वह तो बड़ा था वह तो उतनी छोटी जगह में से नहीं निकल सकता था। सो शेर उस गुफा के अन्दर घुसा पर बहुत जल्दी ही वह बीच में फॅस गया। अब न तो वह आगे ही जा सका और न पीछे ही आ सका।

बस पल भर में ही कीटीटी खरगोश सिम्बा शेर की पीठ पर था और उसे खा रहा था। थोड़ी ही देर में सिम्बा शेर चिल्लाया — "तुम मुझे पीछे से ही खाते रहोगे या आगे से भी खाओगे?"

पर कीटीटी खरगोश भी इतना बेवकूफ नहीं था। वह बोला — "मैं तुम्हारे सामने नहीं आ सकता क्योंकि मुझे तुम्हारा चेहरा देखने में शर्म आती है।"

कीटीटी खरगोश से उस शेर को जितना खाया गया उसने उसे उतना खाया और फिर अपने बागीचे की तरफ चला गया। अब वह उस बगीचे का अकेला मालिक था।

तो देखी तुमने खरगोश की चालाकी?

24 शेर का राज्य मन्त्री[55]

शेर की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप की ही है। इस कथा में शेर को अपना राज्य का राज्य मन्त्री चुनना है। देखो वह कितनी अक्लमन्दी से अपना राज्य मन्त्री चुनता है।

यह लोक कथा हमें बताती है कि अपने से ताकतवर के साथ हमें किस तरह से बात करनी चाहिये। किस तरह खरगोश ने अपनी अक्लमन्दी से शेर से अपनी जान बचायी और उसका मन्त्री बन गया। तो लो पढ़ो यह लोक कथा शेर के राज्य मन्त्री के चुनाव के ढंग की।

बच्चो यह तो तुम जानते ही हो कि शेर जंगल का राजा होता है। पर शायद तुमने यह नहीं सुना होगा कि शेर अपने राज्य के लिये एक नया मन्त्री खोज रहा है। क्यों?

क्योंकि उसका पहला वाला मन्त्री अचानक गायब हो गया है। और जानवरों को यह भी मालूम था कि वह इस तरह अचानक क्यों गायब हो गया है। क्योंकि खास कर के तबसे शेर का वजन भी बढ़ गया था और वह अक्सर अपने दॉत बजाता पाया जाता था।

जानवरों के राज्य में केवल तीन जानवरों की ही हिम्मत थी कि वे शेर के मन्त्री पद के लिये अपनी अर्जी दे सकें।

---

[55] Lion's Minister of State – a folktale from Africa. Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=25

एक तो था मगर – लम्बा, हरा, खूँख्वार और भयानक जबड़े वाला।

दूसरा था भालू – ऊँचा, कत्थई और ताकतवर, खाल में घुस जाने वाले पंजों वाला। और तीसरा था छोटा सा भूरे रंग का बनी खरगोश जो हमेशा जंगल के नियमों का पालन करता था।

शेर ने तीनों को इन्टरव्यू के लिये बुलाया। शेर बोला — "जैसा कि ऐसी नौकरियों में होता है तुम लोगों को इस नौकरी को पाने के लिये एक इम्तिहान पास करना पड़ेगा। अब क्योंकि तुम लोगों में से यहाँ से कोई वापस नहीं जा सकता इसलिये मैं तुम लोगों से केवक एक ही सवाल पूछूँगा।"

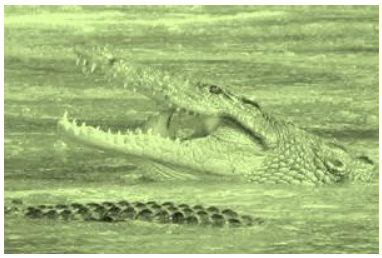

शेर ने पुकारा — "मगर, पहले तुम इधर आओ। आओ और मेरी साँस को सूँघो।" कह कर शेर आगे की तरफ झुका और उसने अपनी साँस मगर के मुँह पर छोड़ी।

वह फिर बोला — "क्या यह वैसी ही मीठी है जैसे घास के मैदान में फूल सुबह सुबह खिल रहे हों, या फिर वैसी बदबूदार है जैसे दोपहर के समय सड़ा हुआ माँस?"

मगर का कहने का अपना तरीका था। वह चीज़ें जैसी होती थीं ठीक वैसी ही बोलता था। कोई उससे अपने लिये बहुत अच्छी बात नहीं कहलवा सकता था। सो वह बोला —

ओ जहाँपनाह, अगर आप खुश हैं तो आपकी साँस तो सैंकड़ों पेड़ गिरा सकती है
वह तो हाथी को भी झुका सकती है
पर मैं अपनी नाक मधुमक्खियों से बन्द करना ज़्यादा पसन्द करूँगा
बजाय आपकी बदबूदार साँस सूँघने के।

शेर किसी तरह अपने आपको काबू में रखते हुए बहुत ही शान्ति से बोला — "गलत जवाब मिस्टर मगर, बिल्कुल गलत।"

फिर वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई कि तुम मेरी साँस को बदबूदार कहो? मैं तुमको अपने राज्य का मन्त्री नहीं रख सकता। तुम तो हम सबका अपमान कर दोगे।

तुम्हारे इस अपमान की वजह से सब हमारे दुश्मन हो जायेंगे और हमारे राज्य में लड़ाई करवा देंगे।" कह कर शेर मगर पर कूद पड़ा और उसे खा गया।

शेर फिर से शान्त हो कर बैठ गया और अबकी बार उसने भालू को बुलाया — "भालू, अब तुम आओ। अब तुम्हारी बारी है और अब तुम्हारा इम्तिहान है। तुम भी मेरी मेरी साँस को सूँघो।"

कह कर शेर अपना मुँह भालू के पास ले गया और उसके चेहरे पर ज़ोर से अपनी साँस छोड़ी और उससे पूछा — "क्या मेरी साँस जंगल के मीठे फूलों की खुशबू जैसी है या फिर यह उन मरी हुई और सड़ी हुई मछलियों की तरह बदबूदार है जो किसी जंगल के रुके हुए पानी वाले तालाब में तैरती रहती है?"

भालू वह सब देख चुका था जो मगर के साथ हुआ था। इसके अलावा वह यह जानता भी था कि शेर की सॉस कैसी है सो उसने झूठ बोलने का निश्चय किया —

ओ जहॉपनाह, कितना अच्छा है आपकी सॉस को सूँघना
यह तो बहुत ही मीठी है जैसे कि बहुत ही स्वादिष्ट मिठाई होती है
आप की सॉस... ओह, अब मैं बिल्कुल झूठ नही बोल सकता
आपकी सॉस तो बहुत बदबूदार है

शेर बोला — "भालू, बिल्कुल गलत जवाब। मुझे अफसोस है कि तुम्हारा जवाब भी बिल्कुल गलत।"

फिर वह चिल्ला कर बोला — "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इतना बड़ा झूठ बोलने की। जब हर आदमी तुम्हारा झूठ सुनेगा तो वह समझेगा कि तुम डर रहे हो। लोग यह समझेंगे कि हम कमजोर हैं और हमारे राज्य पर हमला कर देंगे।"

यह कह कर वह भालू पर कूद पड़ा और उसको भी खा गया।

अब उसने खरगोश को बुलाया और बोला — "अब तुम्हारी बारी है बनी खरगोश। यहॉ आओ और अपना इम्तिहान दो। मेरी सॉस को सूँघो।"

इस बार शेर खरगोश की तरफ झुका और उसने अपनी सॉस उसके ऊपर कुछ आवाज करते हुए फेंकी और पूछा — "क्या यह उन फूलों की तरह से मीठी है जिनसे उनका पराग नीचे गिरता रहता

है ताकि मधुमक्खी उससे शहद बना सकें, या फिर यह गिद्ध की चोंच पर लगे सड़े हुए माँस की तरह बदबूदार है?"

खरगोश अब तक मगर और भालू दोनों का हाल देख चुका था। उसने हवा में अपनी नाक सिकोड़ी, उसको ऊपर हिलाया, उसको नीचे हिलाया, उसको दाँये हिलाया, उसको बाँये हिलाया और बोला —

ओ जहाँपनाह, मुझे विश्वास है
कि मुझे सच बोलना है मगर इससे पहले कि मैं आपको जवाब दूँ
मैं आपको बता दूँ कि आज मुझे बहुत ज़ोर का जुकाम है

अपनी नाक सिकोड़ता हुआ वह आगे बोला — "हाँ मैं ठीक कह रहा हूँ जहाँपनाह, मुझे जुकाम है। मुझे बहुत ही अफसोस है कि मुझे जुकाम है। शायद जहाँपनाह खुद मुझे यह बतायें कि उनकी क्या राय है तब मैं खुशी से जवाब दे सकूँगा।"

शेर बोला — "बहुत अच्छा जवाब है। मगर की तरह तुम किसी का अपमान नहीं करोगे और भालू की तरह तुम किसी से वह नहीं कहोगे जो वे सुनना चाहते हैं।

तुम दूसरों की बातों को सुनने के लिये तैयार हो और तुरत सोचते हो। तुम ही मेरे राज्य के नये मन्त्री हो। मैं आज से तुम्हें ही अपने राज्य का नया मन्त्री घोषित करता हूँ। बधाई हो।"

और उस दिन से बनी खरगोश शेर का राज्य मन्त्री बन गया। बधाई हो चतुर खरगोश।

आजकल तुम लोगों ने छोटे से बनी खरगोश को इधर से उधर कूदते देखा होगा। उस समय वह घूम घूम कर असल में शेर के राज्य के मन्त्री का ही काम कर रहा होता है।

पर जब भी वह रुकता है तो रुक कर अपनी नाक सिकोड़ता है तो वह ऐसा इसलिये करता है क्योंकि उसको जुकाम है।

25 खरगोश और शेर की कहानी[56]

यह कहानी अक्लमन्दी की एक कहानी है जिसे हमारे माता पिता बहुत बचपन में सुनाया करते थे कि कैसे एक छोटे से खरगोश ने शेर को बेवकूफ बना कर जंगल के सारे जानवरों की जान बचायी।

एक बार की बात है एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। उस जंगल में एक शेर भी रहता था। जब वह जवान था तब वह मनमाना शिकार करता था परन्तु अब वह बूढ़ा हो गया था।

अब उसके लिये शिकार पर जाना बहुत मुश्किल हो गया था इसलिये उसको कभी कभी भूखा भी रह जाना पड़ता था। इस भूखे रहने से बचने के लिये उसने एक दिन एक तरकीब सोची।

उसने जंगल के सभी जानवरों की एक मीटिंग बुलायी और उन सबसे कहा — "बजाय इसके कि मैं किसी भी जानवर को कभी भी खा जाऊॅ आप लोगों के लिये यही ठीक होगा कि आप लोग हर हफ्ते मुझे एक जानवर भेज दिया करें मेरे खाने के लिये।"

जंगल के राजा का हुक्म था सब जानवरों को मानना पड़ा। अब क्या था, पर जाये कौन? सो यह तय हुआ कि जानवर हर हफ्ते एक लौटरी निकालेंगे और जिसके नाम की लौटरी निकलेगी वही जानवर उस हफ्ते शेर के पास जायेगा। सब जानवर इस बात

[56] Story of a Rabbit and a Lion. From "My Childhood Stories" by Sushma Gupta.

पर राजी हो गये क्योंकि इसके अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

शेर को तो अब बहुत ही आसानी हो गयी। उसको घर बैठे हर हफ्ते खाना मिलने लगा। एक जानवर आ जाता और शेर उसको मार कर खा जाता था और सारा दिन अपनी गुफा में पड़ा पड़ा सोता रहता। वह अब भूखा भी नहीं रहता था। इस तरह अब उसके दिन आराम से गुजरने लगे।

इधर जानवर हर हफ्ते लाटरी निकालते और जिस जानवर का नाम लाटरी में निकलता उसको शेर के पास भेज दिया जाता। वह जानवर बेचारा अपने परिवार को रोता बिलखता छोड़ कर शेर का खाना बन कर चला जाता। इस प्रकार शेर और जानवर दोनों ही सुखी थे कि...

एक दिन लाटरी में एक छोटे से खरगोश का नाम निकला। खरगोश बोला — "मैं तो बहुत ही छोटा सा जानवर हूँ। मुझ जैसे छोटे से जानवर को खा कर इतने बड़े शेर का क्या काम बनेगा। आप लोग किसी बड़े जानवर का नाम निकालें।"

पर जानवरों ने उसकी एक न सुनी और आखिरकार खरगोश को ही शेर का खाना बन कर शेर के पास जाना पड़ा। खरगोश था तो बहुत छोटा पर था बड़ा अक्लमन्द। वह अभी मरना नहीं चाहता था सो वह शेर से बचने की कोई तरकीब सोचने लगा। सोचते सोचते वह सो गया।

खरगोश इतनी देर सोया इतनी देर सोया कि उसका शेर के पास पहुँचने का समय ही निकल गया। वह तो सोता ही रह गया था और उधर शेर अपने शिकार का इन्तजार कर रहा था। उसको बहुत भूख लग रही थी पर उसे कोई भी जानवर आता दिखायी नहीं दे रहा था।

धीरे धीरे शेर का गुस्सा बढ़ने लगा और गुस्से से वह अपनी गुफा में ही चक्कर काटने लगा। इतने में ही उसने देखा कि एक छोटा सा खरगोश हाँफता हुआ भागा चला आ रहा है।

उस छोटे से खरगोश को देख कर शेर का गुस्सा और भी बढ गया। एक तो उसका शिकार देर से आया और वह भी इतना छोटा सा।

खरगोश के आते ही वह उस पर बरस पड़ा — "ओ खरगोश के बच्चे, कहाँ रह गया था तू? इतनी देर से आ रहा है, मेरा भूख के मारे दम निकला जा रहा है।"

खरगोश गिरता पड़ता हाँफता शेर के सामने निढाल सा पड़ गया। कुछ पल बाद जब उसकी साँस में साँस आयी तो वह बोला — "राजा साहब, राजा साहब, एक जंगल में एक ही तो शेर होता है न?"

शेर बोला — "यकीनन, एक जंगल में एक ही शेर होता है और वही उस जंगल का राजा होता है जैसे मैं इस जंगल में एक अकेला शेर हूँ और यहाँ का राजा हूँ।"

खरगोश बोला — "सरकार, हुआ क्या, कि जब मैं आपके पास आ रहा था तो मुझे रास्ते में एक और शेर मिल गया। उसने मुझसे पूछा तुम कहॉ जा रहे हो। मैंने कहा कि मैं अपने राजा के पास जा रहा हूॅ।

वह बोला — "इस जंगल का राजा तो मैं हूॅ तो तुम किस राजा के पास जा रहे हो? मैंने कई दिनों से कुछ खाया नहीं है मुझे भी बहुत भूख लगी है, मैं तुमको खाऊॅगा।" सरकार, जैसे तैसे मैं उस शेर से अपनी जान बचा कर भागा चला आ रहा हूॅ।"

यह सुन कर तो शेर आग बबूला हो गया। वह गुस्से से लाल पीला हो कर बोला — "क्या कहा तुमने? तुमने दूसरा शेर देखा? अभी चल कर दिखाओ मुझे कि कहॉ है वह दूसरा शेर। मैं उसे जान से मार डालूॅगा। इस जंगल का राजा वह नहीं मैं हूॅ।"

खरगोश खुश हो कर बोला — "चलिये, राजा साहब, जल्दी चलिये। कहीं ऐसा न हो कि वह कहीं भाग जाये।" शेर अपनी भूख तो भूल गया और तुरन्त ही खरगोश के पीछे पीछे चल दिया।

खरगोश शेर को एक कुॅए के पास ले गया और इधर उधर देखता हुआ बोला — "अरे अभी तो मैं उसे यहीं छोड़ कर गया था, कहॉ चला गया। उसे तो यहीं होना चाहिये था पर कहीं दिखायी नहीं दे रहा। ऐसा लगता है कि आपको आता देख कर इस कुॅऐ में छिप गया है।"

शेर को भी कुछ ऐसा ही लगा। उसने खरगोश से कहा — "ज़रा कुँए में झाँक कर तो देखो कि वह शेर वहाँ है कि नहीं।"

खरगोश डरने का नाटक करता हुआ बोला — "सरकार, मैं नहीं देख सकता, मुझे डर लगता है।"

शेर बोला — "ठीक है मैं ही देखता हूँ उसको कि वह कहाँ छिपा बैठा है। आज मैं उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ूँगा।"

ऐसा कह कर वह उस कुँए की जगत पर बैठ कर कुँए में झाँकने लगा और बोला — "अरे ओ शेर, कहाँ है तू? कहाँ छिपा बैठा है? निकल कर बाहर आ और मेरा सामना कर।"

ऐसा कह कर उसने जो कुँए में झाँका तो कुँए के पानी में उसको अपनी परछाँई दिखायी दी। उसने समझा कि वही दूसरा शेर है। खरगोश की बात सही जान कर उसका पारा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया वह बोला — "अच्छा तू यहाँ छिप कर बैठा है, चल बाहर आ।"

बच्चो, कुँए में तो आवाज गूँज जाती है सो शेर की आवाज भी उस कुँए में गूँज गयी — "अच्छा तू यहाँ छिप कर बैठा है, चल बाहर आ।"

शेर को लगा कि दूसरा शेर उसको ललकार रहा है। सो उसने फिर कहा — "मैं नहीं तू बाहर आ। तू मेरे डर से छिपा बैठा है।" उसकी यह आवाज भी गूँज गयी।

इस ललकार से उसको इतना अधिक गुस्सा आया कि वह बोला — "अच्छा तो यह ले सँभल, मैं आ रहा हूँ।" और यह कहते के साथ ही वह कुँए में कूद गया उस शेर को मारने के लिये।

पर वहॉ दूसरा शेर तो कोई था ही नहीं, सो वह कुँए में गिरते ही मर गया। खरगोश खुशी खुशी घर वापस आ गया।

उधर खरगोश की पत्नी बच्चे और माता पिता बहुत दुखी थे। पर खरगोश को खुशी खुशी आता देख कर वे आश्चर्य में पड़ गये कि खरगोश मौत के मुँह में से वापस कैसे आ गया।

खरगोश ने आ कर सबको अपनी कहानी सुनायी। जंगल के सब जानवर खरगोश की अक्लमन्दी की कहानी सुन कर बहुत खुश हुए कि अब उनमें से किसी को शेर के पास नहीं जाना पड़ेगा।

तो बच्चो, इस प्रकार एक छोटे से खरगोश ने अपनी अक्लमन्दी से जंगल के सारे जानवरों की जान बचायी।

26 गीदड़ और शेर[57]

एक बार एक गीदड़ और उसकी पत्नी गिदड़िया शाम को नदी के किनारे टहल रहे थे। गिदड़िया को अपनी अक्लमन्दी पर बहुत घमंड था और वह गीदड़ को बिल्कुल बेवकूफ समझती थी।

जब भी कभी अक्लमन्दी की बात आती तो गिदड़िया बड़े घमंड से कहती "मेरे पास सौ अक्ल हैं।" और गीदड़ बेचारा मुँह लटका कर कहता "मेरे पास तो केवल एक ही अक्ल है मेरी रानी। मैं तो सचमुच ही बहुत बड़ा बेवकूफ हूँ।"

घूमते घूमते वे लोग बहुत सारी बातें कर रहे थे, अपने बच्चों की, अपने बीते दिनों की, अपने आने वाले दिनों की, अपने बूढ़े माता पिता की। साथ में वे इधर उधर भी देखते जा रहे थे कि उन्होंने शेर की दहाड़ सुनी। शेर की दहाड़ सुनते ही गिदड़िया कॉप गयी।

उसने गीदड़ से पूछा — "प्रिय तुमने भी वही सुना जो मैंने सुना?"

गीदड़ बोला — "हॉ गिदड़िया, मैंने भी सुना।" पर वे लोग रुके नहीं और उन्होंने अपना घूमना जारी रखा।

[57] Jackal and Lion. From "My Childhood Stories" by Sushma Gupta.

इतने में उन्होंने शेर की दहाड़ दोबारा सुनी। शेर की दहाड़ दोबारा सुन कर तो गिदड़िया बहुत ही घबरा गयी। उसने अपने पति से शेर से बचने की कोई तरकीब सोचने के लिये कहा।

गीदड़ मरी सी आवाज में बोला — "मेरे पास तो केवल एक ही अक्ल है प्रिये, मैं क्या कर सकता हूॅ□तुम्हारे पास तो सौ अक्ल हैं तुम ही कोई तरकीब सोचो।"

इस बीच उन्होंने फिर एक दहाड़ सुनी। इस बार वह दहाड़ उन को कहीं पास से ही आती सुनायी दी।

गिदड़िया तो उस आवाज को सुन कर बहुत जोर से कॉपने लगी और बोली — "प्रिय मेरी पच्चीस अक्ल ने तो काम करना तभी बन्द कर दिया था जब मैंने शेर की पहली दहाड़ सुनी थी।

मेरी दूसरी पच्चीस अक्लों ने तब काम करना बन्द कर दिया था जब मैंने उसकी दूसरी दहाड़ सुनी थी और बाकी पच्चीस अक्ल ने काम करना अब बन्द कर दिया है। जो पच्चीस अक्ल अब बची हैं उन्हीं को काम में लाने की कोशिश करती हूॅ। तुम भी कुछ सोचो।"

गीदड़ ने कोई जवाब नहीं दिया और अपना घूमना जारी रखा।

तभी उन्होंने एक और दहाड़ सुनी और लो वह दहाड़ तो उनके सामने से ही आ रही थी। अब तो शेर तो उनके सामने ही खड़ा था। गिदड़िया तो उसको देख कर गिरते गिरते बची।

उसने गीदड़ का हाथ पकड़ते हुए कहा — "प्रिय मेरी तो बाकी बची पच्चीस अक्ल भी चली गयीं अब मैं कुछ नहीं सोच सकती।"

और यह कहते हुए वह अपने पति के पीछे दुबक गयी। गीदड़ बोला — "अच्छा तो फिर मैं ही कुछ सोचता हूॅ।"

इतने में शेर उनके पास आ कर बोला — "मैं बहुत भूखा हूॅ मैं तुम दोनों को खाना चाहता हूॅ।" गीदड़ ने उसे इज़्ज़त से सिर झुका कर सलाम किया और उसके परिवार की कुशलता के बारे में पूछा।

गीदड़ फिर बोला — "क्यों नहीं क्यों नहीं। हम तो आपकी सेवा में हमेशा ही हाजिर हैं पर हम तो बहुत ही पतले दुबले से हैं। हमको खा कर आपका पेट नहीं भरेगा।

हमारे मोटे मोटे पॉच बच्चे घर में हैं। अगर आप आज्ञा दें तो हम उनको भी ले आयें ताकि उनको भी आपकी सेवा का मौका मिले। आपका पेट भी हम सबको खा कर भर जायेगा।"

शेर तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उसने तुरन्त ही गीदड़ को उन बच्चों को लाने के लिये कहा।

गिदड़िया ने भी शेर को इज़्ज़त से सिर झुका कर सलाम किया और गीदड़ और गिदड़िया दोनों कुछ दूर तक तो तेज़ तेज़ चल कर गये पर जब शेर उनकी ऑखों से ओझल हो गया तो वे फिर से नदी के किनारे किनारे पहले की तरह घूमने लगे।

इस घटना के बाद गिदड़िया ने न तो कभी अपनी अक्लमन्दी की शान बघारी और न ही कभी अपने पति को बेवकूफ कहा।

27 राजा शेर की भेंटें[58]

एक बार राजा शेर एक बहुत बड़ी दावत दे रहा था और हर एक जानवर को उस दावत में जाना था क्योंकि वह तो राजा का बुलावा था और उसके हुक्म को मानना तो सबके लिये एक नियम जैसा था सो कोई उसको मना नहीं कर सकता था।

केवल एक हिरनी मिसेज कूडू[59] ने अपनी एड़ी जमीन में मारी और बोली — "ओह नहीं। शेर तो हमारे लोगों को खाने में कितना आनन्द लेता है। उसका क्या भरोसा कि जब हम वहॉ जायेंगे तो वह हमको खायेगा नहीं।"

कुछ हिरनियों ने कहा यह तो तुम ठीक कह रही हो मिसेज़ कूडू। मिसेज़ कूडू बोली तब मैं वहॉ अकेली ही जाऊॅगी क्योंकि अगर मैं वहॉ नहीं गयी तो मुश्किल हो जायेगी।

एक हिरन बोला ठीक है चलो चलें। हिरनी ने फिर भी कुछ नाराजी से हुॅह तो की पर एक खुर भी आगे नहीं बढ़ी।

केवल बुढ़िया नैनी बकरी इस बुलावे को नहीं छोड़ सकी क्योंकि इस बुलावे में तो खाना भी था न। और क्या हुआ अगर दूसरों ने उसको खा भी लिया तो।

---

[58] King Lion's Gifts – a Khoi folktale from Zululand, South Africa, Africa.
Retold by Pieter W Grobbelaar and translated by Marguerite Gordon

[59] Mrs Kudu, the she-deer

सो सारे जानवर उस दावत में आना शुरू हो गये। चीता, खरगोश, ज़ीब्रा, मोल[60], हाथी, सॉप। बबून तो अपनी हर चीज़ को जानने की इच्छा की वजह से दूर रह ही नहीं सकता था। और गधा बहुत ही बेवकूफ था इसलिये वह भी जाये बिना नहीं रह सकता था।

खरगोश, हिप्पोपोटेमस और गिरगिट भी वहॉ पहुॅचे हुए थे। और हयीना और गीदड़[61] भी। यह एक बहुत बड़ी दावत थी।

वहॉ पहुॅच कर सबने पहले थोड़ा सा नाच किया और बबून उस नाच में उन सबका नेता था। फिर उन्होंने थोड़ा सा गाया। इस गाने में गीदड़ की आवाज बहुत अच्छी थी।

फिर सबने शहद खाया और दूध पिया। यहॉ तक कि शेर चीते और हयीना ने भी उनके साथ मिल कर इस तरह से शहद खाया और दूध पिया जैसे उन्होंने कभी खून पिया ही न हो।

शेर शहद का बर्तन चाट कर साफ करते हुए बोला — "सुनो मेरे जानवर भाइयो,"

क्योंकि राजा खाना सबसे पहले शुरू करता है और सबसे बाद में खत्म करता है। इस बीच में भी वह कुछ कुछ खाता रहता है। दूसरे लोग तो केवल वही खाते हैं जो उनको मिलता है।

---

[60] Mole is a small animal who lives underground. See its picture above.

[61] Leopard, Rabbit, Zebra, Mole, Elephant, Snake, Baboon, Donkey, Rabbit, Hippopotamus, Lizard, Hyena, Jackal

सो वह बोला — "सुनो मेरे जानवर भाइयो, मैं यह बताने के लिये कि मैं कितना अच्छा राजा हूॅ मैं तुम सबको एक एक भेंट देना चाहूॅगा।"

सब जानवर चिल्लाये — "धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद।"

फिर वे सब जानवर आगे जाने के लिये धक्का मुक्की करने लगे क्योंकि उनको लग रहा था कि जो कोई भी पहले पहुॅच जायेगा उसको अच्छी भेंट मिल जायेगी।

शेर दहाड़ा — "रुक जाओ, रुक जाओ। जो कोई कुछ भी छीनने की कोशिश करेगा उसको कुछ नहीं मिलेगा। और जो लालची है उसको तो सबसे बाद में मिलेगा।"

शेर के यह कहने पर भीड़ में कुछ शान्ति हुई। शेर फिर बोला — "जिसको सींग चाहिये वह एक तरफ खड़ा हो जाये।"

"सींग? क्या तुमको नहीं लगता कि हम लोग सींग लगा कर ज़्यादा अच्छे लगेंगे?" मिसेज़ कूडू हिरनी ने अपने दोस्तों से पूछा।

एक हिरन बोला — "हॉ हॉ, हॉ।" और वह जा कर एक तरफ को खड़ा हो गया।

शेर बोला — "सींग यहॉ हैं।" सो जिन जानवरों को सींग चाहिये थे उन्होंने वहॉ से सींग ले ले कर अपने अपने सिरों पर सींग पहन लिये।

पर मिसेज कूडू जो दूर बैठी हुई थी उसको कुछ नहीं मिला।

हाथी ने हिरन को सींग लेने के लिये जाते हुए देखा तो वह भी अपना बड़ा सा शरीर ले कर शेर के पास पहुँच कर बोला — "मुझे भी सींग चाहिये।" और अपना मुँह बढ़ा कर एक जोड़ी सुन्दर सफेद सींग उससे छीन लिये।

शेर चिल्लाया — "लालची कुत्ता कहीं का। क्योंकि तुम इतने लालची हो कि तुमको सींग लेने के लिये थोड़ा सा इन्तजार भी नहीं हो सका तो ये सींग अब तुम्हारे मुँह में ही अटक कर रह जायेंगे और तुम इनको बहुत ऊँचे तक नहीं ले जा पाओगे जैसे हिरन के सींग होते हैं।"

हाथी बोला — "उफ़, मेरी नाक तो बहुत छोटी है अब तो मैं साँस भी नहीं ले पा रहा हूँ।"

शेर को उसके ऊपर तरस आ गया सो वह उससे बोला — "यह लो।" कह कर उसने हाथी को उसकी नाक पकड़ कर खींच दिया जिससे उसकी नाक अब जमीन तक आ गयी।

फिर उसने उससे पूछा — "अब ठीक है?"

"धन्यवाद धन्यवाद शेर राजा।" हाथी बड़बड़ाया और वहाँ से अपने सींग वाले दाँत और अपनी हिलती हुई नाक ले कर चला गया।

पर वहॉ एक राइनोसिरोस[62] पहले से ही सींगों के ढेर पर खड़ा हुआ था और अपनी नाक से इधर उधर कुछ ढूँढ रहा था।

शेर बोला — "क्योंकि तुम अपनी नाक यहॉ अड़ा रहे थे इसलिये तुम्हारे सींग तुम्हारी नाक पर ही चिपक जायेंगे।"

राइनोसिरोस बोला — "नहीं नहीं। मुझे इसमें से कोई सींग नहीं चाहिये।" और तुरन्त ही उसने अपनी नाक पर लगे सींग से राजा शेर पर हमला करने की कोशिश की।

पर शेर ने उसको ऐसा मारा कि उसके एक सींग के आगे का हिस्सा टूट गया और उसकी ऑखें सूज कर कुछ बन्द सी हो गयीं। इसी लिये आज तक राइनोसिरोस बहुत कम देख सकता है और उसके दोनों सींग भी एक अजीब किस्म का जोड़ा हैं।

अब शेर एक दूसरे ढेर की तरफ चला और बोला — "देखो यहॉ बहुत सुन्दर सुन्दर कान हैं।"

अब जानवर तो बच्चे जैसे होते हैं। उनके न तो कान होते हैं और न ही वे उनको लेना चाहते हैं। पर शेर के हाथ में तो दो सुन्दर लम्बे कान पहले से ही मौजूद थे। और जो उसने एक बार उठा लिया था वह उसको वापस रखना नहीं चाहता था क्योंकि वह तो राजा था।

[62] Rhinoceros – a wild animal. See his picture above.

सो उसने वे कान उन दो जानवरों के सामने रख दिये जो उसके सबसे पास खड़े थे और वे दो जानवर थे गधा और खरगोश।

अब शेर ने आवाज लगायी — "अच्छे कपड़े किसको चाहिये?"

यह सुन कर भीड़ में कुछ सनसनी मची। शेर ने सोचा कुछ मजा लिया जाये क्योंकि सारे जानवर अपनी अपनी शान दिखाने के लिये तैयार थे। हर जानवर चाहता था कि वह अपने पड़ोसी जानवर से अच्छा दिखायी दे।

चीते को एक धब्बे वाला सूट मिला। ज़ीब्रा को एक धारी वाली जैकेट मिली पर घोड़े और गाय की तो एक लम्बी कहानी है।

घोड़ा बोला — "हम लोग तो खेत पर काम करते हैं।"

गाय बोली — "हमको तो रोज ही साफ सुथरे हो कर रहना पड़ता है।"

घोड़ा बोला — "इसलिये हम लोगों के लिये एक सूट काफी नहीं है।"

गाय बोली — "हम जानवर नहीं चाहते कि किसान हमारे ऊपर हँसें।"

शेर बोला — "ठीक है ठीक है।"

शेर को घोड़े की चाल बहुत अच्छी लगी और गाय की मीठी बोली बहुत अच्छी लगी। इनसे शेर का दिल भी पसीज गया।

वह बहुत ही धीरे से बोला — "अच्छा यहाँ आओ।"

सो घोड़ा पहले आगे बढ़ा। "सुन्दर" शब्द उसके लिये चुने गये कपड़ों के लिये कम है। शेर ने उसको कई रंगों के सूट दिये – साँवला, कत्थई, गहरा कत्थई, बर्फ जैसा सफेद, काला। घोड़े ने शेर को धन्यवाद दिया और चला गया।

पर कुछ ही दिनों बाद वह इन सब कपड़ों को पहनते उतारते थक गया सो उसने वे कपड़े अपने बच्चों में बाँट दिये। और इसी लिये आज तक हर घोड़े के पास केवल एक ही जोड़ी कपड़े हैं पर फिर भी सब घोड़े अलग अलग दिखायी देते हैं।

गाय को शेर ने एक रंग बिरंगी पोशाक दी, एक लाल रंग की जैकेट दी और एक रविवार को पहनने के लिये खास काली पोशाक दी पर बाद में उसने भी वही किया जो घोड़े ने किया था। उसने भी अपनी सारी पोशाकें अपने बच्चों को दे दीं। इसी लिये हर गाय के पास भी आज एक ही सूट है पर हर गाय अलग अलग दिखायी देती है।

अभी जब शेर गाय से बात कर ही रहा था कि भीड़ में से एक ज़ोर की आवाज आयी — "और मुझे? सारी अच्छी चीज़ें आप घोड़े और गाय को ही दे देंगे क्या?"

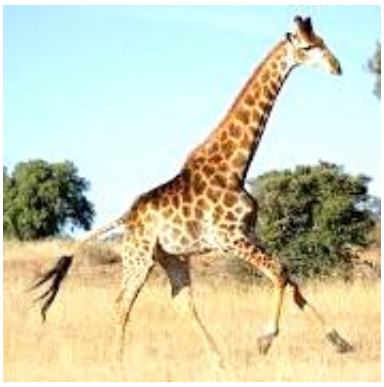

यह जिराफ की आवाज थी।

शेर बोला — "तुम बहुत ही बदतमीज हो। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई अपने राजा पर इस तरह चिल्लाने की? अब तुम कभी नहीं बोलोगे यही तुम्हारी सजा है।" और इसी वजह से जिराफ ने अपनी आवाज खो दी।

जानवरों को यह दिखाने के लिये कि वह जल्दी में नहीं है शेर हड्डियों के ढेर की तरफ एक बार फिर से गया और वहाँ से उसने गाय के लिये दो सींग निकाले जो उसकी उस हर पोशाक के साथ जँचते जो उसने उसको दी थीं। गाय ने उसको उन सींगों के लिये धन्यवाद दिया और वहाँ से चली गयी।

लेकिन जिराफ बहुत परेशान हुआ हालाँकि वह कुछ कह नहीं सका क्योंकि अब तो वह बोल ही नहीं सकता था। शेर भी इस बात से बहुत दुखी हुआ। इसलिये उसने उसको एक खास सूट दिया और एक जोड़ी सींग भी दिये जो उसके सूट के साथ बहुत अच्छे लग रहे थे।

जिराफ ने वह सूट पहना और वे सींग अपने सिर पर लगा लिये। उस सूट और सीगों में वह बहुत अच्छा लगने लगा।

शेर ने उसको ऊपर से ले कर नीचे तक देखा और बोला — "मैं तुमको एक लम्बी गर्दन और देता हूँ ताकि तुम अपने दुश्मनों को

दूर से देख सको। और लम्बी टाँगें देता हूँ ताकि तुम उनसे बचने के लिये तेज़ी से भाग सको।"

जिराफ यह सुन कर बहुत खुश हुआ और वह भी वहाँ से खुशी खुशी चला गया।

जैसे ही शेर फिर से जानवरों की तरफ आना चाहता था कि उसके पंजों के बीच में कोई चीज़ आयी। वह हवा में उछला और चिल्लाया — "ए यह कौन है?" और इससे पहले कि वह चीज़ भाग जाती शेर ने उसे अपने पंजे के नीचे दबा लिया।

वह एक छोटा सा गिरगिट[63] था। गिरगिट रेंग कर शेर के पंजों के बीच से निकल तो आया पर उसका सिर बिल्कुल नीला हो गया था।

शेर बोला — "यह सब तुम्हारी गलती है सो अब तुम्हारा सिर हमेशा नीला रहेगा।"

शेर का धीरज अब छूटता जा रहा था क्योंकि अब सूरज नीचे ढलता जा रहा था और उसको भूख भी लग आयी थी। दूध और शहद जैसा हल्का खाना एक जंगल के राजा के लिये ठीक नहीं हैं। उसको तो मॉस जैसा भारी खाना चाहिये।

[63] Translated for "Chameleon". See its picture above.

सो फिर जिस जानवर को जो मिला वह वही लेने लगा। बबून को एक बीमार सी पूँछ मिल गयी। खरगोश और मोल[64] को एक पतली और लम्बी पूँछ मिल गयी पर उनको वह नहीं चाहिये थी सो उन्होंने उनको चुपचाप जमीन में गाड़ दिया। इसलिये अब उनके पास कुछ नहीं रहा।

बकरे को एक दाढ़ी मिल गयी और इससे पहले कि नैनी बकरी को मालूम हो कि वहाँ क्या हो रहा था उसको भी एक दाढ़ी मिल गयी थी। दोनों ने वे दाढ़ियाँ अपनी अपनी ठोढ़ियों पर लगा लीं।

जानवर आपस में एक दूसरे से हँसी कर रहे थे।

शेर चिल्ला रहा था — "अगला जानवर आओ।"

हिप्पोपोटेमस अपने चार बड़े बड़े दाँतों के साथ शेर के पास आया।

उधर साँप को अचानक शेर का अपनी दवाओं वाला कैलेबाश[65] मिल गया था जो उसने एक शिकारी से चुराया था। साँप ने उस कैलेबाश में रखा रस एक ही घूँट में पी लिया। वह उसके पेट में जा कर सड़ने लगा तो वह उसको उगलना चाहता था पर तब तक वह जहर के रूप में बदल चुका था और अब उसकी किसी को काटने की इच्छा हो रही थी।

---

[64] Mole is a big rat type animal. See its picture above.

[65] Calabash is dried outer cover of pumpkin type fruit mostly found in West African countries. t can be used like pitcher to keep wet and dry things. See its picture above.

राजा शेर गुस्से से चिल्लाया — "इसकी टॉगें काट दो।" यह सुनते ही सॉप की टॉगें काट दी गयीं पर इससे सॉप को कुछ नहीं हुआ।

बल्कि उस रस ने उसको ऐसा पागल बना दिया था कि वह अपने पेट के बल ही वहॉ से भाग गया। आज भी वह जहॉ जिसको भी देख लेता है काट लेता है और उसका जहर भी पहले से और ज़्यादा खतरनाक होता जा रहा है।

फिर एक बिल्ला[66] आया तो उसको शेर की पत्नी की छोटी वाली खुशबू की शीशी मिल गयी उसने वह सारी खुशबू अपने ऊपर उॅडेल ली। ओह वह तो कितनी ज़ोर की महक थी। सब जानवरों ने अपनी अपनी नाकें बन्द कर लीं।

और फिर जिसको जो कुछ भी मिला उसने उसी को उठा लिया – सींग, खुर, दुम और उन्हीं को ले ले कर वे चले गये।

शेर अब बहुत थक गया था सो उसने अपने चारों तरफ देखा तो अब वहॉ तो केवल हॅसना और रोना ही बचा था। शेर बोला — "ले लो जो जिसको चाहिये और अब तुम लोग सब जा सकते हो।"

अब वहॉ हयीना और गीदड़ ही बच गये थो सो उन दोनों को वही लेना पड़ा जो वहॉ बचा था। आज भी हयीना की हॅसी की

[66] Translated from the word "Polecat" – it is a kind of cat found in Africa and Eurasia. It has a remarkably bad smelling secretion to mark its territory.

आवाज सब जानवरों में सबसे ज़्यादा तेज़ है और रोने में गीदड़ का मुकाबला कोई नहीं कर सकता।

जब बूढ़ा कछुआ वहाँ पहुँचा तो न तो वहाँ कोई जानवर था और न ही कोई भेंट इसलिये वह आज तक अपने उसी सख्त खोल में ऐसे ही घूमता रहता है जो उसके लिये मगर ने बनाया था।

मेंढक अभी भी पानी में नंगा रहता है क्योंकि वह बहुत देर तक इन्तजार करता रहा और उस इन्तजार ने उसको इतना गर्म कर दिया कि उसको तैरने के लिये पानी में कूद जाना पड़ा। जब वह तैर रहा था तो किसी ने उसके कपड़े चुरा लिये।

अब तो उसको सारे जानवरों के सामने पानी में से निकलने में भी शर्म आती है। अगर उसको कभी धूप सेकने की इच्छा होती है और वह बाहर आ भी जाता है तो जैसे ही वह कोई आहट सुनता है तो तुरन्त ही पानी में कूद जाता है।

पर रात को जब अँधेरा रहता है तब वह और उसके भाई लोग बाहर आ जाते हैं और फिर तुम उनको एक दूसरे से शिकायत करते सुन सकते हो।

एक कहता है — "कहाँ? कहाँ?"

तो दूसरा बोलता है — "कपड़े, कपड़े।"

इस तरह शेर ने सब जानवरों को उनकी अपनी अपनी पसन्द की चीज़ें दीं और सारे जानवर अपनी अपनी पसन्द की चीज़ें ले ले कर अपने अपने घर चले गये।

28 शेर, खरगोश और हयीना[67]

पूर्वीय अफ्रीका की यह लोक कथा केन्या देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि सिम्बा[68] शेर अपनी गुफा में अकेला रहता था। जब वह जवान था तब तो उसे वहाँ अकेला रहना कुछ ज़्यादा बुरा नहीं लगता था पर इस कहानी से पहले उसकी टाँग में इतनी ज़ोर से चोट लग गयी कि वह अपने लिये खाना ही नहीं ला सका। तब उसको लगा कि एक ज़िन्दगी में एक साथी का होना कितना जरूरी होता है।

उसकी हालत तो बहुत ही खराब हो जाती अगर सूंगूरू बड़ा खरगोश[69] एक दिन उसकी गुफा में उससे मिलने नहीं आता तो।

जब सूंगूरू बड़े खरगोश ने सिम्बा शेर की गुफा में झाँका तो उसको लगा कि शेर बहुत भूखा है। वह तुरन्त ही अपने बीमार दोस्त की देखभाल और उसके आराम का इन्तजाम करने के लिये दौड़ गया।

---

[67] The Lion, the Hare and the Hyena – a Hare and Hyena folktale from Kenya, East Africa. Retold by Phyllis Savory

[68] Simba is the name of the lion in Eastern and Southern African countries.

[69] Soongooroo hare – hare is the rabbit-like aimal but it is bigger than him in size. See its picture above. Soongooroo is his name Eastern and Southern African countries.

बड़े खरगोश की अच्छी देखभाल से सिम्बा शेर धीरे धीरे अच्छा हो गया और उसकी ताकत भी वापस आ गयी।

सूँगूरू बड़ा खरगोश भी अब अपने दोनों के लिये छोटे छोटे शिकार पकड़ कर लाने लगा था और उन शिकारों की वजह से बहुत जल्दी ही शेर की गुफा के दरवाजे पर हड्डियों का ढेर भी जमा होने लगा।

एक दिन न्यान्गौ हयीना[70] अपने लिये खाना ढूँढ रहा था कि उसको हड्डियों की खुशबू आयी। वह खुशबू उसको सिम्बा शेर की गुफा तक ले आयी। पर क्योंकि वे हड्डियॉ गुफा के अन्दर से भी देखी जा सकतीं थीं इसलिये वह उन हड्डियों को बिना शेर के देखे नहीं चुरा सकता था।

अपनी जाति के और हयीनाओं की तरह क्योंकि वह हयीना भी एक कायर था इसलिये उसने सोचा कि अगर उसको वह स्वादिष्ट खाना खाना है तो उसको सिम्बा शेर से दोस्ती बनानी चाहिये। सो वह उस गुफा में अन्दर घुसा और खॉसा।

खॉसने की आवाज को देखने के लिये कि यह आवाज कहॉ से आयी सिम्बा शेर बोला — "कौन शाम को यह भयानक आवाज कर रहा है?"

[70] Nyangau Hyena – Hyena is a tiger-like animal. Nyangau is Hyena's name in Eastern and Southern African countries. See its picture above.

शेर की बोली सुन कर हयीना के पास जितनी हिम्मत थी वह भी जाती रही फिर भी वह बोला — "यह मैं हूॅ तुम्हारा दोस्त न्यान्गौ हयीना।

मैं तुमसे यह कहने आया हूॅ कि जंगल के जानवर तुमको बहुत याद कर रहे हैं। और हम सब तुम्हारे अच्छे हो कर अपने बीच में जल्दी आने की दुआ मना रहे हैं।"

शेर गुर्राया — "निकल जाओ यहॉ से। तुम झूठ बोल रहे हो क्योंकि अगर तुम मेरे दोस्त होते तो बजाय इन्तजार करने के मेरी तबियत का हाल बहुत पहले ही पूछते। वह सब तो तुमने किया नहीं और अब आये हो मुझे याद करने। चले जाओ यहॉ से।"

हयीना बेचारे ने अपनी पूॅछ अपने पिछले पैरों के बीच में दबायी और भाग लिया वहॉ से। पीछे से वह बड़ा खरगोश खड़ा खड़ा हॅस रहा था।

हयीना वहॉ से चला तो गया पर वह उन हड्डियों के ढेर को नहीं भूल सका जो शेर की गुफा के दरवाजे पर पड़ा था।

हयीना ने सोचा — "मैं फिर वहॉ जाने की कोशिश करूॅगा।" सो कुछ दिन बाद एक दिन जब बड़ा खरगोश शाम का खाना पकाने के लिये नदी पर पानी लेने गया था तब हयीना ने फिर एक बार शेर के घर आने की सोची।

वह जब शेर के घर आया तो शेर अपनी गुफा के दरवाजे पर ही सो रहा था। न्यान्गौ हयीना धीरे से बोला — "दोस्त, मुझे ऐसा

लग रहा है कि तुम्हारी टाँग का घाव बहुत ही धीरे धीरे भर रहा है क्योंकि तुम्हारा दोस्त सूंगूरू बड़ा खरगोश तुम्हारी देखभाल ठीक से नहीं कर पा रहा है।"

सिम्बा शेर गुर्राया — "क्या मतलब है तुम्हारा? मुझे तो सूंगूरू खरगोश का धन्यवाद देना चाहिये कि मुझे अपनी बीमारी के बुरे दिनों में उस बेचारे की वजह से भूखा नहीं मरना पड़ा। जबकि तुम और तुम्हारे कोई भी साथी तो मुझे देखने तक नहीं आये।"

हयीना उसको विश्वास दिलाता हुआ बोला — "पर जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वह सच है। सारे जंगल में यह बात सभी जानते हैं कि सूंगूरू बड़ा खरगोश तुम्हारा इलाज ठीक से नहीं कर रहा है ताकि तुम्हारा घाव देर से भरे।

क्योंकि जब तुम ठीक हो जाओगे तो वह तुम्हारे घर में जो नौकर की तरह काम कर रहा है वहाँ से निकाल दिया जायेगा। और यह नौकर की जगह तो उसके लिये बड़ी आरामदायक जगह है।

मैं तुमको पहले से बता रहा हूँ कि सूंगूरू बड़ा खरगोश यह सब तुम्हारे अच्छे के लिये नहीं कर रहा है।"

उसी समय सूंगूरू बड़ा खरगोश नदी से घड़े[71] में पानी भर कर ले आया। उसने अपना घड़ा नीचे रखा और हयीना से बोला — "उस

[71] Translated for the word "Gourd". Gourd is dried outer cover of a pumpkin like fruit – see its picture above

दिन की घटना के बाद तो मुझे तुमको यहॉ शाम को देखने की बिल्कुल ही उम्मीद नहीं थी। इस समय तुमको क्या चाहिये?"

सिम्बा शेर बड़े खरगोश से बोला — "मैं तुम्हारे बारे में न्यान्गौ की कहानियॉ सुन रहा हूॅ। वह कह रहा है कि तुम सारे जंगल में बहुत ही होशियार और चालाक डाक्टर हो।

उसने मुझसे यह भी कहा कि जो दवा तुम देते हो वे किसी और के पास नहीं हैं। पर साथ में वह यह भी कह रहा था कि तुम मेरा घाव और पहले ठीक कर सकते थे अगर यह तुम्हारी भलाई में होता तो। क्या यह सच है?"

सूंगूरू खरगोश ने एक पल के लिये सोचा कि यह सब क्या हो रहा है। वह जानता था कि उसको यह मामला बहुत ही सॅभाल कर सुलझाना है क्योंकि उसको पक्का शक था कि यह न्यान्गौ हयीना उसके साथ कोई चाल खेलना चाहता है इसी लिये उसने यह सब सिम्बा शेर से कहा है।

सो उसने हिचकिचाते हुए शेर को जवाब दिया — "हॉ और ना। आप तो जानते हैं कि मैं एक बहुत छोटा सा जानवर हूॅ और कभी कभी वे दवाएॅ जिनकी मुझे जरूरत पड़ती है बहुत बड़ी होती हैं और मैं उनको नहीं ला सकता हूॅ जैसा कि सिम्बा शेर जी आपके साथ हुआ है।"

अब शेर को यह जानने की इच्छा हुई कि उसके साथ क्या हुआ है तो वह बैठा हो गया और सूँगूरू बड़े खरगोश से पूछा — "क्या मतलब? क्या हुआ है मेरे साथ? मुझे साफ साफ बताओ।"

बड़ा खरगोश बोला — "अब यही ले लें। मुझे आपके घाव पर लगाने के लिये हयीना की पीठ की खाल के एक टुकड़े की जरूरत थी ताकि वह जल्दी से भर जाये पर मैं इतना छोटा सा जानवर, मैं भला उसकी खाल कैसे लाता।"

यह सुनते ही इससे पहले कि हयीना वहॉ से भागे शेर न्यान्गौ हयीना पर टूट पड़ा और उसकी पीठ से सिर से ले कर पूँछ तक एक लम्बी सी पट्टी फाड़ कर अपनी टॉग के घाव पर बॉध ली।

जैसे ही शेर ने हयीना की पीठ से वह पट्टी फाड़ी उसके शरीर के जो बाल खिंच गये थे वे सारे के सारे बाल खड़े ही रह गये। तबसे आज तक न्यान्गौ और दूसरे हयीना के बाल लम्बे खुरदरे और खड़े हुए होते हैं।

इस घटना के बाद तो सूंगूरू बड़ा खरगोश डाक्टर की हैसियत से बहुत ही मशहूर हो गया क्योंकि हयीना की खाल की पट्टी बॉधने के बाद तो सिम्बा शेर की टॉग का घाव बहुत ही जल्दी भर गया था।

पर न्यान्गौ हयीना अपना मुँह दूसरे जानवरों के बीच में बहुत दिनों तक नहीं दिखा सका।

29 एक शेर और एक छोटी चुहिया[72]

यह कहानी हमें यह सिखाती है कि किसी छोटे आदमी को छोटा समझ कर उसकी बेइज़्ज़ती नहीं करनी चाहिये। हर एक के अपने अपने गुण होते हैं। उसके उन गुणों को जानने की कोशिश करनी चाहिये और उसके उन गुणों की इज़्ज़त करनी चाहिये।

आओ आज पढ़ते हैं एक ऐसी ही कहानी जिसमें एक ताकतवर जानवर एक बहुत छोटे से जानवर को कुछ नहीं समझता पर वही छोटा जानवर बाद में उस बड़े जानवर की जान बचाता है।

एक जंगल में एक शेर रहता था। जैसा कि तुम सभी जानते हो कि शेर तो जंगल का राजा होता है तो उसको तो किसी से डरने की जरूरत ही नहीं होती बल्कि सारे जानवर उससे डरते हैं।

और शेर तो ताकतवर भी बहुत होता है कोई उसके सामने कुछ बोल भी नहीं सकता। सो वह शेर आजादी से उस जंगल में रहता था। उसी जंगल में और भी जानवर रहते थे। शेर की मॉद के पास एक छोटी सी चुहिया भी रहती थी।

एक दिन वह चुहिया अपने दोस्तों के साथ खेल रही थी कि उसके सारे दोस्त तो खेल खेल कर अपने अपने घर चले गये पर उसका मन खेलने से नहीं भरा। वह वहॉ देर तक खेलती रही।

[72] A Lion and a Little Mice. Taken from “My Childhood Stories” by Sushma Gupta.

उस दिन शेर एक छायादार पेड़ के नीचे आराम से सो रहा था। सो खेलते खेलते वह चुहिया उसी जगह आ निकली जहॉ शेर सो रहा था।

खेलते खेलते वह शेर की पूँछ पर चढ़ गयी और शेर की पूँछ से खेलने लगी। धीरे धीरे वह शेर के मुँह की तरफ बढ़ती रही जब तक वह शेर की मूँछों के पास तक नहीं आ गयी। वहॉ आ कर वह उसकी मूँछों से खेलने लगी।

जब चुहिया शेर की मूँछों से खेलने लगी तो शेर को गुदगुदी हुई तो शेर की ऑख खुली।

उसको अपने मुँह के आस पास कुछ चलता सा महसूस हुआ सो उसको हटाने के लिये उसने अपना पंजा मारा तो एक बहुत ही छोटी सी चुहिया उसके पंजे में आ गयी।

उस छोटी सी चुहिया को अपनी मूँछों से खेलते देख कर शेर को बहुत गुस्सा आया।

उसने उससे पूछा — "अरी ओ छोटी सी चुहिया, क्या तू जानती है कि तू कहॉ है?"

यह सुन कर वह छोटी चुहिया डर गयी और उसके मुँह से निकला "नहीं"।

शेर बोला — "तू इस समय शेर के पंजे में है जो इस जंगल का राजा है। तू ज़रा सी चुहिया और तेरी यह हिम्मत कि तू जंगल के

राजा के शरीर पर चढ़ कर उसकी मूँछों से खेले? अब तेरी सजा यही है कि मैं तुझे खा जाऊँ।"

चुहिया यह सुन कर गिड़गिड़ाते हुए बोली — "हे जंगल के राजा, आप तो जंगल के राजा हैं। कितने भी बड़े जानवर को मार कर खा सकते हैं। फिर मैं तो एक बहुत ही छोटी सी चुहिया हूँ। मैं तो आपके एक कौर के बराबर भी नहीं हूँ।

आपके सामने मेरी क्या बिसात? आप मेरे ऊपर दया कीजिये और मुझे छोड़ दीजिये। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो शायद मैं किसी दिन आपके काम आ जाऊँ। मेहरबानी कर के मुझ पर दया कीजिये और मुझे छोड़ दीजिये।"

यह सुन कर तो शेर और बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — "हा हा हा। तुझ जैसी छोटी सी चुहिया मुझ जैसे जंगल के राजा के किस काम आ सकती है।

पर हम तेरी इस बात से बहुत खुश हैं इसलिये हम तुझे छोड़ देते हैं। जा और जा कर खेल। पर आगे से ख्याल रखना हमारे आराम में खलल न पड़े।" कह कर शेर ने उसको छोड़ दिया।

चुहिया हँसती खेलती कूदती शेर को धन्यवाद देती वहॉ से अपने घर भाग गयी

पर आदमी तो जंगल के राजा से भी बड़ा होता है। वह तो शेर का भी शिकार करता है। सो एक दिन एक शिकारी उस जंगल में

आ निकला और उसने शेर को पकड़ने के लिये वहॉ जाल बिछाया। जाल बिछा कर वह वहॉ से चला गया।

उस दिन शेर भी इत्तफाक से अपने शिकार के लिये जंगल में इधर उधर घूम रहा था कि वह शिकारी के फैलाये हुए जाल में फॅस गया। जब तक वह यह समझे कि क्या हो रहा है तब तक तो वह उस जाल में पूरी तरह से फॅस चुका था।

अब वह वहॉ बैठे बैठे तो कुछ कर नहीं सकता था सो उसने दहाड़ना शुरू किया।

शेर की दहाड़ तो दूर दूर तक जाती है। यह दहाड़ उस छोटी सी चुहिया ने भी सुनी जिसको इस शेर ने मारने से छोड़ दिया था।

चुहिया फौरन ही पहचान गयी कि यह तो जंगल के राजा की आवाज है। उसको शेर की दहाड़ से लगा कि वह किसी मुसीबत में है और उसको सहायता चाहिये।

बस वह तुरन्त वहॉ से भाग ली और उसी तरफ चल दी जिस तरफ से वह दहाड़ आ रही थी।

जल्दी ही वह उस जगह आ गयी जहॉ शेर जाल में फॅसा पड़ा था। उसने आ कर देखा तो शेर को आदमी के बने जाल में फॅसा पाया।

वह बोली — "शेर जी शेर जी, आप बिल्कुल भी चिन्ता मत कीजिये। मेरे दॉत बहुत तेज़ हैं। मैं अभी आपका यह जाल अपने दॉतों से मिनटों में काट देती हूॅ।"

इतना कह कर वह चुहिया अपने तेज दॉतों से शेर का जाल काटने में लग गयी। कुछ ही देर में चुहिया ने वह जाल काट दिया और शेर जाल से बाहर निकल आया और आजाद हो कर जंगल में भाग गया।

तो बच्चों इस तरह एक छोटी सी चुहिया ने जंगल के ताकतवर राजा शेर की जान बचायी। इसके बाद अपनी जान बचाने के बदले में शेर ने चुहिया को अपने आस पास खेलने की इजाज़त दे दी।

चुहिया ने पूछा — "क्या मैं आपकी मूँछों से भी खेल सकती हूँ?"

शेर हॅसा और बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। तुम कभी भी आ सकती हो और मेरी किसी भी चीज़ से खेल सकती हो चुहिया रानी।"

चुहिया उछलती कूदती भाग गयी। अब वह कभी भी शेर के पास आ जाती और कभी उसके बालों से खेलती तो कभी पूँछ से तो कभी मूँछ से। और शेर आराम से सोता रहता। उसे चुहिया से कोई परेशानी नहीं थी बल्कि अब उसको उसके ऊपर पूरा विश्वास था।

छोटी से छोटी चीज़ भी कभी कभी बहुत बड़ा काम कर जाती है इसलिये उसे छोटा समझ कर बेकार नहीं समझना चाहिये। उसका भी आदर करना चाहिये।

दूसरी बात यह कि किसी के किये गये उपकार को भी कभी भूलना नहीं चाहिये। अगर हो सकता है तो उसका बदला जरूर

चुकाना चाहिये। इस कहानी में शेर और चुहिया दोनों ही ने एक दूसरे के उपकार को नहीं भुलाया।

चुहिया ने अपनी जान बख्शने के बदले में शेर की जान बचायी और शेर ने चुहिया को अपनी जान बख्शने के बदले में अपने ऊपर खेलने की इजाज़त दी।

30 शेर और सारस[73]

एक बार बोधिसत्व जी[74] हिमवान के क्षेत्र में सारस के रूप में पैदा हुए। उस समय ब्रह्मदत्त बनारस में राज कर रहे थे। अब कुछ इत्तफाक ऐसा हुआ कि उनके राज में एक शेर मॉस खा रहा था कि एक हड्डी उसके गले में फॅस गयी। अब उसका तो गला ही फूल गया। वह खाना भी नहीं खा सका। उसकी तकलीफ उससे सही नहीं जा रही थी।

पास के एक पेड़ पर सारस बैठा था। उसने उसे दुखी देखा तो उससे पूछा — "दोस्त तुम दुखी क्यों हो।" तो शेर ने उसे बताया कि वह दुखी क्यों था।

तो सारस बोला — "मैं तुम्हारा दुख दूर कर सकता हूॅ। मैं तुम्हारे गले में से हड्डी निकाल सकता हूॅ पर तुम डर के मारे अपना मुॅह बन्द मत कर लेना नहीं तो तुम मुझे खा जाओगे।"

शेर बोला — "दोस्त डरो नहीं। मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं खाऊॅगा बस तुम मेरी जान बचा लो।"

सारस ने उसे उसकी बॉयी करवट लेट जाने के लिये कहा। पर उसने यह सोचते हुए कि "क्या पता यह मेरे साथ क्या करे।" उसने

[73] The Lion and the Crane. Joseph Jacobs has taken this tale from India's "Jatak Tales".

[74] Bodhisattva means Gautam Buddha. Since this tale is related to Buddha.

एक पतली सी डंडी सीधी उसके जबड़ों के बीच में रख दी ताकि वह अपना मुँह बन्द न कर सके।

फिर उसने अपनी लम्बी चोंच उसके मुँह के अन्दर डाल कर उसके गले में फँसी हुई हड्डी के एक सिरे पर अपनी चोंच मारी जिससे वह हड्डी उछल कर बाहर गिर पड़ी। जैसे ही उसने शेर के मुँह से हड्डी निकाली वह उसके मुँह से बाहर आ गयी।

फिर उसने डंडी में भी अपनी चोंच मारी उसे भी बाहर निकाल कर फेंका और जा कर अपने पेड़ पर बैठ गया। शेर ठीक हो गया।

एक दिन उस शेर ने एक भैंस मारी। वह उसे खा रहा था तो उसे खाते देख कर सारस ने सोचा कि मैं अभी जा कर इससे बात करता हूँ सो वह वहीं उसके ऊपर की एक शाख पर बैठ गया और शेर से बोला —

मैंने तुम्हारी सेवा की थी अपने सबसे अच्छे तरीके से
ओ जानवरों के राजा। योर मैजेस्टी। तो बदले में तुम मुझे क्या दोगे

शेर बोला —

मैं तो खून पर जीता हूँ और हमेशा ही शिकार ढूँढता रहता हूँ
तुम्हारे लिये यही काफी है कि तुम अभी तक ज़िन्दा हो
एक बार मेरे दाँतों के बीच आने के बाद भी

तब जवाब में सारस बोला —

तुम बहुत ही नमकहराम हो यह तुम अच्छा नहीं कर रहे
तुम वैसा नहीं कर रहे जैसा कि तुम्हें करना चाहिये
तुम्हारे अन्दर कृतज्ञता तो है ही नहीं तुम्हारा कोई काम करना बेकार है
कोई भला काम कर के इसकी दोस्ती प्राप्त करने लायक नहीं है
अच्छा तो यही है कि विनम्रता से इससे पीछे हट जाओ
न तो इससे कोई द्वेश रखते हुए और न इसे कोसते हुए

यह कह कर सारस वहॉ से उड़ गया।

जब महान गुरू गौतम बुद्ध यह कहानी कहते थे तो वह इसमें जोड़ देते थे — "उस समय शेर देवदत्त गद्दार था और सफेद सारस मैं था।

31 शेर की खाल में गधा[75]

यह तब की बात है जब राजा ब्रह्मदत्त बनारस में राज किया करते थे। उस समय आने वाले बुद्ध जी उनके राज्य में एक किसान के घर में पैदा हुए। जब वह बड़े हो गये तो उन्होंने भी अपनी जीविका के लिये खेती करना शुरू कर दिया।

उन दिनों एक फेरी वाला अपना सामान एक गधे पर रख कर इधर से उधर उसे बेचने जाया करता था। हर जगह पर जिस जगह भी वह पहुॅचता जब वह अपना सामान गधे से उतार कर नीचे रखता तो वह उसे शेर की खाल पहना देता और जौ और चावल के खेतों में छोड़ देता।

जब खेतों के रखवाले उसे देखते तो उनकी हिम्मत उसके पास जाने की बिल्कुल भी नहीं होती क्योंकि उन्हें लगता कि वह तो शेर है। इस तरह से कुछ समय तक चलता रहा।

एक दिन जब फेरी वाला एक जगह जा कर रुका और अपना नाश्ता पका रहा था तो रोज की तरह से उसने अपने गधे को शेर की खाल पहनायी और एक जौ के खेत में छोड़ दिया।

अब उस खेत के रखवाले तो उसके पास जा नहीं सकते थे क्योंकि वह एक शेर था पर घर जाते समय उन्होंने सबको बताया कि एक शेर उनके खेत में हैं। तो गॉव के बहुत सारे लोग अपने

[75] An Ass in the Lion's Skin. Joseph Jacobs has taken this tale from India's "Jatak Tales"

अपने हथियार ले कर ढोल पीटते हुए चीखते चिल्लाते हुए उनके खेत के पास आये।

यह देख सुन कर गधा डर गया कि अब ये लोग उसे मार देंगे सो वह ढेंचू ढेंचू करता हुआ वहॉ से भागा। जब आने वाले बुद्ध जी ने यह देखा तो बोले —

यह तो शेर की गर्ज नहीं है
न ही यह किसी चीते की है न तो किसी तेंदुए की है
शेर की खाल पहने हुए यह तो कोई गधा है जो चिल्ला रहा है

जब गॉव वालों ने देखा कि वह तो केवल एक गधा था तब तो वे निडर हो गये और उसे पीटना शुरू कर दिया और उसे तब तक पीटते रहे जब तक उसकी हड्डी पसली एक नहीं हो गयीं। उन्होंने उसकी शेर की खाल निकाल ली और भाग गये।

गधे को इतनी बुरी हालत में पड़ा देख कर आने वाले बुद्ध जी ने फिर गाया —

शेर की खाल में लिपटा गधा बहुत दिनों तक जौ के खेत में चरता रहा
पर क्योंकि वह बोल पड़ा इसलिये वह बेचारा बर्बाद हो गया

जब वह यह कह रहे थे तभी वह गधा मर गया।

32 शेर के मुँह में[76]

आखीर की शेर की यह कहानी हमने तुम्हारे चीन देश की दंत कथाओं से चुनी है। इसका शेर असली नहीं है केवल पत्थर का है पर देखो तो यह पत्थर का शेर भी क्या क्या गुल खिलाता है।

वॉग चुंग और उसका छोटा भाई वॉग सायो[77] दक्षिण चीन के एक छोटे से गॉव में रहते थे। वे आपस में कभी अच्छे दोस्त तो नहीं रहे पर वे अपने माता पिता के दिये हुए एक ही जमीन के टुकड़े से अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये मजबूर थे।

छोटा भाई वॉग सायो बहुत ही दयावान था जबकि बड़ा भाई वॉग चुंग बहुत ही मतलबी था। अब जैसी जिसकी किस्मत होती है। बड़े भाई वॉग चुंग की शादी भी इत्तफाक से एक ऐसी स्त्री से हो गयी जो बहुत ही मतलबी और बेरहम थी।

वॉग चुंग की पत्नी को अपने पति का छोटा भाई बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। वह उसको घर से निकालने का कोई न कोई मौका ढूँढ रही थी।

---

[76] Into the Mouth of the Lion – a legend from China, Asia. Adapted from the book : "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Hindi translation of this book can be got from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

[77] Wang Chung and his younger brother Wang Hsaio

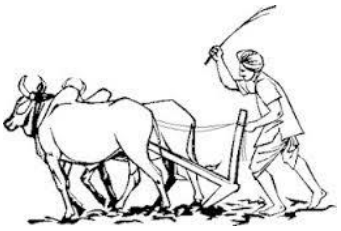

एक दिन वॉग सायो खेत के काम से थका हारा आया तो उससे चाय का एक प्याला टूट गया। बस उसकी भाभी को बहाना मिल गया और उसने उसको इसी बात पर घर से बाहर निकाल दिया।

वॉग चुंग ने जाते समय उसको लकड़ी का एक हल और पतला सा एक भूसे का गद्दा दे दिया और उसको घर से बाहर जाने दिया।

दोनों चीज़ें ले कर वॉग सायो कई दिनों तक ऐसे गॉवों और शहरों से हो कर चलता रहा जिनके उसने नाम तो सुने थे लेकिन उनको कभी देखा नहीं था।

पॉचवी रात वह एक सुनसान अकेली जगह आ गया। उस जगह के बीच में एक टूटा फूटा मन्दिर खड़ा था। आज उसके उन फर्शों पर घास उग आयी थी जो कभी चमकते रहे होंगे। मन्दिर की दीवारें टूटी फूटी थी छत भी खराब थी सो उन छतों में से उसको आसमान दिखायी दे रहा था।

उसको तो कहीं ठहरने की जगह चाहिये थी सो वह इसी मन्दिर की तरफ बढ़ा। इतनी सब टूट फूट के बाद भी उस मन्दिर के ऑगन में एक बहुत ही सुन्दर पत्थर का शेर खड़ा हुआ था। वह आज भी वैसा ही चमक रहा था जैसा कि शायद अपने बनने के पहले दिन चमक रहा होगा।

वॉग सायो को यह एक अच्छा शकुन लगा सो उसने उस जगह को कुछ दिनों के लिये अपना घर बनाने के लिये सोच लिया।

उसने एक पैसा उधार देखने वाले से थोड़ा सा पैसा उधार ले लिया था सो उस पैसे से उसने इतना अनाज खरीद लिया था कि वह वहॉ मन्दिर के आस पास की जमीन पर खेती कर सकता था।

अनाज खरीद कर उसने वहॉ वह अनाज बो दिया और अपनी खेती के बड़े होने का इन्तजार करता रहा। इस बीच में वह जंगली फलों और जानवरों के मॉस पर अपना गुजारा करता रहा।

वह अपने दिन खेत पर और शाम मन्दिर की सीढ़ियों पर बैठ कर गुजारता। वहॉ अकेली जगह में कौन तो उसके पास उससे मिलने आता और वह खुद भी गॉव के लोगों से मिलने जाना नहीं चाह रहा था सो वह वहॉ अकेला ही रहता रहा।

पत्थर का वह शेर जो मन्दिर की रखवाली कर रहा था बस वही उसका एक दोस्त था। अपने अकेलेपन में वह बस उसी से एकतरफा दोस्ती में लग गया।

उसने उस शेर की सुरक्षा के लिये सरकंडे[78] का एक कमरा बनाया। वह रोज सुबह उसको खाना खिलाता था और शाम को उससे बात करता था। वह शेर भी शान से उसके सामने बैठा तो रहता पर ऐसा लगता नहीं था कि वह उसकी कुछ सुन भी रहा था।

[78] Translated for the word “Reed”. See its picture above.

गर्मी की एक शाम बहुत गर्म था सो वॉग सायो पंखा झलता जा रहा था और अपने उस शेर से अपनी फसल के बारे में बात करता जा रहा था।

"ओ मेरे पत्थर के शेर, तुमको पता नहीं है कि तुम कितने खुशकिस्मत हो। तुम यहॉ सारा दिन दुनियॉ की सारी चिन्ताओं से आजाद बैठ सकते हो पर मुझे देखो मैं सारा दिन खेत में लगा रहता हूॅ और फिर भी मुझे यह नहीं मालूम कि मेरी फसल ठीक से उगेगी भी या नहीं।"

और दिनों की तरह से वह शेर सुन रहा था या नहीं सुन रहा था पर वॉग सायो ने इसके आगे कुछ कहा ही नहीं। वह अपने ख्यालों में खोया हुआ शेर के पैरों के पास चुपचाप बैठा रहा।

इतने में जमीन हिलनी शुरू हुई। पहले तो वह धीरे से हिली पर फिर वह ज़ोर के शोर में बदल गयी। वॉग सायो डर गया। उसको लगा कि शायद कोई तूफान आ गया है सो वॉग सायो वहॉ से उठ कर शेर के सरकंडे वाले मकान में घुस गया और अपने ठंडे शरीर को सिकोड़ कर बैठ गया।

उसके सिर के ऊपर से किसी की बड़ी गहरी सी आवाज आयी — "तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारी रक्षा करूॅगा।"

वॉग सायो को तो यकीन ही नहीं हुआ कि वह शेर की आवाज थी। वह बोला — "तुम कैसे बोल सकते हो तुम तो पत्थर के बने हो?"

"मैंने तुमसे कह दिया न कि तुम चिन्ता न करो। और तुम मुझसे और सवाल भी मत पूछो।"

शेर ने वॉग सायो से फिर कहा — "मेरे मुँह में हाथ डालो और वहाँ जो कुछ भी हो निकाल लो।"

वॉग सायो ने शेर के मुँह में हाथ डाला और उसके मुँह में से चाँदी का एक टुकड़ा निकाल लिया। उसने शेर को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

शेर बोला — "अभी मुझे धन्यवाद मत दो। अभी तो मेरे मुँह में बहुत कुछ है। तुम इसमें से जितना चाहो निकाल लो।"

वॉग सायो ने उस शेर के मुँह में फिर से हाथ डाला तो मुट्ठी भर कर सोने चाँदी के टुकड़े निकाल लिये। उसने उनको सावधानी से अपने थैले में रख लिया जो उसके पैरों के पास ही पड़ा हुआ था।

शेर ने अपना मुँह खूब चौड़ा खोल रखा था इससे वॉग सायो उसके मुँह में से और भी बहुत कुछ निकाल सकता था पर उसने अब तक जितना निकाल लिया था वह उससे सन्तुष्ट था।

वॉग सायो अपना यह पैसा अपने बड़े भाई को भी देना चाहता था सो वह अपने घर की तरफ लम्बी यात्रा पर चल दिया। जब वह अपने भाई के घर पहुँचा तो वह इतना खुश था कि वह उसके घर में बिना दरवाजा खटखटाये ही अन्दर चला गया और सोने चाँदी का वह थैला उसके पैरों अपने भाई के पैरों के पास पलट दिया।

जैसे ही उसने वह थैला खाली किया और उसको शेर की कहानी सुनायी तो उसके बड़े भाई ने उसको उसकी गर्दन से पकड़ लिया और उससे उस मन्दिर का पता पूछा।

वॉग सायो ने जैसे ही उसका पता बताया वॉग चुंग दरवाजे से बाहर भाग गया और अँधेरी गलियों में गुम हो गया। वह भी जैसे उसका भाई अनजाने शहरों और गॉवों से होता हुआ वहॉ पॉचवें दिन वहॉ पहुँचा था वह भी पॉचवें दिन उस मन्दिर में पहुँच गया।

खजाने का लालची वह मन्दिर के ऑगन की तरफ दौड़ा और जा कर उस पत्थर के शेर से चिल्ला कर बोला — "अपना मुँह खोलो। अपना मुँह खोलो।" पर शेर न तो कुछ बोला और न ही उसने अपना मुँह खोला।

इस पर वॉग चुंग को गुस्सा आ गया। उसने मन्दिर की दीवार के पास पड़ा एक पत्थर उठा लिया और उसे घुमा कर शेर के मुँह पर मारा। जैसे ही वह पत्थर शेर के चेहरे पर लगा तो वह दर्द से दहाड़ा और उसने अपना मुँह खोल दिया।

वॉग चुंग ने भी तुरन्त ही उसके मुँह में नीचे तक अपना हाथ डाल दिया। इससे पहले कि शेर अपना मुँह बन्द करता उसने उसके मुँह में से काफी पैसा निकाल लिया।

जैसे ही वह अपना निकाला हुआ पैसा अपने थैले में रख कर उस थैले का मुँह बॉध रहा था कि शेर को बोलने का मौका मिल गया।

वह बोला — "तुमने काफी सामान ले लिया है। मैं हमेशा के लिये अपना मुँह खुला नहीं रख सकता और तुम्हारे पास तुम्हारी ज़िन्दगी के लिये अब काफी पैसा है।"

इतना कह कर शेर अपना मुँह बन्द करने लगा पर इससे पहले कि शेर अपना मुँह बन्द करता वॉग चुंग ने उसके मुँह में अपना हाथ एक बार और डाल दिया।

पर इस बार शेर ने अपना मुँह बन्द कर लिया और उसकी बॉह उसके मुँह में फॅस कर रह गयी। अब वॉग चुंग कितनी भी ज़ोर से अपना हाथ उसके मुँह से खींच रहा था पर शेर का मुँह ही नहीं खुल रहा था।

वॉग चुंग सहायता के लिये बहुत चीखा चिल्लाया पर उसकी चीख तेज़ हवा की आवाज में दब गयी जो अभी अभी चल निकली थी।

जल्दी ही आसमान में बारिश के बादल छा गये और एक एक दो दो मिनट बाद बिजली चमकने लगी। आखिर तूफान आ गया। बहुत ज़ोर की बारिश होने लगी और पानी मन्दिर की नालियों से हो कर जमीन पर नदियों की तरह बहने लगा।

वॉग चुंग ने अपने दूसरे हाथ से पैसे का थैला सॅभाला और फिर से अपना हाथ शेर के मुँह से निकालने की कोशिश की पर उसके डर का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि बारिश से भीग कर उसका वह थैला साइज़ में छोटा होता जा रहा था। उसके थैले का सोना

चॉदी उस बारिश के पानी से भीग कर पिघल कर धरती पर बहा जारहा था।

आखिर वह तूफान थमा और रात हो गयी पर शेर उसका हाथ अपने मुॅह में लिये हुए नहीं थका था।

उधर जब वॉग चुंग कई दिन तक घर नहीं आया तो उसकी पत्नी उसको ढूॅढने निकली। एक हफ्ता ढूॅढने के बाद उसने वॉग चुंग को शेर के सहारे बेहोश सा बैठा हुआ पाया। उसका हाथ अभी भी शेर के मुॅह में फॅसा हुआ था।

उसने आ कर अपने पति से पूछा कि उसको वह पैसा कैसे तो मिला और कैसे खो गया। जब वॉग चुंग अपनी पत्नी को यह सब बता रहा था तो पत्थर का शेर चुपचाप सब सुन रहा था।

वॉग चुंग की पत्नी ने पूरी कहानी सुनने से पहले ही नीचे से एक पत्थर उठाया और शेर के सिर पर दे मारा। अब उसका पत्थर तो शेर के सिर से टकरा कर टूट गया पर शेर के सिर पर उस पत्थर का कोई असर नहीं पड़ा।

यह देख कर वॉग चुंग चिल्लाया — "ऐसा नहीं करो। तुम अपने ऐसे बर्ताव से हालात और खराब कर दोगी और वह शेर मुझे यहॉ कैद कर के रखने के लिये और ज़्यादा पक्का इरादा कर लेगा।

अगर वह चाहता तो मेरा हाथ अपने दॉतों से कुचल कर उसका बिल्कुल चूरा ही कर देता परन्तु उसने ऐसा किया नहीं इसलिये हमको बस अब समय का इन्तजार करना चाहिये। तुम जाओ और

वॉग सायो को ढूँढ कर लाओ। शायद वही शेर को अपना मुँह खोलने के लिये राजी कर सके।"

वाग चुंग की पत्नी मुँह फुला कर वॉग सायो को ढूँढने चल दी। वह वॉग सायो को ढूँढने के लिये अपने घर वापस आयी। सारे शहर में ढूँढने पर भी वह उसको कहीं नहीं मिला। वह तो अपने खजाने के साथ पहले ही वहॉ से चला गया था।

अब वॉग चुंग की पत्नी ऐसे किसी आदमी को नहीं जानती थी जो उसके पति को उस शेर से आजाद करा सकता। सो अगले तीन महीनों के लिये उसने उस मन्दिर के पास के गॉव में एक कमरा किराये पर ले लिया और रोज अपने पति को खाना खिलाने के लिये वह वहीं से जाती रही।

तीन महीने बाद उनका बचा हुआ पैसा भी खत्म हो गया और वह अपने पति को केवल चावल के पुराने बन[79] ही खिला सकी।

वॉग चुंग अब इतना पतला और कमजोर हो चुका था कि वह अब अपने आप खाना भी नहीं खा सकता था। उसकी पत्नी उसको बच्चे की तरह खाना खिलाती फिर बचा हुआ खाना खुद खाती।

यह सब देख कर उसको रोना आ गया।

तभी वह किसी के ज़ोर के हॅसने की आवाज सुन कर कुछ होश में आयी। यह हॅसी की आवाज शेर के मुँह से आयी थी। जैसे ही

[79] Bun – a kind of bread in the form of round balls

शेर हॅसा तो उसका मुॅह खुला, और उसका मुॅह खुला तो वॉग चुंग का हाथ उसके मुॅह से छूट गया।

शेर गरज कर बोला — "तुमने अपना सबक सीख लिया? मैं तुमसे वायदा करता हूॅ कि अगर तुम मेरा ख्याल रखोगे तो मैं भी तुम्हारा ख्याल रखूॅगा।"

उस दिन के बाद से इन दोनों पति पत्नी ने वॉग सायो का छोड़ा हुआ खेत ले लिया। मन्दिर का ऑगन साफ किया। वहॉ की जमीन की सफाई की। मन्दिर में भेंटें चढ़ायीं और रोज शेर के पैरों पर फूल चढ़ाये।

उसके बाद शेर फिर कभी नहीं बोला पर उनकी देखभाल के बदले में उसने उनके खेत को हमेशा हरा भरा रखा।

List of Stories in “Stories of Lion”

1. When Lion Could Fly
2. Nine Hyena and a Lion
3. A Lion's Division
4. Difference in Justice
5. Baby Lion
6. The Lion and Jackal
7. The Lion and Jackal-2
8. The Hunt of Lion and Jackal
9. Lion's Share
10. Jackal's Bride
11. Story of the Lion and the Little Jackal
12. The Story of a Dam
13. The Lion Who took a Woman's Shape
14. The Lion, the Jackal and the Man
15. An Innocent Dog and the Cunning Fox
16. Wise Wolf
17. Dog and Lion
18. The Wise Dog
19. Crocodile’s Treason
20. The Lion and the Beetle
21. Lion Who Thought Himself Wiser Than His Mother
22. The Hare and the Lion
23. The Lion, and Hyena and the Rabbit
24. Lion's Minister of State
25. Story of a Rabbit and a Lion
26. Jackal and the Lion
27. King Lion's Gifts
28. The Lion, the Hare and the Hyena
29. A Lion and a Little Mice
30. The Lion and the Crane
31. An Ass in the Lion’s Skin
32. In the Mouth of Lion

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022